FBD
Maktab_e_Ashraf
बिखरे मोती
दूसरा भाग
लेखक
हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी
ख़ल्फ़ुर्रशीद
हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी
रहमतुल्लाहि अलैहि

बिखरे मोती

(हिस्सा 2)

लेखक

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

बिखरे मोती-2

लेखक

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

प्रस्तुत कर्ता

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Bikhre Moti (Vol. 2)

Author:

Maulana Muhammad Yunus Sahab Palanpuri

Edition: **2014**

Pages: **244**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

फ़ेहरिस्त

❑ ❑ ❑

ख़ुदा के नाम से आग़ाज़ कर रहा हूँ
जो मेहरबाँ है बहुत और रहम वाला है

यह माना कि पुर-ख़ता हूँ मगर हूँ तो तेरा बन्दा
अगर तू मुझे निबाह ले तो तेरी बन्दा परवरी है

इन्क़िलाबाते ज़माना वाइज़े रब हैं सुन लो
हर तग़य्युर से सदा आती है फ़ाफ़हम फ़ाफ़हम

जब दुनिया जाती है तो हसरत छोड़ जाती है
और जब आती है तो हज़ारों ग़म साथ लाती है

बिखरे मोती

(दूसरा हिस्सा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कई दिन का फ़ाक़ा

मुस्नद हाफ़िज़ अबू यअला में हदीस है कि हुज़ूर सल्ल० पर कई दिन बग़ैर कुछ खाए गुज़र गए, भूख से आप सल्ल० को तक्लीफ़ होने लगी, आप अपनी सब बीवियों के घर हो आए, लेकिन कहीं भी कुछ न पाया। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए और पूछा कि बच्ची तुम्हारे पास कुछ है कि मैं कुछ खा लूँ? मुझे भूख लग रही है। वहाँ से भी यही जवाब मिला कि कुछ भी नहीं है। अल्लाह के नबी वहाँ से निकले ही थे कि हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की लौंडी ने दो रोटियाँ और गोश्त का टुकड़ा हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के पास भेजा, आप ने उसे लेकर लगन में रख लिया और फ़रमाने लगीं हालांकि मुझे, मेरे शौहर और बच्चों को भी भूख है, लेकिन हम सब फ़ाक़ा से गुज़ार देंगे और ख़ुदा तआला की क़सम आज तो यह रसूलुल्लाह सल्ल० को ही दूंगी, फिर हज़रत हसन रज़ि० या हुसैन रज़ि० को आप सल्ल० की ख़िदमत में भेजा कि आप सल्ल० को बुला लाएं। हुज़ूर सल्ल० रास्ते ही से लौट आए। कहने लगीं, ख़ुदा तआला ने कुछ भिजवा दिया है, जिसे मैंने आप सल्ल० के लिए छिपा कर रख दिया है। आप सल्ल० ने फ़रमायाः प्यारी बच्ची ले आओ। अब जो कुंडा खोला तो देखती हैं कि बर्तन रोटी और गोश्त से भरा हुआ है, देखकर हैरान हो गईं।

लेकिन फ़ौरन समझ गई कि ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसमें बरकत नाज़िल हो गई है, अल्लाह का शुक्र किया, नबी-ए-ख़ुदा पर दुरूद पढ़ा और अव्वल आप सल्ल० के पास लाकर पेश कर दिया। आप सल्ल० ने भी उसे देखकर ख़ुदा की तारीफ़ की और पूछा कि बेटी यह कहाँ से आया? जवाब दिया कि अब्बा जान! ख़ुदाए तआला के पास से, वह जिसे चाहे बे-हिसाब रोज़ी दे। आप सल्ल० ने फ़रमाया: ख़ुदाए तआला का शुक्र है कि ऐ प्यारी बच्ची तुझे भी अल्लाह तआला ने बनी इसराईल की तमाम औरतों का सरदार जैसा करदिया। उन्हें जब कभी अल्लाह तआला कोई चीज़ अता फ़रमाता और उनसे पूछा जाता तो यही जवाब दिया करती थीं कि ख़ुदा के पास से है। अल्लाह तआला जिसे चाहे बे-हिसाब रिज़्क़ देता है। फिर आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को बुलाया और आप सल्ल०, हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फ़ातिमा रज़ि०, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि० और आप सल्ल० की सभी अज़वाजे मुतह्हरात रज़ियल्लाहु अन्हुन्ना ने ख़ूब शिकम सेर होकर खाया फिर भी उतना ही बाक़ी रहा जितना पहले था, जो आस-पास के पड़ोसियों के हाँ भेजा गया। यह थी ख़ैरे कसीर और बरकत ख़ुदा-ए-तआला की तरफ़ से।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, उर्दू, हिस्सा 1, पेज 406

इस वाक़िये से एक तरफ़ तो हुज़ूर सल्ल० की भूख की शिद्दत और फ़ाक़ा बर्दाश्त करने का सबक़ मिला, तो दूसरी तरफ़ नेक और दीनदार औरतों के लिए यह सबक़ भी है कि जब कहीं से अल्लाह की नेमत मिले और कोई पूछे कि किसने दिया, तो जवाब में कहें :

هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

(यह अल्लाह तआला की तरफ़ से आया, बेशक अल्लाह तआला जिसे चाहता है बे-हिसाब देता है।)

इमाम बुख़ारी रह० का गुस्सा पी जाना

रहमदिली और खुदातरसी ज़िन्दगी का हिस्सा बन चुकी थी। अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल्-सियादफ़ी रह० ज़िक्र करते थे कि एक मर्तबा मैं इमाम बुख़ारी रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था। अन्दर से आप की कनीज़ आई और तेज़ी से निकल गई, पाँव की ठोकर से रास्ते में रखी हुई रोशनाई की शीशी उलट गई, इमाम साहब ने ज़रा ग़ुस्से से फ़रमाया कैसे चलती है? कनीज़ बोली जब रास्ता न हो तो कैसे चलें?

इमाम साहब यह जवाब सुनकर इन्तिहाई तहम्मुल और बुर्दबारी से फ़रमाते हैं: जा मैंने तुझे आज़ाद किया। सियादफ़ी कहते हैं कि मैंने कहा: उसने तो आपको ग़ुस्सा दिलाने वाली बात कही थी, आपने आज़ाद कर दिया? फ़रमाया: उसने जो कुछ कहा और किया, मैंने अपनी तबीयत को उसी पर आमादा कर लिया।

—तर्जुमा सहीह बुख़ारी, अज़: हज़रत अल्लामा वहीदुज़्ज़माँ साहब, नम्बर 13

हदीस शरीफ़ में आता है : ऐ इब्ने आदम! जब तुझे ग़ुस्सा आए तो उसे पी जा। जब मुझे तुझपर ग़ुस्सा आएगा तो मैं पी जाऊंगा। कुछ रिवायतों में है— ऐ इब्ने आदम! अगर ग़ुस्से के वक़्त तू मुझे याद रखेगा, यानी मेरा हुक्म मानकर ग़ुस्सा पी जाएगा तो मैं भी अपने ग़ुस्से के वक़्त तुझे याद रखूंगा यानी हलाकत के वक़्त तुझे हलाकत से बचा लूंगा।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, उर्दू हिस्सा अव्वल, पेज 457

उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० की फ़ज़ीलत

हज़रत ख़सीमा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: तौरात में बनी इसराईल को ख़िताब करते हुए अल्लाह तआला ने يَـٰٓأَيُّهَا الْمَسَاكِيْنُ फ़रमाया है लेकिन उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० को يَـٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا के मुअज़्ज़िज़ ख़िताब से सरफ़राज़ फ़रमाया है।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, उर्दू हिस्सा अव्वल, पेज 178, जिल्द 1

हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की दावत पर हिन्दुस्तानी राजाओं का इस्लाम क़बूल करना

उ़मर बिन अब्दुल अजीज़ रह० ने हिन्दुस्तान के राजाओं को सात ख़त लिखे और उनको इस्लाम और इताअत की दावत दी और वादा किया कि अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनको अपनी सल्तनतों पर बाक़ी रखा जाएगा और उनके हुक़ूक़ और फ़राइज़ वही होंगे जो मुसलमानों के हैं। उनके अख़्लाक़ व किरदार की ख़बरें वहाँ पहले ही पहुँच चुकी थीं इसलिए उन्होंने इस्लाम क़बूल किया और अपने नाम अरबों ही के नाम पर रखे।

—तारीख़े दावत व अज़ीमत, हिस्सा 1, पेज 49

हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के दौर में कोई ज़कात लेने वाला नहीं था

यहया बिन सईद रह० कहते हैं कि मुझे उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने अफ़्रीक़ा में ज़कात की तहसील वुसूल पर मुक़र्रर किया, मैंने ज़कात वुसूल की, जब मैंने उसके मुस्तहिक़ तलाश

किए जिनको वह रक़म दी जाए तो मुझे एक भी मोहताज नहीं मिला और एक शख़्स भी ऐसा नहीं मिला जिसको ज़कात दी जा सके। उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने सबको ग़नी बना दिया, आख़िर मैंने कुछ ग़ुलाम ख़रीदकर आज़ाद किए और उनके हुक़ूक़ का मालिक मुसलमानों को बना दिया। एक दूसरे क़ुरैशी कहते हैं कि उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की मुख़्तसर मुद्दते ख़िलाफ़त में यह हाल हो गया था कि लोग बड़ी-बड़ी रक़में ज़कात की लेकर आते थे कि जिसको मुनासिब समझा जाए दे दिया जाए लेकिन मजबूरन वापस करनी पड़ती थीं कि कोई लेने वाला नहीं मिलता। उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़माने में सब मुसलमान ग़नी हो गए, और ज़कात का कोई मुस्तहिक़ नहीं रहा। इन ज़ाहिरी बरकात के अलावा (जो सही इस्लामी हुकूमत का सानवी नतीजा है) बड़ा इन्क़िलाब यह हुआ कि लोगों के रुजहानात बदलने लगे, और क़ौम के मिज़ाज व मज़ाक़ में तब्दीली होने लगी। "इनके मआसिर कहते हैं कि हम जब वलीद के ज़माने में जमा होते थे, तो इमारतों और तर्ज़े-तामीर की बातचीत करते थे, इसलिए कि वलीद का यही अस्ल ज़ौक़ था, और उसका तमाम अहले मुम्लिकत पर असर पड़ रहा था, सुलैमान खानों और औरतों का बड़ा शौक़ीन था, उसके ज़माने में मजलिसों का मौज़ू-ए-सुख़न यही था, लेकिन उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ के ज़माने में नवाफ़िल व ताआत, ज़िक्र व तज़किरा गुफ़्तगू और मजलिसों का मौज़ू बन गया, जहाँ चार आदमी जमा होते, तो एक दूसरे से पूछते कि रात को तुम्हारा क्या पढ़ने का मामूल है, तुमने कितना क़ुरआन याद किया है, तुम क़ुरआन कब ख़त्म करोगे और कब ख़त्म किया था, महीने में कितने रोज़े रखते हो।"

–तारीख़े दावत व अज़ीमत, हिस्सा 1, पेज 50

दीनदार बनने का आसान नुस्ख़ा

हज़रत शाह फूलपुरी क़ुद्दस सिर्रहुल अज़ीज़ ने इर्शाद फ़रमाया था कि कितना ही शदीद क़ब्ज़ तारी हो, दिल में इन्तिहाई ज़ुलमत और जमूद पैदा हो गया हो और सालहा साल से दिल की यह कैफ़ियत न जाती हो तो हर रोज़ वुज़ू करके पहले दो रकअत नफ़िल तौबा की नीयत से पढ़े फिर सजदे में जाकर बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अज्ज़ व निदामत के साथ ख़ूब गिरया व ज़ारी करे और ख़ूब इस्तिग़फ़ार करे फिर इस वज़ीफ़ा को 360 मर्तबा पढ़ा जाए :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَo

वज़ीफ़ा मज़कूरा में يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ दो इस्मा-ए-इलाहिया ऐसे हैं जिनके इस्मे आज़म होने की रिवायत है और आगे वह ख़ास आयत है जिसकी बरकत से हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने तीन तारीकियों से नजात पाई, पहली तारीकी अंधेरी रात की, दूसरी पानी के अन्दर की, तीसरी मछली के पेट की। उन तीन तारीकियों में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की क्या कैफ़ियत थी उसको खुदा हक़ तआला शानहू ने इर्शाद फ़रमाया है : وَهُوَ مَكْظُوْمٌ और वह घुट रहे थे। कज़्म अरबी लुग़त में उस तक्लीफ़ व बेचैनी को कहते हैं जिसमें ख़ामोशी हो। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को उसी आयत करीमा की बरकत से हक़ तआला शानहू ने ग़म से नजात अता फ़रमाई और आगे यह भी इर्शाद फ़रमाया कि وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ और उसी तरह हम ईमान वालों को नजात अता फ़रमाते रहते हैं। तो मालूम हुआ कि क़ियामत तक के लिए ग़मों से नजात पाने के लिए यह नुस्ख़ा नाज़िल फ़रमा दिया गया। जो कलिमा-गो भी किसी इज़्तिराब व बला में कसरत से इस आयत करीमा का विर्द रखेगा इन्शा

अल्लाह नजात पाएगा। —शरह मस्नवी मौलाना रूम रह० उर्दू, हज़रत मौलाना मुहम्मद अख़्तर साहब, हिस्सा 1, पेज 136

मिसाली माँ

इमाम ग़ज़ाली रह० को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दीन की इतनी बड़ी शख़्सियत बनाया। उनकी ज़िन्दगी को आप देखिए उनके पीछे उनकी माँ का किरदार नज़र आएगा।

मुहम्मद ग़ज़ाली रह० और अहमद ग़ज़ाली रह० दो भाई थे। ये अपने लड़कपन के ज़माने में यतीम हो गए थे, इन दोनों की तर्बीयत उनकी वालिदा ने की। उनके बारे में एक अजीब बात लिखी है कि माँ उनकी इतनी अच्छी तर्बीयत करने वाली थीं कि वह उनको नेकी पर लाईं यहाँ तक कि आलिम बन गए। मगर दोनों भाइयों की तबीयतों में फ़र्क़ था।

इमाम ग़ज़ाली रह० अपने वक़्त के बड़े वाइज़ और ख़तीब थे और मस्जिद में नमाज़ पढ़ाते थे, उनके भाई आलिम भी थे और नेक भी थे लेकिन वह मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के बजाय अपनी अलग नमाज़ पढ़ लिया करते थे तो एक मर्तबा इमाम ग़ज़ाली रह० ने अपनी वालिदा से कहा, अम्मी! लोग मुझ पर एतिराज़ करते हैं कि तू इतना बड़ा ख़तीब और वाइज़ भी है और मास्जिद का इमाम है मगर तेरा भाई तेरे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ता... अम्मी! आप भाई से कहें कि वह मेरे पीछे नमाज़ पढ़ा करे। माँ ने बुलाकर नसीहत की चुनांचे अगली नमाज़ का वक़्त आया, इमाम ग़ज़ाली रह० नमाज़ पढ़ाने लगे और उनके भाई ने पीछे नयत बांध ली लेकिन अजीब बात है कि जब एक रक्अत पढ़ने के बाद दूसरी रक्अत शुरू हुई तो उनके भाई ने नमाज़ तोड़ दी और जमाअत में से बाहर निकल आए। अब जब इमाम ग़ज़ाली रह०

ने नमाज़ मुकम्मल की, उनको बड़ी सुबकी महसूस हुई और वह बहुत ज़्यादा परेशान हुए इसलिए बुझे दिल के साथ घर वापस लौटे, माँ ने पूछाः बेटा बड़े परेशान नज़र आते हो, कहने लगेः अम्मी भाई न जाता तो ज़्यादा बेहतर रहता। यह गया और एक रक्अत पढ़ने के बाद दूसरी रक्अत में वापस आ गया और उसने आकर अलग नमाज़ पढ़ी तो माँ ने उसको बुला लिया और पूछाः बेटा ऐसा क्यों किया? छोटा भाई कहने लगाः अम्मी मैं इनके पीछे नमाज़ पढ़ने लगा। पहली रक्अत तो इन्होंने ठीक पढ़ाई मगर दूसरी रक्अत में अल्लाह की तरफ़ ध्यान के बजाय इनका ध्यान किसी और जगह था इसलिए मैंने इनके पीछे नमाज़ छोड़ दी और आकर अलग पढ़ ली।

माँ ने पूछा इमाम ग़ज़ाली रह० से कि क्या बात है? कहने लगे कि अम्मी बिल्कुल ठीक बात है। मैं नमाज़ से पहले फ़िक्ह की एक किताब पढ़ रहा था और निफ़ास के कुछ मसाइल थे जिनपर ग़ौर व ख़ौज़ कर रहा था। जब नमाज़ शुरू हुई, पहली रक्अत में मेरी तवज्जो इल्लल्लाह में गुज़री लेकिन दूसरी रक्अत में वही निफ़ास के मसाइल मेरे ज़ेहन में आने लग गये। उनमें थोड़ी देर के लिए ज़हन दूसरी तरफ़ मुतवज्जह हो गया। इसी लिए मुझसे यह ग़लती हुई तो माँ ने उस वक़्त एक ठंडी साँस ली और कहा अफ़सोस कि तुम दोनों में से कोई भी मेरे काम का न बना। इस जवाब को जब सुना दोनों भाई परेशान हुए। इमाम ग़ज़ाली रह० ने माफ़ी माँग ली, अम्मी मुझसे ग़लती हुई मुझे तो ऐसा नहीं करना चाहिए था। मगर दूसरा भाई पूछने लगाः अम्मी! मुझे तो कश्फ़ हुआ था उस कश्फ़ की वजह से मैंने नमाज़ तोड़ दी तो मैं आपके काम का क्यों न बना? तो माँ ने जवाब दिया कि "तुममें से तो एक निफ़ास के मसाइल खड़ा सोचा रहा था और दूसरा पीछे खड़ा उसके दिल को देख रहा था। तुम दोनों में से अल्लाह

की तरफ़ तो एक भी मुतवज्जह न था लिहाज़ा तुम दोनों मेरे काम के न बने।"

—हवाला: दवाए दिल, पेज 211

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुहदा की अक़्साम (शुहदा की क़िस्में)

1. ताऊन की बीमारी में मरने वाला।
2. पेट की बीमारी में यानी दस्त और इस्तिस्क़ा में मरने वाला।
3. पानी में बे-इख़्तियार डूबकर मर जाने वाला।
4. दीवार या छत के नीचे दबकर मर जाने वाला।
5. ख़ुदा की राह में शहीद होने वाला।
6. ज़ातुल जनब यानी नमूनिया की बीमारी में मरने वाला।
7. जलकर मरने वाला।
8. हालते हमल में मर जाने वाली औरत।
9. कुँवारी मर जाने वाली औरत।
10. वह औरत जो हामिला होने के बाद से बच्चे की पैदाइश तक या बच्चे का दूध छुटाने तक मर जाए।
11. सिल यानी दिक़ के मर्ज़ में मरने वाला।
12. सफ़र की हालत में मरने वाला।
13. जिहाद के सफ़र में सवारी से गिरकर मर जाने वाला।
14. मराबित यानी इस्लामी मुम्लिकत की सरहदों की हिफ़ाज़त के दौरान मर जाने वाला।
15. गढ़े में गिरकर मर जाने वाला।
16. दरिन्दों यानी शेर वग़ैरह का लुक़्मा बन जाने वाला।
17. अपने माल अपने अहल-व-अयाल, अपने दीन, अपने ख़ून

और हक़ की ख़ातिर क़त्ल किया जाने वाला।

16. जिहाद के दौरान अपनी मौत मर जाने वाला।

19. और वह शख़्स जिसे शहादत की पुर-ख़ुलूस तमन्ना और लगन हो मगर शहादत का मौक़ा उसे नसीब न हो और उसका वक़्त पूरा हो जाए और शहादत की तमन्ना दिल में लिए दुनिया से रुख़्सत हो जाए।

20. हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि जिस शख़्स को हाकिमे वक़्त ज़ुल्म व तशद्दुद के तौर पर क़ैदख़ाने में डाल दे और वह वहीं मर जाए तो वह शहीद है।

21. जो शख़्स तौहीद की गवाही देते हुए अपनी जान जाने आफ़रीन के सुपूर्द कर दे तो वह शहीद है।

22. तप यानी बुख़ारी में मरने वाला शहीद है।

23. जो शख़्स ज़ालिम हाकिम के सामने खड़े होकर उसे अच्छा और नेक काम करने का हुक्म दे और बुरे काम से रोके और वह हाकिम उस शख़्स को मार डाले, वह शहीद है।

24. हज़रत अबू मूसा से मरवी है कि जिस शख़्स को घोड़ा या ऊँट कुचल और रौंद डाले और वह मर जाए (हादसे की मौत, कार का हादिसा, हवाई जहाज़ का हादिसा) वग़ैरह वग़ैरह वह शहीद है।

25. ज़हरीला जानवर के काटने से मर जाए वह शहीद है।

26. हज़रत इब्ने अब्बास से मरवी है कि जिस शख़्स को किसी से इश्क़ हो गया और न सिर्फ़ यह कि वह अपने इश्क़ में पाकबाज़ मुत्तक़ी रहा बल्कि उसने अपने इश्क़ को छिपाया भी और उसी हाल में उसका इन्तिक़ाल हो गया तो वह शहीद है।

27. जो शख़्स कश्ती में बैठा सफ़र के दौरान क़ै में मुब्तिला हो तो

उसे शहीद का अज्र मिलता है।

28. हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० से मरफ़ूअन रिवायत है कि अल्लाह तआला ने औरत के लिए ग़ैरत और ख़ुद्दारी लाज़िम रखी है और मर्दों के लिए जिहाद ज़रूरी क़रार दिया है और औरतों में जिस औरत ने अपनी सोकन की मौजूदगी में सब्र व ज़बत से काम लिया उसे शहीद का सवाब मिलेगा।

29. जो शख़्स रोज़ाना यह दुआ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِي الْمَوْتِ وَفِيْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ 25 मर्तबा पढ़ेगा और अपनी फ़ितरी मौत मरेगा तो भी अल्लाह तआला उसको शहीद का सवाब इनायत फ़रमाएंगे।

—अन् आइशा

30. जो शख़्स इशराक़ चाश्त की नमाज़ का एहतिमाम करे और महीने में तीन रोज़े रखे और सफ़र की हालत में वित्र की नमाज़ न छोड़े उसके लिए शहीद का अज्र लिखा जाता है।

—अन् इब्ने उ़मर रज़ि०

31. इसी तरह उम्मत में अवामी तौर पर एतिक़ादी व अमली गुमराही के वक़्त सुन्नत पर मज़बूती से क़ाइम रहने वाला और तलबे इलम में मरने वाला शहीद है। "तलबे इ़मल में मरने वाले" से वह शख़्स मुराद है जो इल्म हासिल करने और दर्स व तदरीस में मशग़ुल हो या तस्नीफ़ व तालीफ़ में मसरूफ़ हो और या सिर्फ़ किसी इल्मी मज्लिस में हाज़िर हो।

32. जिस शख़्स ने अपनी ज़िन्दगी इस तरह गुज़ारी हो कि लोगों की मेहमानदारी व ख़ातिर-तवाज़ो उसका शेवा रहा हो तो वह शहीद है।

33. वह शख़्स जो मैदाने कारज़ार में ज़ख़्मी होकर फ़ौरन मर जाए बल्कि कम से कम इतनी देर तक ज़िन्दा रहे कि दुनिया की

किसी चीज़ से फ़ायदा उठाए तो वह भी शहीद है।

34. ऐसी ही वह जन्बी जिसे काफ़िर मैदाने कारज़ार में मार डालें।
35. शरीक़ यानी वह शख़्स जो गले में पानी फंस जाने और दम घुट जाने की वजह से मर जाए वह शहीद है।
36. जो शख़्स मुसलमानों तक ग़ल्ला पहुँचाए और जो शख़्स अपने अहल व अयाल और अपने ग़ुलाम व लौंडी के लिए कमाए वह शहीद है।
37. हदीस में आया है कि जो मुसलमान अपने मर्ज़ में हज़रत यूनुस अलैहि० की यह दुआ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِیْنَ चालीस मर्तबा पढ़े और उसी मर्ज़ में इन्तिक़ाल हो जाए तो उसे शहीद का सवाब दिया जाता है और अगर उस मर्ज़ से उसे छुटकारा मिल जाए तो वह उस हाल मे सेहतमन्द होता है कि उसकी मग़्फ़िरत हो चुकी होती है।
38. यह भी हदीस में आया है कि सच्चा और अमानतदार ताजिर क़ियामत के दिन शुहदा के साथ होगा।
39. और जो शख़्स जुमे की रात में मरता है वह शहीद है।
40. और हदीस में यह भी मन्क़ूल है कि बग़ैर मज़्दूरी सिर्फ़ अल्लाह तआला की रिज़ा की ख़ातिर अज़ान देने वाला मोअज़्ज़िन उस शहीद की तरह है जो अपने ख़ून में लत-पत तड़पता हो और वह मोअज़्ज़िन जब मरता है तो उसकी क़ब्र में कीड़े नहीं पड़ते।
41. मन्क़ूल है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दुरूद भेजता है अल्लाह तआला उस पर दस बार अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाता है, जो शख़्स मुझपर दस मर्तबा दुरूद भेजता है

अल्लाह तआला उस पर सौ मर्तबा अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाता है और जो शख़्स मुझपर सौ मर्तबा दुरूद भेजता है तो अल्लाह तआला उसकी दोनों आँखों के दर्मियान बराअत यानी निफ़ाक़ और आग से नजात लिख देता है और अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।

42. मन्क़ूल है कि जो शख़्स सुब्ह के वक़्त तीन मर्तबा اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ और सूरः हश्र के आख़िरी तीन आयतें पढ़ता है तो अल्लाह तआला उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर करता है और उसके लिए शाम तक बख़्शिश की दुआ करते हैं और वह शख़्स अगर उस दिन मर जाता है तो उसकी मौत शहीद की मौत होती है और जो शख़्स यह शाम को पढ़ता है वह भी उसी अज्र का मुस्तहिक़ होता है। मन्क़ूल है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक शख़्स को वसीयत की कि जब तुम रात में सोने के लिए अपने बिस्तर पर जाओ तो सूरः हश्र की आख़िरी आयतें पढ़ लो और फ़रमाया कि अगर तुम रात में यह पढ़ने के बाद सोये और उसी रात में मर गये तो शहीद की मौत पाओगे।

43. मन्क़ूल है कि जो शख़्स मिर्गी के मर्ज़ में मर जाता है वह शहीद होता है।

44. जो शख़्स हज और उमरे के दर्मियान मरता है शहीद होता है।

45. जो शख़्स बावुज़ू मरता है शहीद होता है।

46. इसी तरह रमज़ान के महीने में, बैतुल-मुक़द्दस मक्का या मदीने में मरने वाला शख़्स शहीद होता है।

47. दुब्लाहट की बीमारी में मरना वाला शख़्स शहीद होता है।

48. जो शख़्स किसी आफ़त व बला में मुब्तला हो और वह उसी

हालत में ज़रर व बला पर सब्र व रिज़ा का दामन पकड़े हुए मर जाए तो शहीद है।

49. जो शख़्स सुब्ह व शाम لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ जिसके पढ़ने की फ़ज़ीलत का तज़किरा एक हदीस में लिया गया है पढ़े तो वह शहीद है।

50. मन्क़ूल है कि जो शख़्स नव्वे बरस की उम्र में या आसेब-ज़दा होकर मरे या उस हाल में मरे कि उसके माँ-बाप उससे खुश हों और या नेक बख़्त बीवी इस हाल में मरे कि उसका शौहर उससे खुश और राज़ी हो तो वह शहीद है।

51. इसी तरह आदिल हाकिम व बादशाह, शरअी क़ाज़ी, यानी वह क़ाज़ी जो हमेशा हक़ व इंसाफ़ ही की रौशनी में फ़ैसला करे शहीद है।

52. और वह मुसलमान भी शहीद है जो किसी बूढ़े मुसलमान के साथ कलिमा ख़ैर या उसकी किसी तरह की मदद करके भलाई का मामला करे।

–मज़ाहिरे हक़, जदीद, हिस्सा 2, पेज 347

तीन बीमारियाँ ऐसी हैं जिनमें बीमार की अयादत करें या न करें

1. आँख दुखने में। 2. दाढ़ के दर्द में। 3. दुन्बल फ़ोड़े में।

तफ़्सील मुलाहिज़ा होः–

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरी अयादत फ़रमाई जबकि मेरी आँखों में दर्द था। (अहमद अबू दाऊद) इस हदीस से मालूम हुआ कि

उस शख़्स की अयादत करना सुन्नत है जो आँखें दुखने या आँख के दूसरी बीमारी में मुब्तला हो जबकि एक रिवायत का जो जामेअ सग़ीर में मन्क़ूल है यह मतलब है कि तीन बीमारियाँ ऐसी हैं जिनमें बीमार की अयादत न की जाए। 1. आँख दुखने में। 2. दाढ़ के दर्द में। 3. दुन्बल (फोड़े) में। चूंकि इन दोनों हदीसों में तआरुज़ है इसलिए इन दोनों में इस तावील के ज़रिए ततबीक़ पैदा की जाएगी कि इन बीमारियों में बीमार की इ़यादत वे लोग न करें जिनके लिए बीमार को तक्लीफ़ करना पड़े या उनका आना बीमार के लिए बुरा हो क्योंकि अगर वे लोग ऐसे बीमार के लिए जाएंगे तो आँख दुखने या आँख की दूसरी बीमारी की शक्ल में बीमार को अपनी आँख खोलने पर मजबूर होना पड़ेगा या दाढ़ दुखने की शक्ल में उससे बातें करने की वजह से बहुत तक्लीफ़ होगी। इसी तरह अगर दुन्बल होगा तो वह उनकी वजह से ठीक तरह से बैठने पर मजबूर होगा और ज़ाहिर है कि फोड़े की वजह से इसके लिए किसी एक और ठीक हालत पर बैठना बहुत तक्लीफ़ की वजह होगी। हाँ अगर ऐसे लोग अयादत के लिए जाएं जिनकी वजह से बीमार को तक्लीफ़ न करना पड़े या उनका जाना बीमार पर बुरा न गुज़रे तो इन बीमारियों में भी इ़यादत के लिए जाने में कोई बुराई नहीं है।

—मज़ाहिरे हक़, जदीद, हिस्सा 2, पेज 352

हज़रत रबिआ बसूरिया का बचपन

हज़रत राबिआ बसूरिया रह० से जो कि औलिया कामिलीन में से थीं किसी शख़्स ने पूछा कि अल्लाह तआला की तलब का रास्ता आपके हाथ कैसे लगा? यानी ख़ुदा की तलब की शुरूआत

क्योंकर हुई? फ़रमाया कि मैं सात बरस की थी कि बस्रा में क़हत पड़ा, मेरे माँ-बाप की वफ़ात हो गई और मेरी बहनें मुत्तफ़र्रिक़ हो गईं और मुझे राबिआ इसलिए कहते हैं कि मेरी तीन बहनें और चौथी मैं थी, तो मैं एक ज़ालिम के हाथ पड़ी उसने मुझको छः दिरहम में बेच डाला। जिस शख़्स ने मुझको ख़रीदा था वह मुझसे सख़्त से सख़्त काम लेता था। एक रोज़ मैं कोठे से गिर पड़ी और मेरा हाथ टूट गया। मैंने अपना चेहरा ज़मीन पर रखा और अर्ज़ किया। बारे ख़ुदायाः मैं एक ग़रीब यतीम लड़की हूँ एक शख़्स की क़ैदी पड़ी हूँ, मुझपर रहम फ़रमा, मैं तेरी रज़ा चाहती हूँ, अगर तू राज़ी है तो फिर मुझे कोई फ़िक्र नहीं। उसके जवाब में मैंने एक आवाज़ सुनी कि ऐ ज़ईफ़ा! ग़म मत खा कि कल को तुझे एक ऐसा मर्तबा हासिल होगा कि मुक़र्रिबान आसमान तुझको अच्छा जानने लगेंगी। उसके बाद मैं अपने मालिक के घर आई तो मैंने रोज़ा रखना शुरू किया और शब को एक गोशे में जाकर इबादत में मशग़ूल हुई। एक मर्तबा मैं आधी रात को हक़ तआला से मुनाजात कर रही थी और यह कह रही थी इलाही तू जानता है कि मेरे दिल की ख़्वाहिश तेरे फ़रमान की मुवाफ़िक़त में है और मेरी आँख की रौशनी तेरी ख़िदमत करने में है और तू मेरी नीयत को जानता ही है कि अगर मेरे ज़िम्मे मख़्लूक़ की ख़िदमत न होती तो घड़ी भर के लिए भी तेरी इबादत से आसूदा न होती। लेकिन तूने मुझको एक मख़्लूक़ के हाथ क़ैद कर दिया है। यह दुआ कर रही थी कि मेरे मालिक ने मेरे सर पर एक क़न्दील नूर की बग़ैर ज़ंज़ीर के लटकी हुई देखी जिसके सबब सारा घर रौशन हो गया था। दूसरे दिन मालिक ने मुझे बुलाया और आज़ाद कर दिया मैंने वीराने की राह ली जहाँ कोई आदमी न था और अपने

रब की इबादत में मशग़ूल हो गई। चुनांचे हर रात हज़ार रकअ़त नमाज़ पढ़ती थी। —मिसाली ख़ुवातीन, मुहम्मद इस्हाक़ मुलतानी

फ़ितने की 72 निशानियाँ

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के क़रीब 72 बातें पेश आएंगीः

1. लोग नमाज़ें ग़ारत करने लगेंगे... यानी नमाज़ों का एहतिमाम रुख़्सत हो जाएगा। यह बात अगर इस ज़माने में कही जाए तो कोई ज़्यादा ताज्जुब की बात नहीं समझी जाएगी इसलिए कि आज मुसलमानों की ज़्यादा तादाद ऐसी है जो नमाज़ की पाबन्द नहीं है लेकिन हुज़ूर अक़्दस ने यह बात उस वक़्त इर्शाद फ़रमाई थी जब नमाज़ को कुफ़्र और ईमान के दर्मियान हद्दे-फ़ाज़िल क़रार दिया गया था। उस ज़माने में मोमिन कितना ही बुरे से बुरा हो, फ़ासिक़, फ़ाजिर हो, बदकार हो, लेकिन नमाज़ नहीं छोड़ता था, उस ज़माने में आपने इर्शाद फ़रमाया कि लोग नमाज़ें ग़ारत करने लगेंगे।
2. अमानत बर्बाद करने लगेंगे यानी जो अमानत उनके पास रखी जाएगी उसमें ख़यानत करने लगेंगे।
3. सूद खाने लगेंगे।
4. झूट को हलाल समझने लगेंगे यानी झूठ एक फ़न और हुनर बन जाएगा।
5. मामूली-मामूली बातों पर ख़ूँ-रेज़ी करने लगेंगे, ज़रा-सी बात पर दूसरे की जान ले लेंगे।
6. ऊँची-ऊँची बिल्ड़िंगे बनाएंगे।

7. दीन बेचकर दुनिया जमा करेंगे।
8. क़तअ रहमी, यानी रिश्तेदारों से बदसुलूकी होगी।
9. इंसाफ़ नायाब हो जाएगा।
10. झूठ सच बन जाएगा।
11. लिबास रेशम का पहना जाएगा।
12. ज़ुल्म आम हो जाएगा।
13. तलाक़ों की कसूरत होगी।
14. नागहानी मौत आम हो जाएगी यानी ऐसी मौत आम हो जाएगी जिसका पहले से पता नहीं होगा बल्कि अचानक पता चलेगा कि फ़लां शख़्स अभी ज़िन्दा ठीक-ठाक था और अब मर गया।
15. ख़्यानत करने वाले को अमीन समझा जाएगा।
16. अमानतदार को ख़ाइन समझा जाएगा यानी अमानतदार पर तोहमत लगाई जाएगी कि यह ख़ाइन है।
17. झूठे को सच्चा समझा जाएगा।
18. सच्चे को झूठा समझा जाएगा।
19. तोहमत-दराज़ी आम हो जाएगी यानी लोग एक-दूसरे पर झूठी तोहमतें लगाएंगे।
20. बारिश के बावजूद गर्मी होगी।
21. लोग औलाद की ख़्वाहिश करने के बजाए औलाद से कराहियत करेंगे यानी लोग औलाद होने की दुआएं करते हैं उसके बजाए लोग यह दुआएं करेंगे कि औलाद न हो, चुनांचे आज ही देख लें कि ख़ानदानी मन्सूबा- बन्दी हो रही है और यह नारा लगा रहे हैं कि बच्चे दो ही अच्छे।

22. कमीनों के ठाठ होंगे यानी कमीने लोग बड़े ठाठ से ऐश व इश्रत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।
23. शरीफ़ों की नाक में दम आ जाएगा यानी शरीफ़ लोग शराफ़त को लेकर बैठेंगे तो दुनिया से कट जाएंगे।
24. अमीर और वज़ीर झूठ के आदी हो जाएंगे यानी सरबराहे हुकूमत और उसके आवान व अन्सार और वज़ीर झूठ के आदी बन जाएंगे और सुब्ह व शाम झूठ बोलेंगे।
25. अमीन ख़यानत करेंगे।
26. सरदार ज़ुल्मपेशा होंगे।
27. आलिम और क़ारी बदकार होंगे यानी आलिम भी हैं और कुरआन करीम की तिलावत भी कर रहे हैं मगर बद्कार हैं। अल्-अयाज़ बिल्लाह।
28. लोग जानवरों की खालों का लिबास पहनेंगे।
29. मगर उनके दिल मुरदार से ज़्यादा बदबूदार होंगे। यानी लोग जानवरों की खालों से बने हुए आला दर्जे के लिबास पहनेंगे। लेकिन उनके दिल मुरदार से ज़्यादा बदबूदार होंगे।
30. और ऐलवे से ज़्यादा कड़वे होंगे।
31. सोना आम हो जाएगा।
32. चाँदी की माँग होगी।
33. गुनाह ज़्यादा हो जाएंगे।
34. अमन कम हो जाएगा।
35. क़ुरआन करीम के नुस्ख़ों को आरास्ता किया जाएगा और उस पर नक़्श व निगार बनाया जाएगा।
36. मस्जिदों में नक्श व निगार किए जाएंगे।

37. ऊँचे-ऊँचे मीनार बनेंगे।
38. लेकिन दिल वीरान होंगे।
39. शराबें पी जाएंगे।
40. शरओ सज़ाओं को ख़त्म कर दिया जाएगा।
41. लौंडी अपने आक़ा को जनेगी यानी बेटी माँ पर हुक्मरानी करेगी और उसके साथ ऐसा सुलूक करेगी जैसा आक़ा अपनी कनीज़ के साथ सुलूक करता है।
42. जो लोग नंगे पाँव, नंगे बदन, ग़ैर-मुहज़्ज़ब होंगे वह बादशाह बन जाएंगे। कमीने और नीच ज़ात के लोग जो नस्बी और अख़्लाक़ के एतिबार से कमीने और नीचे दर्जे के समझे जाते हैं वह मालिक बनकर हुकूमत करेंगे।
43. तिजारत में औरत मर्द के साथ शिर्कत करेगी जैसा आजकल हो रहा है कि औरतें ज़िन्दगी के हर काम में मर्दों के शाना-ब-शाना चलने की कोशिश कर रही हैं।
44. मर्द औरतों की नक़्क़ाली करेंगे।
45. औरतें मर्दों की नक़्क़ाली करेंगे। यानी मर्द औरतों जैसा हुलिया बनाएंगे और औरतें मर्दों जैसा हुलिया बनाएंगे। आज देख लें नये फ़ैशन ने यह हालत कर दी है कि दूर से देखो तो पता लगाना मुश्किल होता है कि यह मर्द है या औरत है।
46. ग़ैरुअल्लाह की क़स्में खाई जाएंगी यानी क़सम तो सिर्फ़ अल्लाह की सिफ़त की और क़ुरआन की खाना जाइज़ है। दूसरी चीज़ों की क़सम खाना हराम है लेकिन उस वक़्त लोग और चीज़ों की क़सम खाएंगे जैसे तेरे सर की क़सम।
47. मुसलमान भी बग़ैर कहे झूठी गवाही देने को तैयार होगा।

लफ़्ज़ "भी" के ज़रिए यह बता दिया कि और लोग तो यह काम करते ही हैं लेकिन उस वक़्त मुसलमान भी झूठी गवाही देने को तैयार हो जाएंगे।

48. सिर्फ़ जान-पहचान के लोगों को सलाम किया जाएगा मलतब यह है कि अगर रास्ते में कहीं से गुज़र रहे हैं तो उन लोगों को सलाम नहीं किया जाएगा जिनसे जान-पहचान नहीं है, अगर जान-पहचान है तो सलाम कर लेंगे हालांकि हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान यह है कि وتقرء السلام على من عرفت ومن لم تعرف. जिसको तुम जानते हो उसको भी सलाम करो और जिसको तुम नहीं जानते उसको भी सलाम करो। ख़ास तौर पर उस वक़्त जबकि रास्ते में इक्का-दुक्का आदमी गुज़र रहे हों तो उस वक़्त सब आने-जाने वालों को सलाम करना चाहिए। लेकिन अगर आने-जाने वालों की तादाद ज़्यादा हो और सलाम की वजह से अपने काम में ख़लल आने का अन्देशा हो तो फिर सलाम न करने की भी गुन्जाइश है। लेकिन एक ज़माना ऐसा आएगा कि इक्का-दुक्का आदमी गुज़र रहे होंगे तब भी सलाम नहीं करेंगे और सलाम का रिवाज ख़त्म हो जाएगा।

49. ग़ैर दीन के लिए शरअी इल्म पढ़ाया जाएगा। यानी शरअी इल्म दीन के लिए नहीं, बल्कि दुनिया के लिए पढ़ाया जाएगा। अल्-अयाज़ बिल्लाह। और मक़सद यह होगा कि उसके ज़रिए हमें डिग्री हासिल हो जाएगी, मुलाज़िमत मिल जाएगी। पैसे मिल जाएंगे, इज़्ज़त और शौहरत हासिल हो जाएगी इन मक़ासिद के लिए दीन का इल्म पढ़ा जाएगा।

50. आख़िरत के काम से दुनिया कमाई जाएगी।

51. माले ग़नीमत को ज़ाती जागीर समझ लिया जाएगा माले ग़नीमत से मुराद क़ौमी ख़ज़ाना है यानी क़ौमी ख़ज़ाने को ज़ाती जागीर और ज़ाती दौलत समझकर मामला करेंगे।

52. अमानत को लूट का माल समझा जाएगा। यानी अगर किसी ने अमानत रखवा दी तो समझेंगे कि यह लूट का माल हासिल हो गया।

53. ज़कात को जुर्माना समझा जाएगा।

54. सबसे रज़ील आदमी क़ौम का लीडर और क़ाइद बन जाएगा यानी क़ौम में जो शख़्स सबसे ज़्यादा रज़ील और बद-ख़स्लत इंसान होगा उसको क़ौम के लोग अपना क़ाइद, अपनी हीरो और अपना लीडर बना लेंगे।

55. आदमी अपने बाप की नाफ़रमानी करेगा।

56. आदमी अपनी माँ के साथ बद्‌सुलूकी करेगा।

57. दोस्त को नुक़सान पहुंचाने से गुरेज़ नहीं करेगा।

58. बीवी की इताअत करेगा।

59. बदकारों की आवाज़ें मस्जिद में बुलन्द होंगी।

60. गाने वाली औरतों की ताज़ीम और तकरीम की जाएगी। यानी जो औरतें गाने-बजाने का पेशा करने वाली हैं उनकी ताज़ीम और तक्रीम की जाएगी और उनको बुलन्द मर्तबा दिया जाएगा।

61. गाने-बजाने के और मौसूक़ी के आलात को संभाल कर रखा जाएगा।

62. रास्ते में शराब पी जाएंगी।

63. ज़ुल्म को फ़ख़्र समझा जाएगा।

64. इंसाफ़ बिकने लगेगा यानी अदालतों में इंसाफ़ फ़रोख़्त होगा, लोग पैसे देकर उसको ख़रीदेंगे।
65. पुलिस वालों की तादाद बहुत होगी।
66. क़ुरआन करीम को नग़मा सराई का ज़रिया बना लिया जाएगा, यानी मौसीक़ी के बदले में क़ुरआन की तिलावत की जाएगी ताकि इसके ज़रिए तरन्नुम का हज़ और मज़ा हासिल हो और क़ुरआन की दावत और उसको समझने या उसके ज़रिए अज्र व सवाब हासिल करने के लिए तिलावत नहीं की जाएगी।
67. दरिन्दों की खाल इस्तेमाल की जाएगी।
68. उम्मत के आख़िरी लोग अपने से पहले लोगों पर लअ़्न तअ़्न करेंगे यानी उन पर तन्क़ीद करेंगे और उन पर एतिमाद नहीं करेंगे और तन्क़ीद करते हुए यह कहेंगे कि उन्होंने यह बात ग़लत कही और यह ग़लत तरीक़ा इख़्तियार किया।
चुनांचे आज बहुत बड़ी मख़्लूक़ सहाबा कराम रिज़वानुल्लाहि अज्मईन की शान में गुस्ताख़ियाँ कर रही है, बहुत-से लोग उन अइम्मा-ए- दीन की शान में गुस्ताख़ियाँ कर रहे हैं जिनके ज़रिए यह दीन हम तक पहुँचा और उनको बेवक़ूफ़ बता रहे हैं कि वे लोग क़ुरआन व हदीस को नहीं समझे, दीन को नहीं समझे, आज हमने दीन को सही समझा है।
69. या तो तुम पर सुर्ख़ आंधी अल्लाह तआला की तरफ़ से आ जाए।
70. या ज़लज़ले आ जाएं।
71. या लोगों की सूरतें बदल जाएं।

72. या आसमान से पत्थर बरसें या अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई और अज़ाब आ जाए। अल्-अयाज़ बिल्लाह।

अब आप इन अलामात पर ज़रा ग़ौर करके देखें कि यह सब अलामात एक-एक करके किस तरह हमारे मुआशरे पर सादिक़ आ रही हैं और इस वक़्त जो अज़ाब हम पर मुसल्लत है वह दर-हक़ीक़त इन्ही बद्-आमालियों का नतीजा है।—इस्लाही ख़ुतबात, हिस्सा 7, पेज 214, दुर्रे मन्सूर, पेज 52, हिस्सा 6

जिन्नात के दावत देने पर हज़रत तमीम दारी रज़ि० का क़ुबूले इस्लाम

हज़रत तमीम दारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मबऊस हुए उस वक़्त मैं शाम में था। मैं अपनी किसी ज़रूरत से सफ़र में निकला तो रास्ते में रात हो गई मैंने कहा मैं आज रात इस वादी के बड़े सरदार (जिन्न) की पनाह में हूँ। (ज़मान-ए-जाहिलियत में अरबों का ख़याल था कि हर जंगल और हर वादी पर किसी जिन्न की हुकूमत होती है) जब मैं बिस्तर पर लेटा तो एक मुनादी ने आवाज़ लगाई, वह मुझे नज़र नहीं आ रहा था। उसने कहा तुम अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि जिन्नात अल्लाह के मुक़ाबले में किसी को पनाह नहीं दे सकते, मैंने कहा अल्लाह की क़सम! तुम क्या कह रहे हो? उसने कहा अनपढ़ों में अल्लाह की तरफ़ से आने वाले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ाहिर हो चुके हैं, हमनें (मक्का में) ख़जूँ मक़ाम पर उनके पीछे नमाज़ पढ़ी है और हम मुसलमान हो गये हैं और हमने इत्तिबा इख़्तियार कर ली है और अब जिन्नात के तमाम मक्र व फ़रेब ख़त्म हो गये हैं। अब (वह आसमान पर जाना

चाहतें हैं तो) उनको सितारे मारे जाते हैं तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ जो रब्बुल आलमीन के रसूल हैं और मुसलमान हो जाओ। हज़रत तमीम दारी रज़ि० कहते हैं मैं सुब्ह को देर अय्यूब की बस्ती में गया और वहाँ एक पादरी को सारा क़िस्सा सुनाकर उससे इसके बारे में पूछा। उसने कहाः जिन्नात ने तुमसे सच कहा है वह नबी-ए-हरम (मक्का) में ज़ाहिर होंगे और हिजूरत करके हरम (मदीना) जाएंगे। वह तमाम अंबिया अलहिमुस्सलाम से बेहतर हैं कोई और तुमसे पहले उन तक न पहुँच जाए, इसलिए जल्दी जाओ। हज़रत तमीम दारी रज़ि० कहते हैं मैं हिम्मत करके चल पड़ा और हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुसलमान हो गया।

इब्ने हश्शाम ने उमरो व सबा के दर्मियान दो एक नाम और बढ़ाए हैं। शाम के रहने वाले थे, क़बीला लख़्म से नस्बी ताल्लुक़ था और मज़हबन ईसाई थे। इस्लाम लाने के बाद से जितने ग़ज़वात पेश आएं सबमें शरीक हुए। रसूलुल्लाह सल्ल० ने कफ़ाफ़ (गुज़ारा) के लिए शाम में क़िरया ऐनों का एक हिस्सा आपको दे दिया था, और उसकी तहरीरी सन्द भी लिख दी थी। मगर दयारे महबूब की मुहब्बत ने वतन की मुहब्बत फ़रामोश कर दी, चुनांचे एहदे नब्वी सल्ल० के बाद खुल्फ़ा-ए-सलासा के ज़माने के आप सल्ल० मदीने ही में रहे, हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत के बाद मिल्ली फ़ित्ना व फ़साद शुरू हुआ तो आप बादिले ना-ख़्वास्ता मदीना छोड़कर अपने वतन शाम चले गए। आप जब शाम से मदीना आए तो आप अपने साथ कुछ क़न्दीलों और थोड़ा सा तेल भी लेते आए। मदीना पहुँच कर क़न्दीलों में तेल डालकर मस्जिद नब्वी सल्ल० में लटका दें और जब शाम हुई तो उन्होंने

उन्हें जला दिया। इससे पहले मस्जिद में रौशनी नहीं होती थी।

आंहज़रत सल्ल० मस्जिद में तशरीफ़ लाए और मस्जिद को रौशन पाया तो पूछा कि मस्जिद में रौशनी किसने की है, सहाब-ए-किराम ने हज़रत तमीम रज़ि० का नाम बताया। आप सल्ल० बेहद खुश हुए, उनको दुआएं दी और फ़रमाया, अगर मेरी कोई लड़की होती मैं तमीम रज़ि० से उसका निकाह कर देता। इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त नोफ़ल बिन हारिस मौजूद थे। उन्होंने अपनी बेवा साहबज़ादी उम्मे मुग़ीरा को पेश किया, आप सल्ल० ने उस मज्लिस में उम्मे मुग़ीरा से हज़रत तमीम रज़ि० का निकाह कर दिया। फ़तहुल बारी में है कि हज़रत उ़मर रज़ि० ने तरावीह बा-जमाअत क़ाइम की तो मर्दों का इमाम अबी बिन कअ़ब रज़ि० को और औरतों का इमाम तमीम दारी रज़ि० को मुक़र्रर किया। एक मर्तबा रूह बिन ज़न्बाअ तमीम दारी रज़ि० की ख़िदमत में गये तो देखा कि घोड़े के लिए जौ साफ़ कर रहे हैं और घर के तमाम लोग आपके चारों तरफ़ बैठे हुए हैं। रूह ने अर्ज़ किया, किया इन लोगों में से कोई ऐसा शख़्स नहीं है जो इस काम को कर सके? आपने फ़रमायाः यह ठीक है लेकिन मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है किः

مَا مِنْ اِمْرَاءٍ مُسْلِمٍ يَنْقِى لِفَرَسِهٖ ثُمَّ يَعْلِفُهٗ عَلَيْهِ كُتِبَ لَهٗ بِكُلِّ حَبَّةٍ حَسَنَةٌ ○

जब कोई मुसलमान अपने घोड़े के लिए दाना साफ़ करता है और फिर उसको खिलाता है तो हर दाने के बदले उसे एक नेकी मिलती है।

इसलिए मैं खुद अपने हाथ से काम करता हूँ ताकि सवाब से महरूम न रह जाऊं।

उन्होंने एक बहुत क़ीमती जोड़ा ख़रीदा था, जिस रोज़ उनको शबे क़द्र की तवक़्क़ो होती थी उसे उस रोज़ पहनते थे। हज़रत उमर रज़ि० के ज़मान-ए- ख़िलाफ़त में एक मर्तबा मुक़ामे हिरा में आग लगी। हज़रत उमर रज़ि० हज़रत तमीम दारी रज़ि० के पास आए और उनसे वाक़िया बयान किया। हज़रत तमीम रज़ि० वहाँ गये और बेख़तर आग में घुस गये और उसे बुझाकर सही सालिम वापस चले आए। हज़रत उमर रज़ि० आपको ख़ैर अह्ले मदीना (मदीना के सबसे अच्छे और नेक आदमी) फ़रमाया करते थे।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 649, सयरुस्सहाबा, हिस्सा 4, पेज 140

ज़बूर और तौरात में उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० की सिफ़ात

1. ज़बूर में तहरीर है कि उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० को क़ियामत के दिन अम्बिया का नूर दिया जाएगा (यही हदीस का यह टुकड़ा बन्दे ने नक़्ल दिया है)। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 1, पेज 45
2. तौरात में है कि उम्मते मुहम्मदिया सल्ल० की अज़ानें आसमानी फ़िज़ा में गूंजेगी (यानी हवाई जहाज़ में अज़ानें देंगे)।
3. पाँचों नमाज़ें अपने वक़्त पर पढ़ेंगे अगरचे कूड़े करकट वाली जगह पर हों और मियान कमर पर लुंगी बांधेंगे और वुज़ू में जिस्म के हिस्सों को धोएंगे। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 1, पेज 46

नोटः—

कूड़े-करकट वाली जगह पर नमाज़ पढ़ेंगे। आजकल हमारे साथी स्टेशन पर ट्रेन में, बस अड्डे पर जहाँ जगह मिल गई नमाज़ अदा करते हैं। —फ़लिल्लाह अल्-हम्द वल्-मुसन्ना

ज़ालिम क़ौम के ज़ुल्म से बचने के लिए नब्वी तरीक़ा

हज़रत हसीन रज़ि० को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की दावत दी, हज़रत हसीन रज़ि० ने फ़रमाया मेरी क़ौम है, मेरा ख़ानदान है (अगर इस्लाम) लाऊंगा तो उनसे मुझे ख़तरा है इसलिए अब मैं क्या कहूँ। आप सल्ल० ने फ़रमायाः यह दुआ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اَسْتَهْدِيْكَ لِاَرْشَدْ اَمْرِىْ وَزِدْنِىْ عَلْمًا يَنْفَعُنِىْ

तर्जुमाः– ऐ अल्लाह! मैं अपने मामलात में ज़्यादा रुश्द व हिदायत वाले रास्ते की आपसे रहनुमाई चाहता हूँ और मुझे इल्मे नाफ़ेअ और ज़्यादा अता फ़रमा।

चुनाँचे हज़रत हसीन रज़ि० ने यह दुआ पढ़ी और उसी मज्लिस में उठने से पहले ही मुसलमान हो गये। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 1, पेज 93

जन्नत के दोनों तरफ़ सोने के पानी से तीन लाइनें लिखी हुई हैं

1. لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدُ الرَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

2. जो हमने आगे भेज दिया यानी सद्क़ा वग़ैरह कर दिया उसका सवाब मिल गया और जो दुनिया में हमने खा-पी लिया उसका हमने नफ़ा उठा लिया और जो कुछ हम छोड़ आए उसमें हमें नुक़्सान हुआ।

3. उम्मत गुनाहगार है और रब बख़्शने वाला है।

—मुन्तख़ब अहादीस, पेज 47

अल्लाह तआला खुद भी दावत देता है।

1. وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلَامِ...

"और अल्लाह तआला बुलाते हैं सलामती के घर की तरफ़।"
(सूरह यूनुस:25)

2. وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ.

"और अल्लाह तआला बुलाते हैं जन्नत और बख़्शिश की तरफ़ अपने हुक्म से" (सूरह बक़रह:221)

3. يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ.

"ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने रब की जिसने पैदा किया तुमको और उनको जो तुमसे पहले थे, ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।" (सूरह बक़रत:21)

4. يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ.

"ऐ लोगो! डरते रहो अपने रब से जिसने पैदा किया तुमको एक जान से" (सूरह निसा:1)

5. يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ج اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيْمٌ.

"ऐ लोगो! डरते रहो अपने रब से, बेशक क़यामत का ज़लज़ला बड़ा भारी चीज़ है।" (सूरह हज:1)

6. يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ.

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरते रहो, जैसा कि उससे डरना चाहिए, और न मरो मगर मुसलमान यानी मरते दम तक कोई हरकत मुसलमानी के ख़िलाफ़ न करो।" (सूरह आले इम्रान:102)

7. يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ ج

"ऐ ईमान वालो! तुम इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूलुल्लाह सल्ल० की और तुम में जो अमीर व हाकिम

हैं उनकी भी।" (सूरह निसा:59)

8. يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا۔

"ऐ ईमान वालो! बचाओ अपनी जानों को और अपने घर वालों को आग से।" (सूरह तहरीम:6)

9. يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا

"ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो।" (सूरह तहरीम:8)

10. يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ. وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ.

"ऐ ईमान वालो! तुम रूकूअ् किया करो और सज्दा किया करो और अपने रब की इबादत किया करो और नेक काम किया करो उम्मीद है कि तुम फ़लाह पा जाओगे, और अल्लाह के काम में ख़ूब कोशिश किया करो जैसा कि कोशिश करने का हक़ है।" (सूरह हज:77—78)

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने हज़रत जिब्रील अलैहि० को दावत दी

ऐ जिब्रील! अल्लाह पर ईमान ला, फ़रिश्तों पर ईमान ला, किताबों पर ईमान ला, आख़िरत के दिन पर ईमान ला, मौत पर, हयात पर, मरने के बाद ज़िन्दा होने पर, जन्नत-जहन्नम पर, तक़्दीर पर भली या बुरी हो अल्लाह की तरफ़ से है। हज़रत जिब्रील अलैहि० ने अर्ज किया अगर मैं इन तमाम बातों पर ईमान ले आया तो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः मोमिन

हो गया...जारी (पूरी हदीस मुन्तख़ब अहादीस पेज 61 पर मुलाहिज़ा हो)

—मुस्नद अहमद, हिस्सा 1, पेज 319

नोटः— मालूम हुआ कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दावत दी।

सब्र करने का वक़्त

सब्र अपने वक़्त पर होता है, मुद्दत गुज़र जाने के बाद तो हर एक को सब्र आ जाता है, वह बाअसे अज्र नहीं होता, सब्र वही बाअसे अज्र होता है जो इरादा और इख़्तियार से मुसीबत को दबाने के लिए किया जाए।

हदीस शरीफ़ में है कि एक बुढ़िया का जवान बेटा मर गया, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उधर से गुज़रे, बुढ़िया ने वावेला फ़रमाया और बयान कर-करके रो रही थी, आप सल्ल० ने फ़रमायाः सब्र कर, वह आप सल्ल० को पहचानती न थी, जवाब दिया हाँ! तुम्हारा जवान बेटा मर गया होता तो पता चलता। आप सल्ल० वहाँ से चल दिए, किसी ने कहाः अल्लाह के रसूल सल्ल० थे, दौड़ी-दौड़ी आई और फ़रमाया अब मैं सब्र करूंगी। आप सल्ल० ने फ़रमाया اَلصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الْاُوْلٰى सदमा और रंज पहुंचते ही आदमी सब्र करे तो मोजिबे अज्र होता है।

—ख़ुतबात हकीमुल इस्लाम, हिस्सा 5, पेज 380

दो झगड़ने वालों को दीवार की नसीहत

बनी इस्राईल में एक आदमी का इन्तिक़ाल हो गया, उसके दो बेटे थे। उन दोनों के दर्मियान एक दीवार की तक़्सीम के

सिलसिले में झगड़ा हो गया, जब दोनों आपस में झगड़ रहे थे तो उन्होंने दीवार से एक ग़ैबी आवाज़ सुनी कि तुम दोनों झगड़ा मत करो क्योंकि मेरी हक़ीक़त यह है कि मैं एक मुद्दत तक इस दुनिया में बादशाह और साहिबे मुम्लिकत रहा, फिर मेरा इन्तिक़ाल हो गया और मेरे बदन के हिस्से मिट्टी के साथ घुल-मिल गये।

फिर उस मिट्टी से कुम्हार ने मुझे गढ़े की ढीकरी बना दिया, एक बड़ी मुद्दत तक ठीकरो की सूरत में रहने के बाद मुझे तोड़ दिया गया, फिर एक लम्बी मुद्दत तक ठीकर के टुकड़ों की सूरत में रहने के बाद मिट्टी और रेत में तब्दील हो गया फिर कुछ मुद्दत के बाद लोगों में मेरे बदन के हिस्सों की इस मिट्टी से ईंटें बना डालीं। और आज तुम मुझे ईंटों की शक्ल में देख रहे हो, इसलिए तुम ऐसी मज़्मूम व क़बीह दुनिया पर क्यों झगड़ते हो। वस्सलाम

किसी शायर ने किया ख़ूब कहा है:

कल पाँव एक कास-ए-सिर पर जो आ गया
यकसर वो इस्तख़्वाने शिकिस्ता से चूर था

कहने लगा कि देख के चल राह बे-ख़बर
मैं भी कभी किसी का सरे पुर ग़ुरूर था

एक और शायर कहता है।

ग़ुरूर था नमूद थी, हटो बचो की थी सदा
और आज तुम से क्या कहूँ लहद का भी पता नहीं

आह! आह! यह दुनिया बड़ी फ़रेब दहन्दा है, फ़ानी होने के बावजूद यह लोगों की महबूब बनी हुई है यह अपनी ज़ाहिरी रंगीनी और रानाई से लोगों को गुमराह करते हुए आख़िरत से ग़ाफ़िल करती है, अल्लाह तआला मुसलमानों के दिलों को जन्नती

खुशियों से हम-आग़ोश फ़रमाएं। आमीन

—गुलस्ताने क़नाअत, तालीफ़ अल्लामा मुहम्मद मूसा रूहानी बाज़ी, पेज 492

सिर्फ़ हज़रत बराअ् बिन आज़िब रज़ि० को सोने की अंगूठी पहनने की इजाज़त

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० सोने की अंगूठी पहनते थे, सोना मर्दों के लिए शरअन हराम है, लोगों ने एतिराज़ किया। फ़रमायाः पहले वाक़िआ सुन लो। एक मर्तबा आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने माले ग़नीमत तक़्सीम किया, सिर्फ़ यह अंगूठी रह गई, इधर-उधर देखा फिर मुझको बुलाकर फ़रमाया इसको पहनो, यह खुदा और रसूल सल्ल० ने तुमको पहनाई है। अब तुम ही बताओ जो चीज़ अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे पहनाई हो उसको क्योंकर उतार फेकूँ।

—सयरुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 245

वह्म मुस्तक़िल मर्ज़ है

वहम खुद मुस्तक़िल एक मर्ज़ है। मोमिन ख़ाँ शायर रमज़ान में तरावीह पढ़ने आते थे, एक दोस्त उनका आता था उससे कहा कि भाई वह सूरत जिसका नाम नहीं लिया जाता है (मुराद उससे सूरः यासीन थी) उनके ज़ेहन में यह था कि यह सूरत जो सुनता है वह मर जाता है"। फ़रमाया कि रात में जब यह सूरत पढ़ी जाए मुझे ख़बर करना, मैं तरावीह पढ़ने न आऊंगा, इत्तिफ़ाक़ से वह दोस्त बताना भूल गये, तीन-चार रोज़ के बाद फिर पूछा भाई वह सूरत आए तो बता देना दोस्त ने कहा कि वह तो रात में पढ़ी गई, बस अब उनका क्या कहना। चेहरा बदल गया, लोगों को

माफ़ कराना शुरू कर दिया, वसीयत नसीहत करनी शुरू कर दी। फिर उदास हो गया, लोगों को कहने लगे, वह सूरत मैंने सुन ली और दो रोज़ के बाद मर गये।

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ط اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ○

इस मक़ाम पर अल्लाह ने लोगों की चार क़िस्में बयान फ़रमाई हैं :

1. वह जिनको सिर्फ़ बेटे दिए।
2. वह जिनको सिर्फ़ बेटियाँ दीं।
3. वह जिनको बेटे, बेटियाँ दोनों दिए।
4. वह जिनको बेटा दिया न बेटी दी।

लोगों के दर्मियान यह फ़र्क़ व तफ़ावत अल्लाह की क़ुदरत की निशानियों में से है। इस तफ़ावत इलाहि को दुनिया की कोई ताक़त बदलने पर क़ादिर नहीं। यह तक़्सीम औलाद के एतिबार से है।

—इब्ने कसीर, 1375 ई०

बापों के एतिबार से भी इंसानों की चार क़िस्में हैं

1. आदम अलैहिस्सलाम को सिर्फ़ मिट्टी से पैदा किया, उनका बाप है न माँ।
2. हज़रत हव्वा को आदम अलैहिस्सलाम से यानी मर्द से पैदा किया उनकी माँ नहीं है।
3. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सिर्फ़ औरत के बतन से पैदा किया, उनका बाप नहीं है।

4. और बाक़ी तमाम इंसानों को मर्द औरत दोनो के मिलाप से, उनके बाप भी हैं और माएँ भी। فَسُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَلِيْمِ الْقَدِيْرِ

—इब्ने कसीर, पेज 1375

सलाम की शुरूआत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया और उनके अन्दर रूह फूंक दी तो उनको छींक आई, उन्होंने अल्- हम्दुलिल्लाह कहा। उनके रब ने यरहमुकल्लाह फ़रमाया और फ़रमाया कि ऐ आदम! उन फ़रिश्तों की तरफ़ जाओ जो वहाँ बैठे हुए हैं और उनको जाकर सलाम अलैकुम कहो, हज़रत आदम अलैहि० ने वहाँ पहुँचकर अस्सलामु अलैकुम कहा तो फ़रिश्तों ने उसके जवाब में वालयकुम अस्सलाम वरहमतुल्लाह कहा फिर वह वापस आए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि बिलाशुब्हा यह तहिय्या है तुम्हारा और आपस में तुम्हारे बेटों का। —रिवाहुल तिर्मिज़ी, कमा फ़ी अल्-मिश्कात

इस हदीस से मालूम हुआ कि इंसानों में सलाम की शुरूआत इस तरह हुई कि अल्लाह तआला ने सब इंसानों के बाप हज़रत आदम अलैहि० को हुक्म दिया कि फ़रिश्तों को जाकर सलाम करो। —तब्लीग़ी और इस्लाही मज़ामीन, हिस्सा 2, पेज 178, मुसन्निफ़ मौलाना आशिक़ इलाही मेरठी रह०

खजूर और ज़मज़म के पानी की ज़ियाफ़त वाली हदीस और उसकी अजीब व ग़रीब फ़ज़ीलत

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खजूर और पानी से मेरी दावत फ़रमाई और

इर्शाद फ़रमाया जिस शख़्स ने एक मुसलमान की ज़ियाफ़त की तो उसका ऐसा सवाब है जैसे उसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ज़ियाफ़त की।

जिस शख़्स ने दो मुसलमानों की दावत की उसका सवाब ऐसा है जैसे उसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा अलैहस्सलाम की दावत की।

जिस शख़्स ने तीन लोगों की दावत की तो उसका सवाब ऐसा है जैसे उसने हज़रत जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील अलैहिमुस्सलाम की दावत की।

जिस शख़्स ने चार मुसलमानों की दावत की तो उसका सवाब ऐसा है जैसे उसने तौरात, इंजील, ज़बूर और क़ुरआन करीम की तिलावत की।

जिसने पाँच मुसलमानों की दावत की उसका सवाब ऐसा है जैसे किसी शख़्स ने जिस दिन अल्लाह पाक ने मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया उसके पहले दिन से क़ियामत तक पाँचों नमाज़ें जमाअत के साथ अदा कीं।

जिस शख़्स ने छः आदमियों की ज़ियाफ़त की उसका सवाब ऐसा है जैसे उसने हज़रत इस्माईल अलैहि० की औलाद में से साठ ग़ुलाम आज़ाद किए।

जिस शख़्स ने सात लोगों की दावत की तो उस पर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिए जाएंगे।

जिस शख़्स ने आठ लोगों की दावत की तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे।

जिस शख़्स ने नौ लोगों की दावत की तो अल्लाह तआला

उसको इतनी तादाद में नेकियाँ अता फ़रमाएंगे जितनी किसी शख़्स ने अल्लाह तआला ने मख़्लूक़ात को पैदा करने के पहले दिन से लेकर क़ियामत तक नाफ़रमानी की।

जिस शख़्स ने दस आदमियों की ज़ियाफ़त की अल्लाह तआला उसको उस शख़्स के बराबर अज्र व सवाब अता फ़रमाएंगे जिसने क़ियामत तक नमाज़ पढ़ी रोज़े रखे, हज और उमरे किए।

नोटः– यह हदीस मशहूर और मारूफ़ है, कई किताबों में है, बन्दा हज के सफ़र में है, किताबें न होने की वजह से हवाला नहीं लिखा।

तशरीहः– यह हदीस सनद के एतिबार से ज़ईफ़ है और फ़ज़ाइल में ज़ईफ़ हदीस भी मोतबर है इसलिए तमाम मुहद्दिसीन किराम ने इस हदीस मुसलसल को बयान करने का एहतिमाम फ़रमाया है लिहाज़ा यह हदीस क़ाबिले क़बूल और लाइक़े अमल है और जो सवाब इसमें बयान किया गया है उसको हासिल करने की नीयत से ज़ियाफ़त करना जाइज़ और बाइसे अज्र है और मज़कूरा बाला सवाब को हासिल करने के लिए किसी की ज़ियाफ़त में बहुत ज़्यादा तकल्लुफ़ इख़्तियार करना ज़रूरी नहीं, सादगी के साथ खजूर पानी की दावत पर भी बयान फ़रमूदा सवाब हासिल हो सकता है इसलिए तकल्लुफ़ात के पीछे अज्र व सवाब से महरूम न होना चाहिए। जब किसी मुसलमान की ज़ियाफ़त को मौक़ा हो तो बरवक़्त जो कुछ भी मौजूद हो उसी से ज़ियाफ़त कर देनी चाहिए और किसी ख़ास मौक़े पर हस्बे इस्तिताअत कुछ पुरतकल्लुफ़ खाने बनवाकर महमान की ज़ियाफ़त करना भी जाइज़ है। बहरहाल एक दूसरे की ज़ियाफ़त में इख़्लास का दामन थामें और मज़्कूरा सवाब की नीयत कर लिया करें और

बिला नीयत दावत करके सवाब से महरूम न हों या रियाकारी और नमूद व नुमाइश की नाजाइज़ नीयत करके अपनी ज़ियाफ़त को बाएसे गुनाह न बनाएं, अल्लाह तआला हम सबको इत्तिबा-ए-सुन्नत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन!

सज्दा तिलावत की मस्नून दुआ

سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ. (ابوداؤد، ترمذی، مشکوٰۃ)

एक ज़रूरी मशविरा

हज़रत नाफ़ेअ् ने बयान किया कि मैं अपना माले तिजारत शाम और मिस्र ले जाया करता था। एक मर्तबा इराक़ ले जाने का इरादा किया और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मशविरा लेने के लिए उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ उन्होंने फ़रमाया कि ऐसा न करो क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि जब अल्लाह तआला तुममें से किसी के रिज़्क़ का कोई सबब किसी तरीक़े पर बना दे तो उसको न छोड़े जब तक कि वह ख़ुद ही न बदल जाएं।

मतलब यह है कि जिस सबब से रोज़ी मिलती है उसे मत छोड़, वहाँ अगर वह ख़ुद ही बदल जाए, जैसे हालात साज़गार न रहें, माल में नुक़्सान होने लगे या कोई मजबूरी पेश आ जाए तो और बात है।

—तब्लीग़ी और इस्लाही मज़ामीन, पेज 246

हुज़ैफ़ा रज़ि० की अजीब गुफ़्तगू

हिकायात में बयान किया जाता है कि हज़रत उमर इब्ने अल्-ख़त्ताब रज़ि० ने अपने ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि० से मुलाक़ात की तो हज़रत हुज़ैफ़ा से पूछाः ऐ

हुज़ैफ़ा! तुमने किस हाल में सुब्ह की? फ़रमायाः ऐ अमीरुल मोमिनीन! फ़ितने से मुहब्बत करता हूँ, अ-हक़ को पसन्द करता हूँ, जो चीज़ पैदा नहीं हुई उसका क़ाइल हूँ, जो नहीं देखा उसकी गवाही देता हूँ, बग़ैर वुज़ू के नमाज़ अदा करता हूँ, ज़मीन में मेरे पास एक ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआला के पास आसमान में नहीं है।

तो हज़रत उमर रज़ि० इस बात पर सख़्त ग़ुस्सा हुए और इरादा किया कि उनको सख़्त सज़ा दें फिर आप आं हज़रत सल्ल० के हाँ सहाबियात का लिहाज़ करके रुक गये, आप इसी कश्मकश में थे कि आप के पास हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० गुज़रे तो उनके चेहरे से ग़ुस्से को भांप गये और अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपको किसने ग़ुस्सा आलूद किया है? तो उन्होंने सारा क़िस्सा बयान किया। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमायाः ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपको यह बात ग़ुस्सा न दिलाए। यह (हुज़ैफ़ा) फ़ितने को पसन्द करते हैं। इससे मुराद अल्लाह तबारक व तआला का यह फ़रमान हैः إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ यह औलाद और माल को पसन्द करते हैं, उनकी मुराद यही है फ़ितने से। उनका यह कहना है कि वह हक़ को पसन्द नहीं करते तो हक़ से मुराद मौत है, जिससे कोई चारा नहीं। उनका यह कहना है कि वह ही कहते हैं जो पैदा नहीं हुआ मुराद उससे क़ुरआन पाक है जो पैदा शुदा नहीं (बल्कि अल्लाह पाक की सिफ़त कलाम है)। उनका यह कहना है कि उसको गवाही देता हूँ जिसको देखा नहीं। यह अल्लाह तआला की तस्दीक़ कर रहे हैं जिसको उन्होंने नहीं देखा। उनका यह कहना है कि बग़ैर वुज़ू के नमाज़ अदा करता हूँ तो यह बग़ैर वुज़ू के हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर

सलात (दुरूद) पढ़ते हैं (और दुरूद का बग़ैर वुज़ू पढ़ना गुनाह नहीं)। उनका यह कहना है के उनके पास ज़मीन में वह है जो अल्लाह के लिए आसमान में नहीं है। वह इस तरह से कि हुज़ैफ़ा रज़ि० की बेटी भी है और बीवी भी, जबकि अल्लाह तआला के पास न बेटे हैं न बीवी तो हज़रत उ़मर रज़ि० ने फ़रमायाः ऐ अबुल हसन! (यह हज़रत अली रज़ि० की कुन्नियत है) तेरी ख़ूबी अल्लाह तआला के लिए है तुमने मेरी बहुत बड़ी फ़िक्र ख़त्म कर दी है। —आँसूओं का समन्दर, पेज 183

इब्ने असाकिर में है

जब हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ग़ज़बनाक हो जातीं तो आप सल्ल० उनकी नाक पकड़ लेते और फ़रमातेः ऐ अवैश यह दुआ करोः

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِیُّ مُحَمَّدْ اِغْفِرْ ذَنْبِیْ وَاَذْهِبْ غَیْظَ قَلْبِیْ وَاَجِرْنِیْ مِنْ مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ.

ऐ अल्लाह, ऐ मुहम्मद सल्ल० के परवरदिगार मेरे गुनाह माफ़ कर दे और मेरे दिल का गुस्सा दूर कर और मुझे गुमराहकुन फ़ितनों से बचा ले। —इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 336

नोटः— उ़लमा ने लिखा है कि बीवी अगर नाराज़ होती रहती है तो तर्तीब साबिक़ से यानी नाक पकड़के ऊपर लिखी दुआ सीखा दिया करें या पढ़ा दिया करें, उम्मीद है कि आपसी मुहब्बत होगी।

हज़रत उ़मर रज़ि० के इस्लाम लाने का ख़ास सबब

हजरत उ़मर रज़ि० अपने इस्लाम लाने से पहले का एक

वाक़िआ बयान करते हैं कि मैं आप सल्ल० के पास गया, देखा कि आप मस्जिदे हराम में पहुँच गये हैं। मैं भी गया और आप सल्ल० के पीछे खड़ा हो गया। आप सल्ल० ने सूरः हाक़्क़ा शुरू की जिसे सुनकर मुझे उसकी प्यारी निश्त अल्फ़ाज़ और बन्दिशे मज़ामीन और फ़साहत व बलाग़त पर ताज्जुब आने लगा आख़िर में मेरे दिल में ख़्याल आया कि क़ुरैश ठीक कहते है कि यह शख़्स शायर है, अभी मैं इसी ख़्याल में था कि आप सल्ल० ने यह आयतें तिलावत कीं कि "यह क़ौल रसूल-ए-करीम सल्ल० का है शायर का नहीं है, तुममें ईमान ही कम है" तो मैंने ख़्याल किया कि अच्छा शायर न सही काहिन (जादूगर) तो ज़रूर है। इधर आप सल्ल० की तिलावत में यह आयत आई "यह काहिन का क़ौल भी नहीं है, तुम ने नसीहत ही कम ली है"। अब आप पढ़ते चले गये यहाँ तक कि पूरी सूरत ख़त्म की। फ़रमाते हैं कि यह पहला मौक़ा था कि मेरे दिल में इस्लाम पूरी तरह घर कर गया और रौंगटे रौंगटे में इस्लाम की सच्चाई घुस गई। पस यह भी मिन् जुम्ला इन अस्बाब के जो हज़रत उ़मर रज़ि० के इस्लाम लाने का ज़रिए हुए एक ख़ास सबब है। —तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 425

अब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रज़ि० की सरगोशी वाली अजीब हदीस

एक हदीस में है कि हम तवाफ़ कर रहे थे कि एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० से पूछा कि तुमने हुज़ूर सल्ल० से सरगोशी के मुताल्लिक़ क्या सुना है? आपने फ़रमाया अल्लाह तआला ईमान वाले को अपने पास बुलाएगा यहाँ तक कि अपना बाज़ू उस पर रख देगा फिर उससे कहेगा बता तूने फ़्लां-फ़्लां

गुनाह किया, फ़्लां दिन फ़्लां गुनाह किया? वह ग़रीब इक़रार करता जाएगा। जब बहुत-से गुनाहों का इक़रार कर लेगा तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा सुन! दुनिया में भी मैंने तेरे इन ऐबों की पर्दापोशी की और अब आज के दिन मैं इन तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा देता हूँ, अब उसे उसकी नेकियों का सहीफ़ा उसके दाहिने हाथ में दे दिया जाएगा। —इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 382

जब लोग सोना-चाँदी जमा करने लगें नीचे दिए कलिमात ख़ूब कहा करो। हदीस

हज़रत शद्दाद इब्ने औस रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक हदीस बयान करता हूँ इसे याद रख लो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब लोग सोना-चाँदी जमा करने लगें तुम इन कलिमात को ख़ूब कहा करो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَالْعَزْمَةَ عَلَی الرُّشْدِ وَاَسْئَلُكَ شُكْرًا نِعْمَتِكَ وَاَسْأَلُكَ حُسْنَ عِبَادَتِكَ وَاَسْأَلُكَ قَلْبًا سَلِيْمًا وَاَسْئَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا وَاَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ.

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे काम की साबित-क़दमी और भलाइयों की पुख़्तगी और तेरी नेमतों का शुक्रिया और तेरी इबादतों की अच्छाई और सलामती वाला दिल और सच्ची ज़बान और तेरे इल्म में जो भलाई है वह और तेरे इल्म में जो बुराई है उससे पनाह और जिन बुराइयों को तू जानता है उनसे इस्तग़फ़ार तलब करता हूँ मैं जानता हूँ कि तू तमाम ग़ैब को जानने वाला है।

—इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 352

मौत के सिवा हर चीज़ से अमन में आ गये

मुस्नद बज़्ज़ार में हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जब तुम बिस्तर पर लेटो और सूरः फ़ातिहा और सूरः कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ लो तो मौत के सिवा हर चीज़ से अमन में आ गये। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 32

दम झाड़ा करके रक़म लेना जायज़ है

सही बुख़ारी शरीफ़ में फ़ज़ाइल क़ुरआन में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० से रिवायत है कि हम एक मर्तबा सफ़र में थे, एक जगह उतरे हुए थे, अचानक एक लौंडी आई और कहा कि यहाँ के क़बीले के सरदार को साँप ने काट लिया है हमारे आदमी यहाँ मौजूद नहीं। आपमें से कोई ऐसा है झाड़-फूंक कर दे, हममें से एक शख़्स उठकर उसके साथ हो लिया। हम नहीं जानते थे कि यह कुछ दम झाड़ा जानता भी है। उसने वहाँ जाकर कुछ पढ़कर दम किया ख़ुदा के फ़ज़्ल से वह बिल्कुल अच्छा हो गया। तीस बकरियाँ उसने दीं और हमारी मेहमानी के लिए दूध भी बहुत सारा भेजा। जब वह वापस आए तो हमने कहा कि क्या तुमको इसका इल्म याद था। उसने कहा मैंने तो सिर्फ़ सूरः फ़ातिहा पढ़कर दम किया है। हमने कहा इस आए हुए माल को न छेड़ो पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मस्ला पूछ लो। मदीना मुनव्वरा में आकर हमने रसूलुल्लाह सल्ल० से ज़िक्र किया, आप सल्ल० ने फ़रमाया उसे कैसे मालूम हो गया कि यह पढ़कर दम करने की सूरत है, उस माल के हिस्से कर दो मेरा भी एक हिस्सा लगाना। —मुस्लिम, बुख़ारी, अबू दाऊद, तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 30

शुक्र करने वाला फ़क़ीर कामयाब हो गया

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ۔

मुस्नद अहमद में रिवायत है कि एक साइल आप सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप सल्ल० ने एक खजूर दी। उस फ़क़ीर ने मुँह बिगाड़ा, नाराज़ हुआ और खजूर न ली, दूसरा फ़क़ीर आया उसने भी सवाल किया, आप सल्ल० ने वही खजूर उसको दे दी उसने क़बूल कर ली और बहुत शुक्र अदा किया अच्छे जुमले कहे। आप सल्ल० ने उसको मज़ीद 20 दिरहम दे दिए और उम्मे सल्मा रजियल्लाहु अन्हा के पास 40 दिरहम रखे थे वह भी दिलवा दिए। —इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 57

नोटः शुक्र करने से कामियाबी मिली नेमत भी बड़ी।

लौहे महफ़ूज़ पाँच सौ साल के रास्ते की चीज़ है

इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अल्लाह अज्ज़ व जल्ल के पास लौहे महफ़ूज़ है जो पाँच सौ साल के रास्ते की चीज़ है। सफ़ेद मोती की है, याक़ूत के दो पट्ठो के दर्मियान 63 बार अल्लाह तआला उस पर तवज्जोह फ़रमाता है। जो चाहता हैं मिटाता है जो चाहता है बरक़रार रखता है। उम्मुल किताब उसी के पास है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि रात की तीन साअतें (घड़ियाँ) बाक़ी रहने पर ज़िक्रे महफ़ूज़ खोला जाता है। पहली घड़ी में उस पर नज़र डाली जाती है जिसे उसके सिवा कोई और नहीं देखता, बस जो चाहता है मिटाता है, जो चाहता है बरक़रार रखता है।

—इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 51

रियाकारी वाले आमाल फैंक दिए जाएंगे

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है, क़ियामत के दिन इंसान के नेक आमाल के मुहर शुदा सहीफ़े खुदा के सामने पेश होंगे। जनाबे बारी अज़्ज़ व जल्ल फ़रमाएगा : इसे फैंक दो, इसे क़बूल करो, इसे क़बूल करो, इसे फैंक दो। उस वक़्त फ़रिश्ते अर्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह तबारक व तआला जहाँ तक हमारा इल्म है हम तो इस शख़्स के नेक आमाल ही जानते हैं। जवाब मिलेगा जिनको मैं फिकवा रहा हूँ यह वह आमाल हैं जिनमें सिर्फ़ मेरी ही रज़ामन्दी मतलूब न थी बल्कि इनमें रियाकारी थी आज मैं तो सिर्फ़ उन आमाल को क़बूल फ़रमाऊंगा जो सिर्फ़ मेरे ही लिए किए गए हों।

—बज़्ज़ार, इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 286

बड़ा नूर हासिल कर ले

हाफ़िज़ अबू बक्र बज़्ज़ार रह० अपनी किताब में लाए हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो शख़्स आयत مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَاءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖ اَحَدًا को रात के वक़्त पढ़ेगा अल्लाह तआला उसे इतना बड़ा नूर अता फ़रमाएगा जो अदन से मक्का शरीफ़ तक पहुँचे। (यह सूरः कहफ़ की आख़िरी आयत का आख़िरी हिस्सा है।)

—इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 286

ग़म मत कर। अगर आप मरीज़ हैं नीचे दिया मज़मून पढ़ लीजिए

इब्ने जरीर में हज़रत अली रज़ि० का फ़रमान है जब तुममें से

कोई शिफ़ा चाहे तो क़ुरआन करीम की किसी आयत को किसी सहीफ़े पर लिख ले और उसे बारिश के पानी से धो ले और अपनी बीवी के माल (महर) से उसकी रज़ामन्दी से पैसे लेकर शहद ख़रीद ले और उसे पी ले तो उसी में कई वजह से शिफ़ा आ जाएगी, ख़ुदाए तआला अज़्ज़ व जल्ल का फ़रमान है :

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ

यानी हमने क़ुरआन में वो नाज़िल फ़रमाया है जो शिफ़ा है और रहमत है मोमिनीन के लिए। एक दूसरी आयत में है : وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا हम आसमान से बा-बरकत पानी बरसाते हैं और फ़रमान है :

فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْئًا مَّرِيْئًا.

यानी अगर औरतें अपने माले-महर में से अपनी ख़ुशी से तुम्हें दे दें तो बेशक तुम उसे खाओ, पियो, सहता-बचता। शहद के बारे में फ़रमाने बारी तआला है : فِيْهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है। इब्ने माजा में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुब्ह को शहद चाट ले उसे कोई बड़ी बला नहीं पहुंचेगी।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 129

नोटः— तीन चीज़ें बरकती हैं।

1. बीवी का महर, क़ुरआन कहता है तुम इसे खाओ मज़े ले-लेकर। उ़लमा ने लिखा है कि कोई आदमी कारोबार करे बीवी का महर की रक़म थोड़ी-सी लगा दे उसे इन्शाअल्लाह नुक़सान न होगा, महर की रक़्म तरीफ़ैन के लिए ख़ैर व बरकत की चीज़ है। 2. बारिश का पानी, 3. शहद।

अल्लाह ने अपने हाथ से जन्नत अदन पैदा की और फिर बारी तआला ने उसकी तरफ़ देखकर फ़रमायाः ऐ जन्नत! कुछ बोल, वह बोली

मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने जन्नत अदन पैदा की और उसमें पेड़ वग़ैरह अपने हाथ से लगाये तो उसे देखकर फ़रमायाः कुछ बोल। उसने यही आयतें[1] तिलावत कीं जो क़ुरआन में नाज़िल हुई। अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं कि उसकी एक ईंट सोने की और एक ईंट चाँदी की है, फ़रिश्ते जब उसमें दाख़िल हुए कहने लगे वाह! वाह! यह तो बादशाहों की जगह है और रिवायत में है कि उसका गारा मुश्क का था और रिवायत में है कि उसमें वह वह चीज़ें हैं जो न किसी आँख ने देखीं और न किसी दिल में समाईं और रिवायत में है कि जन्नत ने जब इन आयतों की तिलावत की तो जनाब बारी तआला ने इर्शाद फ़रमाया मुझे अपनी बुज़ुर्गी और जलाली की क़सम! तुझमें बख़ील हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकता और हदीस में है कि उसकी एक ईंट सफ़ेद मोती की है और दूसरी सुर्ख़ याक़ूत की और तीसरी सब्ज़ ज़बरजद की, उसका गारा मुश्क का है और उसकी घास ज़ाफ़रान की है।

—इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 447

ग़म मत कर, अपने रब की रहमतों के मौक़ो को तलाश करते रहो

हज़रत मुहम्मद बिन मुसलिमा अन्सारी रज़ि० की मौत के बाद उनकी तलवार की म्यान में से एक पर्चा निकला जिसमें तहरीर था

कि तुम अपने रब की रहमतों के मौक़े तलाश करते रहो, बहुत मुम्किन है कि किसी ऐसे वक़्त तुम दुआ-ए-ख़ैर करो कि उस वक़्त रब की रहमत जोश में हो और तुम्हें वह सआदत मिल जाए जिसके बाद कभी भी हसरत व अफ़्सोस न करना पड़े।[1] मुस्नद अहमद में है कि क़ियामत के दिन मुतकब्बिर लोग च्यूंटियों की शक्ल में जमा किए जाएंगे, छोटी से छोटी चीज़ भी उनके ऊपर होगी उन्हें जहन्नम के जेलख़ाने में डाला जाएगा और भड़कती हुई सख़्त आग उनके सिरों पर शोले मारेगी उन्हें जहन्नमियों का लहू, पीप और पाख़ाना-पेशाब पिलाया जाएगा।

इब्ने अबी हातिम में है कि एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मुल्के रूम में काफ़िरों के हाथों मैं गिरफ़्तार हो गया था, एक दिन मैंने सुना कि हातिफ़े ग़ैब एक पहाड़ की चोटी से बा-आवाज़ बुलन्द कह रहा है ख़ुदाया! उस पर ताज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए तेरे सिवा दूसरे की ज़ात से उम्मीदें वाबस्ता रखता है, ख़ुदाया! उस पर भी ताज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए अपनी हाजतें दोसरों के पास ले जाता है फिर ज़रा ठहरकर एक पुरज़ोर आवाज़ और लगाई और कहा पूरा ताज्जुब उस पर है जो तुझे पहचानते हुए दूसरों की रज़ामन्दी हासिल करने के लिए वह काम करता है जिनसे तू नाराज़ हो जाये। यह सुनकर मैंने बुलन्द आवाज़ में पूछा कि तू कोई जिन्न है या इंसान? जवाब आया कि मैं इंसान हूँ, तू इन कामों से अपना ध्यान हटा ले जो तुझे फ़ायदा न दे और उन कामों में मश्गूल हो जा जो तेरे फ़ायदे के हैं।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 474

मुसीबत भी खुदा की तरफ़ से नेमत लाती है

यह मज़्मून ज़रूर पढ़िए और फिर दीन दुनिया में फैले इसकी कोशिश शुरू कर दें।

एक अरबी शेअर है:

قَدْ يُنْعِمُ اللّٰهُ بِالْبَلْوٰى وَاِنْ عَظُمَتْ وَيَبْتَلِي اللّٰهُ بَعْضَ الْقَوْمِ بِالنِّعَمِ

जिसका मतलब है कि कभी बज़ाहिर मुसीबत होती है लेकिन वह खुदा की तरफ़ से बहुत बड़ी नेमत होती है और कभी बज़ाहिर खुशहाली होती है लेकिन वह खुदा की तरफ़ से इस्तिदराज होता है। चुनांचे देखिए औलाद और मालदारी कभी शक़ावत तक इंसान को पहुँचा देता है, इशदि बारी है :

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا.

तर्जुमा :– सो उनके अमवाल और औलाद आपको ताज्जुब में न डालें, अल्लाह को सिर्फ़ यह मन्ज़ूर है कि उन (मज़कूरा) चीज़ों की वजह से दुनयवी ज़िन्दगी में (भी) उनको गिरफ़्तारे अज़ाब रखे। और बज़ाहिर कभी मुसीबत होती है लेकिन वह नेमत है चुनांचे इसकी बहुत-सी मिसाले हैं।

1. इब्नुल असीर ने अपनी बहुत-सी उ़म्दा-उ़म्दा किताबें जैसे जामेउल उसूल, अल्-निहाया इस वजह से लिखी कि वह अपाहिज थे।
2. इमाम सरख़सी ने अपनी मश्हूर किताब 'मब्सूत', पन्द्रह हिस्सों में लिखी क्योंकि वह कुंए में क़ैद कर दिए गये थे।
3. इब्ने अल्-क़ैयिम ने ज़ादुल-मआद, सफ़र की हालत में लिखी।
4. शैख़ अबुल अब्बास बिन उ़मर अल्-क़ुर्तबी ने सही मुस्लिम की शरह किश्ती में बैठकर लिखी है।

5. इब्ने तैमिया के अक्सर फ़तावा उन्होंने क़ैद की हालत में लिखे हैं।
6. मुहद्दिसीन ने लाखों अहादीस जमा कीं, इस वजह से कि वह फ़क़ीर और ग़रीब थे।
7. कई लोगों के वाक़िआत हैं कि उन्हें क़ैद किया गया और उसी क़ैद के दौरान सारा क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ कर लिया।

वह कौन-सा पेड़ है जो मुसलमान के जैसा है

सही बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० से मन्क़ूल है कि हम आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे। आप सल्ल० ने फ़रमाया मुझे बतलाओ कि वह कौन-सा पेड़ है जो मुसलमानों के जैसा है जिसके पत्ते झड़ते नहीं, न जाड़ों में, न गर्मियों में, जो अपना फल हर मौसम में लाता रहता है। अब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में आया कि कह दूँ कि वह पेड़ खजूर का है लेकिन मैंने देखा कि मज्लिस में हज़रत अबु बक्र रज़ि० है, हज़रत उ़मर रज़ि० हैं और वे ख़ामोश हैं तो मैं भी चुप रहा, आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः वह खजूर का पेड़ है, जब यहाँ से उठकर चले तो मैंने अपने वालिद (हज़रत उ़मर रज़ि०) से यह ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमायाः प्यारे बच्चे अगर तुम यह जवाब दे देते तो मुझे तो तमाम चीज़ों के मिल जाने से भी ज़्यादा महबूब था।

—इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 66

एक अनोखा इश्तिहार मगर इबरतअंगेज़

टिकट फ़्री, सीट यक़ीनी

अहलियत व शराइत : नाम : अब्दुल्लाह इब्ने आदम, उर्फ़ियत :

इंसान, क़ौमियत : मुसलमान, शिनाख़्त : मिट्टी, पता : रूए ज़मीन।

सफ़र की तफ़्सीलात :

रवानगी अज़ न फ़रोदगाह, दुनिया मन्ज़िल : राहे आख़िरत।

दौराने सफ़र :

कुछ लम्हें जिसमें चंद लम्हात के लिए दो मीटर ज़मीन के नीचे क़ियाम।

ज़रूरी हिदायात :

तमाम सफ़र करने वालों से दरख़्वास्त है कि वह उन लोगों को अपनी नज़र में रखें जो उनसे पहले आख़िरत की तरफ़ सफ़र कर गये हैं। इसी तरह हर लम्हा उनकी नज़र जहाज़ के पायलट, हज़रत मुलकुल मौत की तरफ़ रहनी चाहिए ज़्यादा तफ़्सीलात के लिए इन ज़रूरी हिदायात को बग़ौर पढ़ लें जो किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल में दी गई हैं। अगर इस सिलसिले में कुछ सवालात सामने हों। तो जवाब के लिए उ़लमा-ए-उम्मत से राब्ता करें, उड़ान के दौरान आक्सीजन की कमी की सूरत में आक्सीजन मास्क खुद बखुद आपके सामने गिर जाएगा, माफ़ कीजिए।

मास्क नहीं गिरेगा बल्कि सारे पर्दे निगाहों के सामने से हट जाएंगे और यक़ीनन फिर आप हर क़िस्म की आक्सीजन से बेनियाज़ जो जाएंगे।

ज़ादे राह :

हर मुसाफ़िर अपने साथ कुछ मीटर सफ़द लट्ठा और थोड़ी-सी रूई ले सकता है लेकिन वह सामान जो तराज़ू में पूरा उतरेगा वह नेक आमाल, सद्क़ा-ए- जारिया, सालेह औलाद और वह इल्म होगा जिससे उसके बाद वाले नफ़ा हासिल कर सकेंगे, उससे ज़्यादा सामाने सफ़र लाने की कोशिश की गई तो उसके ज़िम्मेदार

आप होंगे। तमाम मुसाफ़िरीन से दरख़्वास्त है कि वह उड़ान के लिए हर वक़्त तैयार रहें। उड़ान के बारे में ज़्यादा मालूमात के लिए फ़ौरी तौर पर अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूल से राबिता क़ाइम किया जाए, इस सिलसिले में रोज़ाना पाँच वक़्त मस्जिद की हाज़िरी फ़ायदेमन्द होगी। आपकी सहूलत के लिए दोबारा अर्ज़ है कि आपकी सीट रिज़र्व हो चुकी है और इस सिलसिले में किसी दोबारा पूछताछ की ज़रूरत नहीं है, उम्मीद है कि आप सफ़र के लिए तैयार होंगे, हम आपको इस मुबारक सफ़र पर ख़ुश आम्दीद कहते हैं, हमारी नेक दुआएं आपके साथ हैं।

ख़ुदा आपका हामी व नासिर है।

तीन ख़स्लतें मेरी उम्मत में रह जाएंगी

तबरानी में है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया : तीन ख़स्लतें मेरी उम्मत में रह जाएंगीः

1. फ़ाल लेना।
2. हसद करना।
3. बद्गुमानी करना।

एक शख़्स ने पूछा हुज़ूर सल्ल० फिर इनका हल किया है? आपने फ़रमायाः जब हसद करे तो इस्तिग़्फ़ार कर ले। जब गुमान पैदा हो तो उसे छोड़ दे और यक़ीन न कर और जब शगुन ले ख़्वाह नेक निकले ख़्वाह बद अपने काम से न रुक, उसे पूरा कर।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 150

मौत से कोई नहीं बच सकता

मुअजम कबीर तबरानी में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम फ़रमाते हैं उस शख़्स की मिसाल जो मौत से भागता है उस लोमड़ी जैसी है जिससे ज़मीन अपना क़र्ज़ा तलब करने लगे और यह उससे भागने लगी, भागते-भागते जब थक गई और बिल्कुल चकनाचूर हो गई तो अपने भट में जा घुसी, ज़मीन चूंकि वहाँ भी मौजूद थी उसने लोमड़ी से कहा, ला मेरा कर्ज़ा। तो यह वहाँ से फिर भागी, साँस फूला हुआ था हाल बुरा हो रहा था, यूँ ही भागते-भागते बेदम होकर मर गई। अल्-गर्ज़ जिस तरह उस लोमड़ी को ज़मीन से भागने की राहें बन्द थीं उसी तरह इंसान को मौत से बचने के रास्ते बन्द हैं। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 165

मेरी उम्मत में चार काम जाहिलिय्यत के हैं

अबू याअला में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में चार काम जाहिलिय्यत के हैं जिन्हें वह न छोड़ेगी :

1. हस्ब व नस्ब पर फ़ख़्र करना।
2. इंसान को उसके नस्ब का ताना देना।
3. सितारों से बारिश तलब करना।
4. मैयत पर नौहा करना। और फ़रमाया नौहा करने वाली औरत अगर बे तौबा किए मर जाए तो उसे क़ियामत के दिन गंधक का पैराहन पहनाया जाएगा और खुजली की चादर उढ़ाई जाएगी। मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नौहा करने वालियों और नौहा को कान लगाकर सुनने वालियों पर लानत फ़रमाई है। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 5, पेज 343

हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर 24000 मर्तबा वह्य नाज़िल हुई, सबसे ज़्यादा वह्य हुज़ूर सल्ल० पर नाज़िल हुई

उल्मा और मुहद्दिसीन ने लिखा हे कि हुज़ूर पर 23 साला ज़मान-ए-नुबुव्वत में चौबीस हज़ार मर्तबा वह्य नाज़िल हुई, कुछ मर्तबा एक दिन में दस-दस मर्तबा वह्य नाज़िल होती थी, और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर कुल दस मर्तबा, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पर 50 मर्तबा, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर 48 मर्तबा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर 10 मर्तबा वह्य नाज़िल हुई।

—तज़्किरा ख़ातिमुल अम्बिया, पेज 94

नीचे दी गई चीज़ों में अल्लाह ने शिफ़ा रखी है

1. क़ुरआन में शिफ़ा है।
2. सद्के में शिफ़ा है।
3. ज़मज़म में शिफ़ा है।
4. शहद में शिफ़ा है।
5. सिल-ए-रहमी में शिफ़ा है।
6. सूरः फ़ातिहा में शिफ़ा है।
7. कलौंजी में शिफ़ा है।
8. सफ़र करने में शिफ़ा है।

ख़ूबसूरत लड़कों के साथ उठना बैठना फ़ितने की वजह है

हम-जिन्सी से बचने के लिए वह तमाम दरवाज़े बन्द करना

ज़रूरी है जो इस मन्हूस अमल (लवातत) तक पहुँचाते हैं, बे-रेश नौ-उम्र बच्चों के साथ इख़्तिलात से बचने के लिए हर मुम्किन कोशिश की जाये, कुछ ताबिईन का क़ौल है कि दीनदार इबादत गुज़ार नौजवानों के लिए फाड़ खाने वाले दरिन्दे से भी बड़ा दुश्मन और नुक़्सानदेह, वह अम्रद लड़का है जो उसके पास आता जाता है। हसन बिन ज़कवान कहते हैं मालदारों के बच्चों के साथ ज़्यादा उठा बैठा न करो, इसलिए कि उनकी सूरतें औरतों की तरह होती हैं, उनका फ़ितना कुंवारी औरतों से ज़्यादा संगीन है। (शौबुल ईमान, हिस्सा 4, पेज 358) क्योंकि औरतें तो किसी सूरत में हलाल हो सकती हैं लेकिन लड़कों में हिल्लत की कोई सूरत ही नहीं है।

अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत सुफ़ियान रह० हम्माम में दाख़िल हुए तो वहाँ एक ख़ूबसूरत लड़का भी आ गया तो आप ने फ़रमाया कि इसे बाहर निकालो क्योंकि औरत के साथ तो एक शैतान होता है और लड़कों के साथ तो दस से ज़्यादा शैतान होते हैं। --शौबुल ईमान, हिस्सा 4, पेज 360

इसी वजह से नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म है कि जब बच्चे समझदार हो जाएं तो उन सबके बिस्तर अलग कर देने चाहिए ताकि शुरूआत ही से वह बुरी आदतो से महफ़ूज़ हो जाएं। और बच्चों पर नज़र रखनी चाहिए कि वह ज़्यादा वक़्त ख़ासकर ख़ाली वक़्त में बड़े लड़कों के साथ न गुज़ारें। अगर कई बच्चे एक कमरे में रहते हों तो हर एक का बिस्तर और लिहाफ़ अलग होना चाहिए।

इन तमाम तफ़्सीलात से मालूम हो गया कि सिर्फ़ अपनी मन्कूहा बीवियों और मम्लूका बांदियों से ही शहवत पूरी करने की इजाज़त है। इसके अलावा क़ज़ा शहवत का कोई भी तरीक़ा

शरीअत में हरगिज़ जाइज़ नहीं है। और पर्दे वगैरह के, या अजनबी औरतों मर्दों से इख़्तिलात की मुमानिअत के जो भी अहकाम हैं उनका मक़्सद सिर्फ़ यही है कि समाज से ग़लत तरीक़े पर क़ज़ा-ए- शहवत का रिवाज ख़त्म हो। जो शख़्स इन बातों को सामने रखकर अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त कर लेगा और अपनी जवानी को इन फ़ुवाहिश से बचा लेगा तो अल्लाह तबारक व तआला उसे इसका बदला जन्नत की सूरत में अता फ़रमाएगा। इन्शा अल्लाह।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का कफ़न

हज़रत सहल बिन सअ़्द फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा एक औरत आंहज़रत सल्ल० की ख़िदमत में एक चादर लेकर हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! यह चादर मैंने अपने हाथ से बुनी है और इसे मैं आप सल्ल० की ख़िदमत में लाई हूँ ताकि आप इसे पहन लें। आं हज़रत सल्ल० ने बहुत शौक़ से वह चादर क़बूल फ़रमा ली। फिर उसी चादर को इज़ार की जगह पहनकर भीड़ में तशरीफ़ लाए। उसी वक़्त एक सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने दरख़्वास्त की कि या हज़रत! यह चादर मुझे इनायत फ़रमा दें, यह तो बहुत उम्दा है। आं हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया बहुत अच्छा, फिर कुछ देर तशरीफ़ रखने के बाद आप सल्ल० अन्दर तशरीफ़ ले गये और दूसरी इज़ार बदलकर वह चादर सवाल करने वाले को भिजवा दी, यह माजिरा देखकर सहाबा किराम रज़ि० ने उन सहाबी पर नकीर की कि जब तुम्हें मालूम था कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी मांगने वाले को रद्द नहीं फ़रमाते तो तुमने यह चादर मांगकर अच्छा नहीं किया।

उन्होंने जवाब दिया कि "मैंने तो अपने कफ़न में इस्तेमाल करने के लिए यह दरख़्वास्त पेश की थी"। हज़रत सहल रज़ि० फ़रमाते हैं कि वाक़ई ऐसा ही हुआ जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का इन्तिक़ाल हुआ तो आप रज़ि० को उसी चादर में कफ़न दिया गया।

—बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 170, 381, हिस्सा 2, 864, 892, मकारिमुल अख़्लाक़, पेज 245

फ़ोटोग्राफ़ी, विडीयोग्राफ़ी और टेलीविज़न जैसे कामों पर उजूरत लेना जाइज़ नहीं है

क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है :

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ۔

और आपस में मदद करो नेक काम पर और परहेज़गारी पर और मदद न करो गुनाह और ज़ुल्म पर। और किसी ऐसे तरीक़े पर पैसा कमाना मना है जिसमें किसी गुनाह पर मदद लाज़िम आती हो। आजकल बहुत-से ऐसे कमाई के ज़रिये हैं जैसे फ़ोटोग्राफ़ी, विडियोग्राफ़ी, टेलीविज़न की मरम्मत और ख़रीद व फ़रोख़्त वग़ैरह का करोबार। इसी तरह बाल बनाने वालों का अंग्रेज़ी बाल और दाढ़ियाँ मूंढ़कर पैसा कमाना, यह सब सूरतें आमदनी को मुश्तबा बना देती हैं। अल्लाह तआला से शर्म व हया का तक़ाज़ा यह है कि मुसलमान इन नाजाइज़ आमाल को छोड़कर अपने पेट की हक़ीक़ी हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करे।

मियाँ-बीवी एक दूसरे के सत्र को न देखें

यह मज़मून ज़रूर पढ़ें और निसियान के मर्ज़ से बचाव करें।

इस्लामी तालीम यह है कि ज़ौजैन भी आपस में बिलकुल बेशर्म

न हो जाया करें, बल्कि ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करें कि सत्र का ख़्याल रखें, चुनांचे एक मुरसल रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० रसूल अकरम सल्ल० का यह मुबारक इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं:

إِذَا أَتَى أَحَدُكُمْ أَهْلَهُ فَلْيَسْتَتِرْ وَلَا يَتَجَرَّدَانِ تَجَرُّدَ الْعِيرَيْنِ.

जब तुममें से कोई शख़्स अपनी बीवी के पास जाए तो कोशिश करे कि सत्रपोशी करे और जानवरों की तरह बिल्कुल नंगे न हो जाया करें। मालूम हुआ कि हया का तक़ाज़ा यह है कि मियाँ-बीवी भी एक दूसरे के सत्र को न देखें। सैय्यदना आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि पूरी ज़िन्दगी न मैंने आंहज़रत सल्ल० का सत्र देखा, न आप सल्ल० ने मेरा देखा। इस बात का ख़ास लिहाज़ रखकर शर्म व हया के तक़ाज़ों पर अमल पैरा होंगे तो हमारी औलाद भी इन्ही सिफ़ात व ख़साइल की हामिल होगी। और अगर हम शर्म व हया का ख़्याल न रखेंगे तो औलाद में भी इसी तरह के ख़राब जरासीम पैदा होंगे। आज टेलीविज़न के पर्दे पर नंगे और इंसानियत से गिरे हुए नज़ारे देखकर हमारे समाज में उनकी नक़्ल उतारने की कोशिश की जाती है और इसका बिल्कुल लिहाज़ नहीं रखा जाता कि हमारा रब और हमारा ख़ालिक़ व मालिक तन्हाइयों में भी हमारे आमाल से पूरी तरह वाक़िफ़ है, वह इस बद्तरीन हालत में हमें देखेगा तो उसे किस क़द्र नागवार गुज़रेगा। इसलिए अल्लाह से शर्म करनी ज़रूरी है। यह शर्म का हिस्सा ही हमें ऐसी बुरी बातों से बचाएगा।

इसके अलावा सत्रपोशी में लापरवाही का एक और नुक़सान हज़रात फ़ुक़्हा ने लिखा है कि इसकी वजह से आदमी पर भूल

और निसियान का ग़लबा हो जाता है और ज़रूरी बातें भी उसे याद नहीं रहतीं। अल्लामा शामी रह० फ़रमाते हैं कि भूल का मर्ज़ पैदा करने वाली चीज़ों में से यह भी है कि आदमी अपनी शर्मगाह से खेल करे और उसकी तरफ़ देखे।—शामी हिस्सा 1, पेज 225, किताबुत्तहारा

बहरहाल नज़र से सादिर होने वाली नामुनासिब बातों में से अपने सत्र पर बिला ज़रूरत नज़र करना भी है जिससे नज़र को महफ़ूज़ रखना चाहिए।

चुग़लख़ोरी का नुक़्सान

चुग़लख़ोरी का नुक़्सान बयान करते हुए इमाम ग़ज़ाली रह० ने यह वाक़िआ नक़ल किया है कि एक शख़्स बाज़ार में ग़ुलाम ख़रीदने गया। एक ग़ुलाम पसन्द आ गया। बेचने वाले ने कहा कि इस ग़ुलाम में कोई ऐब नहीं है बस यह है कि इसमें चुग़ली की आदत है। ख़रीदार राज़ी हो गया और ग़ुलाम ख़रीद कर घर ले आया। अभी कुछ ही दिन हुए थे कि ग़ुलाम की चुग़लख़ोरी की आदत ने यह गुल खिलाया कि उसने उस शख़्स की बीवी से तन्हाई में जाकर कहा कि तुम्हारा शौहर तुम्हें पसन्द नहीं करता और अब उसका इरादा बांदी रखने का है। लिहाज़ा रात को जब वह सोने आये तो उस्तरे से उसका कुछ बाल काटकर मुझे दे दो ताकि मैं उसपर जादू कराकर तुम दोनों में दोबारा मुहब्बत का इन्तिज़ाम कर सकूँ। बीवी इस पर तैयार हो गई और उसने उस्तरे का इन्तिज़ाम कर दिया। इधर ग़ुलाम ने अपने आक़ा से जाकर यूँ बात बनाई कि तुम्हारी बीवी ने किसी ग़ैर मर्द से ताल्लुक़ात पैदा कर लिए हैं और अब वह तुम्हें रास्ते से हटा देना चाहती है, इसलिए होशियार रहना। रात को जब वह बीवी के पास गया तो

देखा कि बीवी उस्तरा ला रही है। वह समझ गया कि गुलाम ने जो ख़बर दी थी वह सच्ची थी। इसलिए इससे पहले कि बीवी कुछ कहती उसने उसी उस्तरे से बीवी का काम तमाम कर दिया। जब बीवी के घर वालों को इस वाक़िए का इल्म हुआ तो उन्होंने आकर शौहर को क़त्ल कर दिया। इस तरह अच्छे ख़ासे ख़ानदानों में ख़ूं-रेज़ी की नौबत आ गई। —इहयाउल-उ़लूम, पेज़ 903

अल्-ग़रज़ ग़ीबत और चुगली ऐसी बद्तरीन बीमारियाँ हैं जिससे समाज फ़साद की आमाजगाह बन जाता है।

अज़ाबे क़ब्र का एक अजीब वाक़िआ

तिजारत में लोगों को धोका मत दो

अब्दुल हमीद इब्ने महमूद मग़ौली कहते हैं कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि० की मज्लिस में हाज़िर था, कुछ लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हम हज के इरादे से निकले हैं, जब हम ज़ातुल सिफ़ाह (एक जगह का नाम) पहुंचे तो हमारे एक साथी का इन्तिक़ाल हो गया, चुनांचे हमने उसकी तजूहीज़ व तक्फ़ीन की, फिर क़ब्र खोदने का इरादा किया। जब हम क़ब्र खोद चुके तो हमने देखा कि एक बड़े काले नाग ने पूरी क़ब्र को घेर रखा है, उसके बाद हमने दूसरी जगह क़ब्र खोदी तो वहाँ भी वही साँप था, अब हम मय्यत को वैसे ही छोड़कर आपकी ख़िदमत में आए हैं कि अब हम किया करें? हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया यह साँप उसका वह बद्अमल है जिसका वह आदी था, जाओ उसे उसी क़ब्र में दफ़न कर दो। अल्लाह की क़सम! अगर तुम उसके लिए पूरी ज़मीन खोद डालोगे फिर भी वह साँप उसकी क़ब्र में पाओगे।

बहरहाल उसे इसी तरह दफ़न कर दिया गया। सफ़र से वापसी पर लोगों ने उसकी बीवी से उस शख़्स का अमल पूछा तो उसने बताया कि उसका यह मामूल था कि वह ग़ल्ला बेचता था और रोज़ाना बोरी में से घर का ख़र्च निकाल कर उसमें उसी मिक़्दार में भूसा मिला देता था।

(गोया कि धोके से भुस को अस्ल ग़ल्ले की क़ीमत पर बेचता था।) —बैहक़ी फ़ी शौबुल ईमान, बहवाला शरह अस्-सुदूर, पेज 239

सबसे पहले हश्र के मैदान में लिबास हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पहनाया जाएगा

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत है वह फ़रमाते हैं :

قام فينا النبى ﷺ يخطب فقال: انكم محشرون حفاة عفاة غرلا كما بد انا اول خلق نعيده الاية وان اول الخلائق يكسى يوم القيامة ابراهيم الخليل...الخ

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे दर्मियान तक़रीर करने के लिए खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया कि तुम सबको नंगे पैर, नंगे बदन, ख़त्ना के बग़ैर जमा किया जाएगा। (इर्शादे ख़ुदावन्दी है) जैसे हमने पहली मर्तबा बनाया उसी तरह हम दोबार पैदा करेंगे और मख़्लूक़ात में जिसे क़ियामत के दिन सबसे पहले लिबास पहनाया जाएगा वह हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं।

एक और रिवायत में है कि क़ियामत में सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अलैहि० को दो क़िब्ती कपड़ों का लिबास पहनाया जाएगा। फिर आं हज़रत सल्ल० को अर्श के दाएं जानिब धारीदार जोड़ा ज़ेबे तन कराया जाएगा। अब सवाल यह है कि यह एज़ाज सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अलैहि० को अता किए जाने की

वजह किया है? तो इस सिलसिले में उ़लमा के बहुत से अक़्वाल हैं।

1. अल्लामा क़ुर्तबी ने फ़रमाया कि वजह यह है कि जब आपको नमरूद ने आग में डालने का हुक्म दिया तो आपको अल्लाह के रास्ते में बेलिबास किया गया, इसकी जज़ा के तौर पर सबसे पहले आपकी लिबास पोशी कराई जाएगी।
2. अल्लामा हलीमी रह० ने फ़रमाया कि चूंकि रू-ए-ज़मीन पर हज़रत इब्राहीम अलैहि० से ज़्यादा ख़ौफ़ करने वाला कोई न था इसलिए आपको लिबास पहनाने में जल्दी की जाएगी ताकि आपका दिल मुतमइन हो जाए।
3. और कुछ आसार से यह मालूम होता है कि उस दिन लोगों पर फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ यह मामला किया जाएगा।

और इस एज़ाज़ी मामले से यह लाज़िम नहीं आता कि हज़रत इब्राहीम अलैहि० को हमारे आक़ा जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी मुतलक फ़ज़ीलत हासिल हो, इसलिए कि आं हज़रत सल्ल० को जो जोड़ा पहनाया जाएगा वह हज़रत इब्राहीम अलैहि० के जोड़े से शानदार होगा, तो अगरचे उलूवियत न हो लेकिन उसकी उ़म्दगी आप सल्ल० के मक़ाम व मर्तबे का पता देती है। —फ़त्हुल बारी, हिस्सा 14, पेज 468

फ़क़ीर दीनदार को हौज़े कौसर पर सबसे पहले पानी पिलाया जाएगा

वैसे तो हर उम्मती इन्शा अल्लाह हौज़े कौसर से सैराब होगा लेकिन कुछ ख़ुश नसीब और सआदत-मन्द हज़रात ऐसे होंगे

जिनको सबसे पहले सैराब होने का एज़ाज़ मिलेगा, उनकी सिफ़ात बयान करते हुए आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

اَوَّلُ النَّاسِ وَرُوْدًا عَلَيْهِ فُقَرَآءُ الْمُهَاجِرِيْنَ الشُّعْثُ رُؤُوْسًا الدُّنُسُ ثِيَابًا الَّذِيْنَ لَا يَنْكِحُوْنَ الْمُتَنَعِّمَاتِ وَلَا يُفْتَحُ لَهُمُ الدَّارُ.

सबसे पहले हौज़े कौसर पर आने वाले मुहाजिर फ़ुक़रा हज़रात होंगे। (दुनिया में) परागन्दा बाल वाले और मैले-कुचैले कपड़े वाले होंगे, जो नाज़ व नअ़म में रहने वाली औरतों से निकाह नहीं करते और घर के दरवाज़े उनके लिए खोले नहीं जाते (उनकी दुनयवी बे-सरोसामानी की वजह से) यानी उनकी बेकसी देखकर कोई नाज़ व नअ़म में पलने वाली औरत उनसे निकाह करने पर तैयार न होगी, और अगर वह किसी के दरवाज़े पर जाएंगे तो उनके लिए लोग दरवाज़े खोलना भी पसन्द न करेंगे, दुनिया में तो उनके यह मस्कनत का हाल होगा और आख़िरत में उनका वह एज़ाज़ व इकराम होगा कि सबसे पहले हौज़े कौसर पर बुलाए जाएंगे। ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ. यह आजिज़ी और मस्कनत क़ुर्बे ख़ुदावन्दी का ज़रिया है।

—तिर्मिज़ी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 71

उम्मत के बद्तरीन लोग

शौक़ीन मिज़ाज और फ़ैशन के दिलदादह लोग अल्लाह की नज़र में पसन्दीदा नहीं हैं, नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे लोगों को उम्मत के बद्तरीन लोगों में शुमार किया है। इर्शादे नब्वी है :

شِرَارُ اُمَّتِي الَّذِيْنَ وُلِدُوْا فِي النَّعِيْمِ وَغُذُوْا بِهِ هِمَّتُهُمْ اَلْوَانُ الطَّعَامِ وَاَلْوَانُ

اَلْبَيَانِ يَتَشَدَّقُوْنَ فِى الْكَلَامِ

मेरी उम्मत के बद्तरीन लोग वे हैं जो नाज़ व नअ़म में पैदा हुए और उसी में पले और बढ़े, जिनको हर वक़्त बस अच्छे और अनवाअ़ व अक़्साम के खानों और तरह-तरह के लिबास पहनने की फ़िक्र लगी रहती हो और जो (तकब्बुर की वजह से) मिठार मिठार कर बातचीत करते हैं। सैय्यदना उ़मर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ि० का इर्शाद है कि तुम (ज़ेब व ज़ीनत के लिए) बार-बार ग़ुसलख़ानों के चक्कर लगाने और बालों की बार-बार सफ़ाई से बचते रहो और उ़म्दा उ़म्दा क़ालीनों के इस्तेमाल से भी बचो, इसलिए कि अल्लाह के ख़ास बन्दे ऐश व इश्रत के दिलदादह नहीं होते।

—किताबुज़्ज़ुहद, पेज 263

दुनिया में सबसे बड़ी दौलत सुकून और आफ़ियत है

दुनिया में रहकर दुनिया में मदहोश न रहना, इंसान के लिए सबसे बड़ा सुकून का ज़रिया है, ऐसा शख़्स ज़ाहिरी तौर पर कितना ही ख़स्ताहाल क्यों न हो मगर उसे अन्दरूनी तौर पर वह क़ल्बी इतमीनान नसीब होता है जो बड़े-बड़े सरमायादारों को भी हासिल नहीं होता, इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

اَلزُّهْدُ فِى الدُّنْيَا يُرِيْحُ الْقَلْبَ وَالْجَسَدَ.

दुनिया से बेरग़बती दिल और बदन दोनों के लिए राहतबख़्श है। दुनिया में सबसे बड़ी दौलत सुकून और आफ़ियत है, अगर सुकून न हो तो सब दौलतें बेकार हैं, और यह सुकून जभी मिल

सकता है जब हम दुनिया से सिर्फ़ बक़द्र ज़रूरत और बराए ज़रूरत ताल्लुक़ रखें, और अल्लाह तआला की नेमतों पर शुक्र गुज़ार रहकर उसकी रिज़ा पर राज़ी रहें। हज़रत लुक़्मान रज़ि० ने इर्शाद फ़रमायाः दीन पर सबसे ज़्यादा मददगार सिफ़त दुनिया से बेरग़बती है क्योंकि जो शख़्स दुनिया से बे-रग़बत होता है वह सिर्फ़ रज़ा-ए-खुदावन्दी के लिए अमल करता है और जो शख़्स इख़्लास से अमल करे उसको अल्लाह तआला अज्र व सवाब से सरफ़राज़ फ़रमाता है। —किताबुज़्ज़ुहूद, पेज 274

इस हदीस को भीड़ के सामने बयान करके आप सल्ल० भी हंसे

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि० से मरवी है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में सबसे आख़िर में दाख़िल होने वाले शख़्स का हाल यह होगा कि वह गिरता पड़ता चल रहा होगा और जहन्नम की आग की लपटें उसे झुलसा रही होंगी, बिल्-आख़िर जब वह जहन्नम से बमुश्किल निकल पाएगा तो जहन्नम को देखकर बेइख़्तियार कहेगाः वह ज़ात बड़ी बा-बरकत है जिसने मुझे, तुझसे (जहन्नम) नजात अता फ़रमाई और बेशक अल्लाह ने मुझे वह नेमत बख़्शी है जो अव्वलीन व आख़िरीन में से किसी को भी अता नहीं की गई, फिर उसके सामने एक पेड़ ज़ाहिर होगा तो वह अर्ज़ करेगा कि ऐ रब्बे करीम! आप मुझे उस पेड़ के क़रीब फ़रमा दीजिए ताकि मैं उसके साए में बैठू और उसके पानी से प्यास बुझाऊँ। इस पर अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि ऐ आदमी अगर मैं तेरी मुराद पूरी कर दूँ तो तू कुछ और मांगेगा? वह शख़्स कहेगा कि नहीं परवरदिगार!

और ज़्यादा सवाल न करने का पक्का वादा करेगा, चुनांचे बारी तआला उसकी माज़रत को क़बूल फ़रमाएगा क्योंकि वह उसकी बेसब्र तबीअत से वाक़िफ़ है और उसे उसके मतलूबा पेड़ के नीच पहुंचा देगा। वह शख़्स उसके पास जाकर उसके साए में बैठेगा और वहाँ मौजूद पानी पियेगा। फिर उसके सामने दूसरा पेड़ लाया जाएगा जो पहले पेड़ से और अच्छा होगा। तो फिर वह शख़्स अल्लाह तआला से उसके क़रीब जाने की दरख़्वास्त करेगा, अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि ऐ आदमी क्या तूने कुछ और सवाल न करने का अहद नहीं किया था और अगर मैं तेरी मुराद पूरी कर दूँ तो फिर तू कुछ और सवाल करेगा? चुनांचे फिर वह शख़्स सवाल न करने का वादा करेगा और अल्लाह तआला उसकी बेसब्री को जानते हुए चश्म- पोशी फ़रमाकर उसे उस पेड़ के क़रीब पहुंचा देगा और वह उसके साए और पानी से फ़ायदा उठाएगा।

फिर एक तीसरा पेड़ जन्नत के दरवाज़े के बिल्कुल क़रीब पैदा होगा जो पहले दोनों पेड़ों से ज़्यादा ख़ूबसूरत होगा तो यह शख़्स उसके क़रीब जाने की भी दरख़्वास्त करेगा, बिल्-आख़िर जब उसे उस पेड़ के क़रीब पहुँचा दिया जाएगा तो उसे वहाँ अहले जन्नत की आवाज़ें सुनाई देंगी तो वह दरख़्वास्त करेगा कि ऐ रब्बे करीम! अब बस मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दीजिए। तो अल्लाह तबारक व तआला उस शख़्स से मुख़ातिब होकर फ़रमाएगा कि आख़िर तेरा सवाल करना कब ख़तम होगा? क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं है कि मैं तुझे दुनिया की दोगनी जन्नत अता कर दूँ? तो वह शख़्स हैरतज़दा होकर कहेगा कि ऐ रब्बे करीम! आप रब्बुल आलमीन होकर मुझसे मज़ाक़ करते हैं? इतनी

रिवायत बयान करके इस हदीस के बयान करने वाले अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि० हंसने लगे और हाज़िरीन से फ़रमाया कि मुझसे नहीं पूछते कि मैं क्यों हँस रहा हूँ? चुनांचे हाज़िरीन ने यही सवाल आपसे किया तो आपने फ़रमाया कि इसी तरह इस रिवायत को बयान करके आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी तबस्सुम फ़रमाया था और जब सहाबा ने आप सल्ल० से इसकी वजह पूछी तो आप सल्ल० ने फ़रमाया था कि मैं रब्बुल आलमीन के हंसने की वजह से हँस रहा हूँ। क्योंकि जब वह बन्दा यह अर्ज़ करेगा कि इलाहुल आलमीन आप रब्बुल आलमीन होकर मुझसे मज़ाक़ कर रहे हैं तो रब्बुल आलमीन फ़रमाएगा कि मैं तुझसे मज़ाक नहीं कर रहा हूँ बल्कि मैं जिस बात, चीज़ को चाहूँ उसको पूरा करने पर क़ादिर हूँ (मुस्लिम शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 105) अल्लाह तआला के हँसने का मतलब उसका राज़ी और खुश होना है।

न खुदा ही मिला न विसाले सनम

मिस्र में एक शख़्स मस्जिद के बराबर रहता था। पाबन्दी से अज़ान देता और जमाअत में शिरकत करता, चेहरे पर इबादत और इताअत की रौनक थी, इत्तिफ़ाक़ से जब एक दिन अज़ान देने के लिए मस्जिद के मीनार पर चढ़ा तो क़रीब में एक ईसाई शख़्स की ख़ूबसूरत लड़की पर नज़र पड़ी जिसे देखकर वह उस पर दिल व जान से फ़रेफ़्ता हो गया और अज़ान छोड़कर वहीं से सीधे उस मकान में पहुँचा, लड़की ने उसे देखकर पूछा क्या बात है? मेरे घर में क्यों आया? उसने जवाब दिया मैं तुझे अपना बनाने आया हूँ इसलिए कि तेरे हुस्न व जमाल ने मेरी अक़्ल को माऊफ़ कर दिया है। लड़की ने जवाब दिया मैं कोई तोहमत वाला

काम करना नहीं चाहती हूँ, तो उसने पेशकश की कि मैं तुझ से निकाह करूंगा। लड़की ने कहा कि तू मुसलमान और मैं ईसाई हूँ, मेरा बाप इस रिश्ते पर तैयार न होगा तो उस शख़्स ने कहा मैं खुद ईसाई बन जाता हूँ चुनाँचे उसने सिर्फ़ उस लड़की से निकाह की ख़ातिर ईसवी मज़हब क़बूल कर लिया (نعوذ بالله من ذالك) लेकिन अभी वह दिन भी पूरा नहीं हुआ था कि यह शख़्स उस घर में रहते हुए किसी काम के लिए छत पर चढ़ा और किसी तरह से वहाँ से गिर पड़ा जिससे उसकी मौत हो गई। यानी दीन भी गया और लड़की भी हाथ न आई। —अत्तज़्किरा, पेज 43

सबसे ज़्यादा अज़मत वाला घूँट

एक रिवायत में आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ قَادِرٌ عَلٰى أَنْ يُنْفِذَهُ دَعَاهُ اللّٰهُ عَلٰى رُؤُوْسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتّٰى يُخَيِّرَهُ مِنْ اَىِّ حُوْرٍ شَاءَ.

जो शख़्स बावजूद गुस्से के तक़ाज़े पर अमल करने की क़ुदरत के, गुस्से को पी जाए तो अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने बुलाएगा और उसे इख़्तियार देगा कि जन्नत की जिस हूर को चाहे पसन्द कर ले।—शौबुल ईमान, हिस्सा 6, पेज 313

और एक हदीस में जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया

مَا جَرَعَ عَبْدٌ جَرْعَةً اَعْظَمَ اَجْرًا عِنْدَ اللّٰهِ مِنْ جَرْعَةِ غَيْظٍ كَظَمَهَا اِبْتِغَاءَ وَجْهِ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ.

अल्लाह के नज़दीक अज्र व सवाब के एतिबार से सबसे ज़्यादा अज़मत वाला घूँट वह ग़ुस्से का घूँट है जिसे सिर्फ़ रज़ा-ए-ख़ुदावन्दी की नियत से इंसान पी जाए।

—शौबुल ईमान, हिस्सा 6, पेज 314

हक़ीक़त यह हे कि ग़ुस्से को पी जाना और मुख़ातब को माफ़ कर देना आला दर्जे का कमाल है। हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह के नज़दीक इन्तिहाई पसन्दीदा आमाल में से तीन ये आमाल हैं :

1. क़ुदरत के बावजूद माफ़ कर देना।
2. तेज़ी और शिद्दत के वक़्त ग़ुस्से को क़ाबू में रखना।
3. और अल्लाह के बन्दों के साथ नर्मी इख़्तियार करना।

—शौबुल ईमान, हिस्सा 6, पेज 318

शैतान इंसान की नाक में रात गुज़ारता है

एक हदीस शरीफ़ में इसकी ताईद आई है कि जब सवेरे बेदार होकर वुज़ू किया जाए तो तीन मर्तबा नाक में पानी डालकर ज़रूर झाड़ लिया करें इसकी वजह यह है कि शैतान इंसान की नाक के बांसे में जाकर रात गुज़ारता है, फिर उसमें पेशाब, पाख़ाना और ग़िलाज़त करता है और जब सोने के बाद इंसान उठता है तो नाक के अन्दर मेल कुचैल भरे हुए मिलते हैं। इसमें शैतान की ग़िलाज़त के असरात होते हैं, जब वुज़ू में नाक अच्छी तरह झाड़ ली जाएगी तो शैतान के असरात साफ़ हो जाते हैं। हदीस शरीफ़ मुलाहिज़ा फ़रमाइये :

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِذَا اسْتَيْقَظَ اَحَدُكُمْ مِنْ

مَنَامِهٖ فَتَوَضَّأَ فَلْيَسْتَنْثِرْ ثَلَاثًا فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَبِيْتُ عَلٰى خَيْشُوْمِهٖ.

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि नबी-ए-करीम सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुममें से कोई अपने सोने से बेदार हो जाए फिर वुज़ू करने लगे तो ज़रूर तीन मर्तबा नाक झाड़ ले इसलिए कि शैतान उसकी नाक के बांसे में जाकर रात गुज़ारता है।

—बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 465, हदीस 3189

नीचे दिए कलिमात सीख लो और अपनी औलाद को भी सिखाओ

हज़रत अबू अमामा रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि मैं अपने होंटों को हिला रहा हूँ। आप सल्ल० ने पूछा: ऐ अबू अमामा! तुम होंट हिलाकर क्या पढ़ रहे हो? मैंने कहा: या रसूलुल्लाह सल्ल० मैं अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया क्या मैं तुझे ऐसा ज़िक्र न बताऊँ जो तुम्हारे दिन रात ज़िक्र करने से ज़्यादा भी है और अफ़्ज़ल भी है? मैंने अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह सल्ल०! ज़रूर बताएं। फ़रमाया: तुम यह कलिमात कहा करो :

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ مَا خَلَقَ. سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا فِي
الْأَرْضِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ مَا أَحْصٰى
كِتَابُهٗ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْأَ كُلِّ شَيْءٍ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
عَدَدَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا خَلَقَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا فِي الْأَرْضِ
وَالسَّمَاءِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا فِي الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا
أَحْصٰى كِتَابُهٗ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ كُلِّ
شَيْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْأَ كُلِّ شَيْءٍ.

तिबरानी में यह मज़कूर है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें ऐसी ज़बरदस्त चीज़ न बताऊं कि उसके कहने पर तुम्हें इतना ज़्यादा सवाब मिलेगा कि अगर तुम दिन रात इबादत करके थक जाओ तो भी उसके सवाब तक न पहुँच सको? मैंने कहा ज़रूर बताएं, आप सल्ल० ने फ़रमायाः सुब्हान अल्लाह इसी तरह से और अल्लाहु अकबर इसी तरह से, तबरानी की दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः इन कलिमात को सीख लो और अपने बाद अपनी औलाद को सिखाओ।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 336

एक जुम्ले पर हज्जाज इब्ने यूसुफ़ की मग़्फ़िरत की उम्मीद

हज्जाज इब्ने यूसुफ़ ख़ुलफ़ाए बनू उमैइया का इन्तिहाई सफ़्फ़ाक व ख़ूँ-ख़्वार ज़ालिम गवर्नर था। उसने एक लाख इंसानों को अपनी तलवार से क़त्ल किया और जो लोग उसके हुक्म से क़तल किए गये उनको तो कोई गिन ही न सका। बहुत-से सहाबा और ताबिईन को उसने क़तल किया या क़ैद व बन्द रखा। हज़रत ख़्वाजा हसन बस्री रह० फ़रमाया करते थे कि अगर सारी उम्मतें अपने अपने मुनाफ़िक़ों को क़ियामत के दिन लेकर आएं और हम अपने एक मुनाफ़िक़ हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी को पेश कर दें तो हमारा पल्ला भारी रहेगा। यह हज्जाज बिन यूसुफ़ जब कैंसर की ख़बीस बीमारी से मरने लगा तो उसकी ज़बान पर यह दुआ जारी हो गई। यही दुआ मांगते मांगते उसका दम निकल गया। दुआ यह थी :

"ऐ अल्लाह! तेरे बन्दे-बन्दियाँ मेरे बारे में कहते हैं कि मुझे माफ़ नहीं करेगा मगर मुझे तुझसे उम्मीद है कि तू मुझे माफ़ फ़रमा देगा, मुझे माफ़ फ़रमा दे।"

ख़लीफ़ा आदिल हज़रत उ़मर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह० को हज्जाज बिन यूसुफ़ की ज़बान से मरते वक़्त की यह दुआ बहुत अच्छी लगी, और उनको हज्जाज की मौत पर रश्क होने लगा। और जब ख़्वाजा हसन बस्री रह० से लोगों ने हज्जाज की इस दुआ का ज़िक्र किया तो आपने ताज्जुब से फ़रमाया कि क्या वाक़ई हज्जाज ने यह दुआ मांगी थी? तो लोगों ने कहा जी हाँ उसने यह दुआ मांगी थी, तो आपने फ़रमाया कि शायद ख़ुदा उसको बख़्श दे। —इहयाउल उलूम, हिस्सा 4, हिस्सा 401

नीचे दिए गये कलिमात पढ़ने के बाद दुआ मांगी जाएगी क़बूल होगी। (हदीस)

हदीस शरीफ़ में है कि नीचे दिए गये कलिमात पढ़ने के बाद जो दुआ मांगी जाती है क़बूल होती है।

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

(तिबरानी, मुन्तख़ब अहादीस, पेज 4340)

किसी को हवा में उड़ता हुआ देखकर धोका न खाओ

यह मज़मून ज़रूर पढ़ें :

बायज़ीद बिस्तामी रह० का एक अजीब व ग़रीब मक़ूला और नसीहत है कि अगर तुम किसी शख़्स को देखो कि वह आला दर्जे

की करामतों का मुज़ाहिरा करके हवा में उड़ रहा है तब भी उसके धोके में न आओ जब तक देख न लो कि एहकाम शरीअत और हिफ़्ज़ हदूद के मामले में उसका का क्या हाल है।

—बिदाया वन्-निहाया, हिस्सा 11, पेज 35

पाँचवा न बन

(۱) اَنْ عَالِمًا. (۲) اَوج مُتَعَلِّمًا. (۳) اَوْ مُسْتَمِعًا.
(۴) اَوْ مُحِبًّا وَلَا تَكُنِ الْخَامِسَةَ فَتَهْلِكَ.

आलिम बन, या मुतअल्लिम बन, या ग़ौर से सुनने वाला बन, या मुहब्बत करने वाला बन।

والخامسة ان تبغض العلم واهله

और पाँचवा न बनो वर्ना हलाक हो जाओगे और पाँचवा यह है कि इल्म और अहले इल्म से बुग्ज़ रखो। —मुन्तख़ब अहादीस, पेंज 309

ख़ास विर्द

अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ 11-11 मर्तबा।

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ.

1. हिफ़ाज़त अज़ शुरूर व फ़ितन, 341 मर्तबा।
2. बराए वुस्अते रिज़्क़ व अदा-ए-क़र्ज़ 308 मर्तबा।
3. बराए तक्मील ख़ास काम 111 मर्तबा।
4. बराए किफ़ालत अज़ मसाइब व परेशानी 140 मर्तबा।

—बयान फ़रमूदा हज़रत मौलाना शाह अबरारुल हक़ रह०

अल्लाह के 4000 नाम

1000 नाम सिर्फ़ अल्लाह को मालूम हैं

1000 नाम अल्लाह और फ़रिश्तों को मालूम हैं।

1000 नाम फ़रिश्ते, अम्बिया को मालूम हैं।

300 नाम तौरात में हैं।

300 नाम ज़बूर में हैं।

300 नाम इन्जील में हैं।

99 नाम क़ुरआन में हैं।

1 (एक) नाम क़ुरआन में छिपा हुआ है, मख़्फ़ी है।

यानी टोटल 4000 नाम हुए, तफ़्सील दर्ज कर दी गई है।

इमाम राज़ी रह० ने यह तफ़्सील तहरीर की है।

सात रज़ाइल से बचो

एक अच्छी सिफ्त पैदा करो मुहब्बत आम हो जाएगी

हदीस शरीफ़ में है:

1. बद्-गुमानी से बचो।
2. किसी साथी की कमज़ोरी की टोह में न रहा करो।
3. जासूसी न करो।
4. एक-दूसरे पर बेजा बढ़ने की हवस न करो।
5. हसद न करो।
6. बुग्ज़ न रखो।
7. एक-दूसरे से मुँह न फेरो।

यह सात ज़हरीले रज़ाइल हैं जो उम्मत के सफ़ों को मुन्तशिर

करते हैं, इज्तिमाइयत ख़त्म हो जाती है। इससे बचना ज़रूरी है और अच्छी सिफ़त जिसे इख़्तियार करना है كونوا عباد الله اخوانا.

भाई-भाई बनकर रहो, उम्मीद है कि इज्तिमाइयत आम होगी, मुहब्बत भी आम होगी।

—बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 2, पेज 212

हज, उमरा, ग़ज़वा से वापसी की नब्वी दुआ

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ، صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ، وَاَعَزَّ جُنْدَهٗ، وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ، فَلَا شَيْءَ بَعْدَهٗ. (बुख़ारी व मुस्लिम)

टी०वी० पर क्रिकेट का खेल देखना नामुनासिब है

यह मज़मून ज़रूर पढ़ें। لَهْوَ الْحَدِيْثِ (सूरः लुक़मान, आयत 6, क़ुरआन)

इससे मुराद गाना-बजाना, उसका साज़ो सामान और आलाते साज़ व मौसीक़ी और हर वह चीज़ जो इंसान को ख़ैर और मारूफ़ से ग़ाफ़िल कर दे। इसमें क़िस्से, कहानियाँ, अफ़साने, ड्रामे, नाविल और जिन्सी और सनसनीख़ेज़ लिट्रेचर, रिसाले और बे-हयाई के प्रचारक अख़बारात सब ही आ जाते हैं और जदीद तरीन ईजादात रेडियो, टी०वी, वी०सी०आर०, विडियो फ़िल्में वग़ैरह भी। अहदे रिसालत में कुछ लोगों ने गाने बजाने वाली लौंडियाँ भी इसी मक़्सद के लिए ख़रीदी थीं कि वह लोगों का दिल गाने सुनाकर बहलाती रहें ताकि क़ुरआन व इस्लाम से वह दूर रहें, इस एतिबार से उसमें गाने वाली भी आ जाती हैं जो आजकल फ़नकार फ़िल्मी सितारे और सक़ाफ़ती सफ़ीर और पता नहीं कैसे-कैसे मुहज़्ज़ब

खुशनुमा और दिल फ़रेब नामों से पुकारी जाती हैं (और इस लह्व अल्-हदीस में क्रिकेट का खेल भी आ गया ख़्वाह खेल हो या क्रिकेट का टी०वी० पर देखना हो या रोडियो पर सुनना हो क्योंकि यह चीज़ भी इंसानों को ख़ैर और मारूफ़ से ग़ाफ़िल कर देती है।

—तफ़्सीर माख़ूज़ मस्जिदे नब्वी

अला साहिबा अलिफ़ अलिफ़ अलिफ़ अलिफ़ सलातन व सलामन

इस्लाम मे सादगी इख़्तियार करने की तर्ग़ीब व तल्क़ीन है

وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ (पारा 23, आयत 86) इस आयत से आम मामलाते ज़िन्दगी में भी तकल्लुफ़ व तस्नअ से इज्तिनाब का हुक्म मालूम होता है जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हमें तकल्लुफ़ से मना किया गया है। —सही बुख़ारी नम्बर 7293

हज़रत सलमान रज़ि० कहते हैं हमें रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेहमान के लिए तकल्लुफ़ करने से मना फ़रमाया है।

—सही अल्-जामे अस्-सग़ीर लिल्-अलबानी 9871

इससे मालूम हुआ कि लिबास, ख़ुराक, रिहाइश और दूसरे मामलात में तकल्लुफ़ात जो आजकल मायारे ज़िन्दगी बुलन्द करने के उन्वान से अस्हाबे हैसियत का शिआर और वतीरा बन चुका है इस्लामी तालीमात के ख़िलाफ़ है, इस्लाम में सादगी और बे-तकल्लुफ़ी इख़्तियार करने की तर्ग़ीब व तल्क़ीन है।

—तफ़्सीर मस्जिदे नब्वी

औलाद में भी बराबरी करनी चाहिए

اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى (पारा 6, अल्-माईदा, आयत 8)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० कहते हैं कि मेरे बाप ने मुझे तोहफ़ा दिया तो मेरी वालिदा ने कहा इस तोहफ़े पर आप जब तक अल्लाह तआला के रसूल को गवान नहीं बनाएंगे मैं राज़ी नहीं होंगी, चुनांचे मेरे वालिद नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में आए तो आप सल्ल० ने पूछाः क्या तुमने अपनी सारी औलाद को इसी तरह का तोहफ़ा दिया है? उन्होंने नहीं में जवाब दिया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह से डरो, और औलाद के दर्मियान इंसाफ़ करो और फ़रमाया कि मैं ज़ुल्म पर गवाह नहीं बनूंगा।

—सहीह बुख़ारी व मुस्लिम, तफ़्सीर मस्जिदे मक्की, पेज 288

रोज़ाना सूरज अल्लाह तआला को सजदा करता है

सहीह बुख़ारी में है हज़रत अबू ज़र रज़ि० कहते हैं कि मैं सूरज छिपने के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद में था। आप सल्ल० ने मुझसे फ़रमायाः जानते हो यह सूरज कहाँ छुपता है? मैंने कहाः ख़ुदा तआला और उसका रसूल ही ख़ूब जानते हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया वह अर्श तले जाकर ख़ुदा तआला को सजदा करता है। आप सल्ल० ने फ़रमायाः इसकी क़रारगाह अर्श के नीचे है। वह अल्लाह से वापस होने की इजाज़त तलब करता है और उसे इजाज़त दी जाती है। यानी उससे कहा जाता है कि जहाँ से आया था वहीं लौट जा तो वह अपने निकलने की जगह से निकलता है। —बुख़ारी शरीफ़

हवाएं आठ क़िस्म की होती हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हवाएं आठ

क़िस्म की हैं: चार रहमत की, चार ज़हमत की।

1. नाशिरात। 2. मुबश्शिरात। 3. मुरसलात। 4. ज़ारियात। रहमत की और

5. अक़ीम। 6. सरसर। 7. आसिफ़। 8. क़ासिफ़ अज़ाब की। इनमें से पहली दो खुश्कियों की और आख़िरी दो तरी की। जब अल्लाह तआला ने क़ौमे आद वालों की हलाकत का इरादा किया तो हवाओं के दारोग़ा को यह हुक्म दिया। उसने पूछा कि जनाब बारी तआला! क्या मैं हवाओं के ख़ज़ानों में इतना सुराख़ करूं जितना बेल का नथना होता है? तो फ़रमाने खुदा होता है कि नहीं! नहीं! अगर ऐसा हुआ तो ज़मीन और ज़मीन की कुल चीज़ें उलट-पलट हो जाएंगी, इतना नहीं बल्कि इतना सूराख़ करो जितना अंगूठी में होता है। अब सिर्फ़ इतने से सूराख़ से हवा चली, जहाँ पहुचीं वहाँ भुस उड़ा दिया, जिस चीज़ पर गुज़री उसे बे-निशान कर दिया। यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का क़ौल है।

—इब्ने कसीर

इज़्ज़त का अस्ल मेयार नस्ब नहीं बल्कि तक़्वा और तहारत है

असल में इंसान का बड़ा छोटा या मुअज़्ज़ज़ व हक़ीर होना ज़ात-पात ख़ानदान और नस्ब से ताल्लुक़ नहीं रखता बल्कि जो शख़्स जिस क़द्र नेक ख़स्लत मुअद्दिब और परहेज़गार हो उसी क़द्र अल्लाह के यहाँ मुअज़्ज़ज़, मुकर्रम है। नस्ब की हक़ीक़त तो यह है कि सारे आदमी एक मर्द और एक औरत यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम पर मुन्तहा होते हैं। यह ज़ातें और ख़ानदान अल्लाह तआला ने सिर्फ़ तआरुफ़ और

पहचान के लिए मुक़र्रर किए हैं। बिला शुब्हा जिसको अल्लाह तआला किसी शरीफ़ और मुअज़्ज़ज़ घराने में पैदा कर दे वह एक मोहूब शुर्फ़ है जैसे किसी को ख़ूबसूरत बना दे लेकिन यह चीज़ नाज़ व फ़ख्र करने के लाइक़ नहीं है कि इसी को मेयारे कमाल और फ़ज़ीलत ठहरा लिया जाए और दूसरों को हक़ीर समझा जाए। हाँ, शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने बिला इख़्तियार व कस्ब हमको यह नेमत मरहमत फ़रमाई। शुक्र में यह भी दाख़िल है कि गुरूर तफ़क्कुर से बाज़ रहे और इस नेमत को कमीने अख़्लाक़ और बुरी ख़स्लतों से ख़राब न होने दे। इज़्ज़त का असली मेयार नसब नहीं है तक़्वा और तहारत है और मुत्तक़ी आदमी दूसरों को हक़ीर कब समझेगा?

मोमिने हक़ीक़ी

हारिस बिन मालिक रज़ि० नबी करमी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए तो आपने फ़रमायाः हारिस! सुब्ह कैसे गुज़री? हारिस ने कहाः एक हक़ीक़ी मोमिन की हैसियत से। आं हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया, ख़ूब समझकर कहो क्योंकि हर चीज़ की एक हक़ीक़त हुआ करती है। तुम्हारे ईमान की हक़ीक़त क्या है बताओ तो सही। तो हारिस रज़ि० ने कहा कि दुनिया की मुहब्बत से मैंने रू-गरदानी कर ली है। रातों को जागकर इबादत करता हूँ, दिन को रोज़े की वजह से प्यासा रहता हूँ और अपने को यूँ पाता हूँ जैसे मेरे सामने अर्शे रब खुला हुआ है और जैसे मैं अहले जन्नत को बाहम मुलाक़ात करता देखता हूँ और अहले दोज़ख़ को गिरफ़्तारे बला देखता हूँ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हाँ ऐ हारिस! तुम हक़ीक़ते ईमान तक पहुँच

चुके हो, इस पर क़ाइम रहने की कोशिश करना। यह आप सल्ल० ने तीन मर्तबा फ़रमाया। —इब्ने कसीर रह०

एक तरफ़ा बात सुनकर कोई राय क़ायम न की जाए

इमाम शअबी रह० कहते हैं मैं क़ाज़ी शुरैह के पास बैठा हुआ था। एक औरत अपने शौहर के ख़िलाफ़ शिकायत लेकर आई, जब अदालत में हाज़िर हुई अपना बयान देते वक़्त ज़ारो क़तार रोना शुरू कर दिया, मुझ पर उसके आह व बका का बहुत असर हुआ, मैंने क़ाज़ी शुरैह से कहाः "अबू उम्मैया! इस औरत के रोने से ज़ाहिर होता है कि यह यक़ीनन मज़लूम और बेकस है, इसकी ज़रूर दादरसी करनी चाहिए।" मेरी यह बात सुनकर क़ाज़ी शुरैह ने कहा। ऐ शअबी! यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई भी उन्हें कुंए में डालने के बाद अपने बाप के पास रोते हुए ही आए थे।

तशरीह :– एक तरफ़ा बात सुनकर कभी राय क़ाइम न करनी चाहिए, दोनों की राय सुनो, दोनों से ख़ूब हालात मालूम करो फिर फ़ैसला करो। —इब्ने कसीर रह०

चुग़ली करने पर इबरतनाक अंजाम

एक ताबई जिनका नाम रबई रह० है वह अपना वाक़िआ बयान करते हैं कि एक मर्तबा मैं एक मज्लिस में पहुँचा, मैंने देखा कि लोग बैठे हुए बातें कर रहे हैं। मैं भी उस मज्लिस में बैठ गया, अब बातें करने के दर्मियान किसी की चुग़ली शुरू हो गई। मुझे यह बात बुरी लगी कि हम यहाँ मज्लिस में बैठकर किसी की चुग़ली करें चुनांचे मैं उस मज्लिस से उठकर चला गया इसलिए

कि अगर किसी मज्लिस में ग़ीबत हो रही है तो आदमी को चाहिए कि उसको रोके और अगर रोकने की ताक़त न हो तो कम से कम उस बातचीत में शरीक न हो बल्कि उठकर चला जाए। चुनांचे मैं उठकर चला गया। थोड़ी देर बाद ख़्याल आया कि अब मज्लिस में चुग़ली की बातें ख़तम हो गई होंगी इसलिए दोबारा उस मज्लिस में उनके साथ बैठ गया। अब थोड़ी देर इधर-उधर की बातें हुईं लेकिन थोड़ी देर के बाद फिर चुग़ली शुरू हो गई लेकिन अब मेरी हिम्मत कमज़ोर पड़ गई और मैं मज्लिस से उठ न सका और जो ग़ीबत वह लोग करते रहे मैं उसे सुनता रहा फिर मैंने भी ग़ीबत के एक दो जुमले कह दिए। जब मैं इस मज्लिस से घर आया और रात को सोया तो ख़्वाब में एक इन्तिहाई स्याह फ़ाम आदमी को देखा जो एक बड़े तश्त में मेरे पास गोश्त लेकर आया। जब मैंने ग़ौर से देखा तो मालूम हुआ वह ख़िन्ज़ीर का गोश्त है और वह स्याह फ़ाम आदमी मुझसे कह रहा है कि ख़िन्ज़ीर का गोश्त खाओ। मैंने कहाः मैं मुसलमान हूँ, ख़िन्ज़ीर का गोश्त कैसे खाऊं। उसने कहाः यह तुम्हें खाना पड़ेगा, फिर ज़बरदस्ती उस गोश्त के टुकड़े मेरे मुँह में ठूंसने लगा। अब मैं मना करता जा रहा हूँ और वह ठूंसता जा रहा है यहाँ तक कि मुझे मतली और क़ै आने लगी मगर वह ठूंसता जा रहा था। फिर उसी शदीद तक्लीफ़ में मेरी आँख खुल गई, जब जागने के बाद मैंने खाने के वक़्त खाना खाया तो ख़्वाब में जो ख़िन्ज़ीर के गोश्त का ख़राब और बदबूदार ज़ाइक़ा था वह ज़ाइक़ा मुझे अपने खाने में महसूस हुआ और तीस दिन तक मेरा यह हाल रहा। जिस वक़्त भी मैं खाना खाता तो हर खाने में उस ख़िन्ज़ीर के गोश्त का बद्तरीन ज़ाइक़ा मेरे खाने में शामिल हो जाता और उस

वाक़िये से अल्लाह तआला ने उस पर मुतनब्बह फ़रमाया कि ज़रा-सी देर में जो मैंने मज्लिस में ग़ीबत की थी उसका बुरा ज़ाइक़ा मैं 30 दिनों तक महसूस करता रहा। —तामीरे हयात

रमज़ान की 27वीं रात

इसी रात में क़ुरआन नाज़िल हुआ।

इसी रात में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठाया गया।

इसी रात में हज़रत यूशअ इब्ने नून अलैहिस्सलाम को शहीद किया गया।

इसी रात में बनी इस्राईल की तौबा क़बूल हुई।

इसी रात में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 516-517

दीन में कामियाबी की एक अजीब मिसाल

अल्लाह तबारक व तआला ने इंसान की कामयाबी और नाकामी का दोरो मदार दीन पर रखा है। जिस तरह शहद की मिठास शहद से अलग नहीं की जा सकती और फूल की ख़ुश्बू को फूल से जुदा नहीं किया जा सकता, उसी तरह कामयाबी को दीन से अलग करने का हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। दीन क्या है? जिस काम को करने का अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुक्म दिया है वह दीन है और जिस काम को करने से मना किया है वह बे-दीन है।

हालात का बनना और बिगड़ना यह आमाल के बनने और बिगड़ने पर है और आमाल का बनना और बिगड़ना यह ईमान के

बनने बिगड़ने पर है। ईमान बिगड़ेगा, आमाल बिगड़ेंगे और आमाल बिगड़ेंगे, अल्लाह हालात को बिगाड़ेंगे।

इसलिए मुसलमान अपनी हालत को बदल लें, अल्लाह तआला हालात को बदल देगा।

कुछ जिन्नात भी चोरी करते हैं उनके शर से बचने का नब्वी तरीक़ा

हज़रत अबी बिन कअ्ब रज़ि० से हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूछते हैं कि किताबुल्लाह में सबसे अज़मत वाली आयत कौन-सी है? हज़रत अबी बिन कअ्ब जवाब देते हैं कि खुदा तआला और उसके रसूल सल्ल० ही को उसका सबसे ज़्यादा इल्म है। आप सल्ल० फिर यही सवाल करते हैं, बार- बार सवालात पर जवाब देते हैं कि आयतुल कुर्सी

हज़रत अबी बिन कअ्ब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे यहाँ खजूर की एक बोरी थी, मैंने देखा कि उसमें खजूरें रोज़ बरोज़ घट रही हैं। एक रात मैं जागता रहा और उसकी निगरानी करता रहा, मैंने देखा कि एक जानवर लड़के की तरह आया। मैंने उसे सलाम किया उसने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा तू इंसान है या जिन्न? उसने कहाः मैं जिन्न हूँ। मैंने कहाः ज़रा हाथ तो दे। उसने हाथ बढ़ा दिया। मैंने हाथ अपने हाथ में लिया तो कुत्ते जैसा था और उस पर कुत्ते जैसे बाल थे। मैंने कहाः क्या जिन्नों की पैदाइश ऐसी है? उसने कहाः तमाम जिन्नात में से ज़्यादा क़ुव्वत वाला मैं ही हूँ। मैंने कहाः भला तू मेरी चीज़ चुराने पर दिलेर क्यों हो गया? उसने कहाः तू सद्क़े को पसन्द करता है, हमने कहा हम क्यों महरूम रहें। मैंने कहाः तुम्हारे शर से बचाने

वाली कौन-सी चीज़ है? उसने कहा आयतुल कुर्सी। सुब्ह को मैं सरकार-ए-मुहम्मदी सल्ल० में हाज़िर हुआ तो मैंने रात का सारा वाक़िआ बयान किया। आप सल्ल० ने फरमायाः ख़बीस ने यह बात तो बिल्कुल सच कही। —इब्ने कसीर

तशरीह :– आज मुसलमानों में तिलावत का शौक़ निकल गया। ग़लत चीज़ों ने घर में जगह कर ली। बरकत निकल गई। आज हम रमज़ान का चाँद देखकर क़ुरआन खोलते हैं और ईद का चाँद देखकर बन्द कर देते हैं। अब आईदा साल मुलाक़ात होगी।

हुज़ूर अक़्दस सल्ल० ने फ़रमाया : अगर तू रात को बिस्तर पर जाकर इस आयत को पढ़ ले तो खुदा तआला की तरफ़ से तुझ पर हाफिज़ मुक़र्रर होगा और सुब्ह तक शैतान तेरे क़रीब भी न आ सकेगा। —बुख़ारी शरीफ़

वुज़ू की अजीब व ग़रीब फ़ज़ीलत

मुस्नद और मुस्लिम में है कि हज़रत उ़मरो बिन अबसा रज़ि० कहते हैंः या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे वुज़ू की बाबत ख़बर कर दीजिए। आप सल्ल० ने फ़रमायाः जो शख़्स वुज़ू का पानी लेकर कुल्ला करता है और नाक में पानी देता है तो उसके मुँह से और नथनों से पानी के साथ ही ख़ताएं झड़ जाती हैं जबकि वह नाक झाड़ता है और फिर जब वह मुँह धोता है जैसा कि खुदा का हुक्म है तो उसके मुँह की ख़ताएं दाढ़ी और दाढ़ी के बालों से पानी के गिरने के साथ ही झड़ जाती हैं फिर वह दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोता है तो उसके हाथ के गुनाह उसके पोरों की तरफ़ से झड़ जाते हैं फिर वह मसह करता है तो उसकी सर की ख़ताएं उसके बालों के किनारे से पानी के साथ झड़ जाते

हैं फिर वह अपने पाँव टख़्ने समेत हुक्मे ख़ुदावन्दी मुताबिक़ धोता है तो उंगलियों से पानी टपकने के साथ ही उसके पैरों के गुनाह भी दूर हो जाते हैं फिर वह खड़ा होकर अल्लाह तआला के लाइक़ जो हम्द व सना है उसे बयान करके दो रक्अत नमाज़ अदा करता है तो अपने गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे वह आज पैदा हुआ हो। यह सुनकर हज़रत अबू अमामा रज़ि० ने हज़रत उमर बिन अब्सा रज़ि० से कहा ख़ूब ग़ौर कर लीजिए कि आप क्या फ़रमा रहे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आपने इसी तरह सुना है? क्या यह सब कुछ एक ही मक़ाम में इंसान हासिल कर सकता है? हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब दिया कि अबू अमामा! मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो चुकी हैं, मेरी मौत क़रीब आ चुकी है, मुझे क्या फ़ायदा कि अल्लाह के रसूल पर झूठ बोलूं। एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीन बार नहीं, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बानी सात बार बल्कि इससे भी ज़्यादा बार सुना है।

तशरीह :– वुज़ू में अल्लाह तआला इतना मेहरबान और करीम है तो नमाज़ में अल्लाह किया देंगे बन्दा तसव्वुर भी नहीं कर सकता।

झूटे ख़्वाब बयान करने वालों के बारे में वईद

हदीस शरीफ़ में है जो शख़्स झूठा ख़्वाब बयान करेगा क़ियामत में अल्लाह तबारक व तआला उसे दो जौ के दाने देंगे और फ़रमाएंगे इसमें गाँठ लगा।

(मरने के बाद किया होगा? –मौलाना आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी)

तशरीह :– झूठा ख़्वाब बयान करने से बहुत एहतिराज़ करना

चाहिए।

अमल की तौफ़ीक़ सलब होने का सबब

अमल की तौफ़ीक़ सलब होने की वजहों में से मुश्तबा कमाई, हराम कमाई है कि आदमी एहतियात से न कमाए, हलाल व हराम का कोई इम्तियाज़ न करे, मुश्तबा और ग़ैर मुश्तबा को न देखे। पैसा मक़्सूद हो जाए कि जिस तरह हो पैसा बटोर लो, डकैती से हो, चोरी से हो, रिश्वत से हो, सूद से हो, धोके से हो, झूठ से हो, किसी भी अंदाज़ से पैसा आना चाहिए, ऐसे पैसे का असर तो यही होना है कि तौफ़ीक़ जाती रहती है।

बहरहाल हासिल यह निकला कि इबादत की जब तौफ़ीक़ होती है जब दिल में नूर हो और नूर दिल में जब होता है जब कमाई ठीक हो, हलाल की हो और हलाल का लुक़्मा हासिल हो। रिज़्क़े हलाल में क़िल्लत और बरकत होती है।

और हलाल की कमाई हमेशा थोड़ी होती है। ज़्यादा नहीं हुआ करती, हराम की कमाई तो हो सकता है कि ज़्यादा हो लेकिन आदतन हलाल की कमाई से कम होती है। इल्ला माशा अल्लाह, अल्लाह तआला किसी को बढ़ा दे, मगर आदतन लाज़मी बात यह है कि ज़रूरत के मुवाफ़िक़ मिलता है मगर बरकत में ज़्यादा होती है इसकी ख़ैर ज़्यादा ज़ाहिर होती है। अज़ः—मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

बम्बई की एक ख़ातून ने सवाल किया था, नमाज़, रोज़ा, ज़िक्रे तिलावत की तौफ़ीक़ नहीं होती है, क़ुरआन खोलकर बैठूं पढ़ने की तौफ़ीक़ नहीं होती है। इस सवाल पर ऊपर दिया गया जवाब लिखा गया था। वस्-सलाम

आशूरा के बारे में नीचे दिया मज़मून ज़रूर पढ़ें

आशूरा का दिन बड़ा ही मुहतम बिश्-शान और अज़्मत का हामिल है। तारीख़ के अज़ीम वाक़िआत इससे जुड़े हुए हैं, चुनांचे मोअर्रिख़ीन लिखते हैं :

1. आशूरा के दिन ही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबा क़बूल हुई।
2. हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम को इसी दिन आसमान पर उठाया गया।
3. इसी दिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती हौलनाक सैलाब से महफ़ूज़ होकर कोहे जूदी पर लंगर अंदाज़ हुई।
4. इसी दिन अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहि० को "ख़लीलुल्लाह" बनाया और उन पर आग गुलज़ार बनी।
5. इसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को अल्लाह तआला ने फ़िरऔन के ज़ुल्म व इस्तिबदाद से नजात दिलाई।
6. इसी दिन हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बादशाहत वापस मिली।
7. इसी दिन हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को सख़्त बीमारी से शिफ़ा हुई।
8. इसी दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम 40 दिन मछली के पेट में रहने के बाद निकाले गये।
9. इसी दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात एक लंबे अर्से के बाद हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम से हुई।
10. इसी दिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए और इसी दिन

यहूदियों के शर से नजात दिलाकर आसमान पर उठाये गये।

और उलमा-ए-किराम ने लिखा है कि इन दस जलीलुल क़द्र अम्बिया अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम के ऊपर दिए गये वाक़िआत की बुनियाद पर ही इस दिन का नाम आशूरा रखा गया।

कुछ उल्मा ने एक दूसरी वजहे तस्मिया बयान की है, वह फ़रमाते हैं कि आशूरा असल में "आश नूरा" था, तहफ़ीफ़न नून को ख़त्म करके "आशूरा" बना लिया और मतलब यह है कि जो शख़्स इसकी हुरमत की निगहदाश्त करेगा वह नूर में ऐश करेगा। वल्लाहु तआला। —नुज़हतुल मजालिस उर्दू, पेज 347-348

कुछ उलमा किराम ने ऊपर दिए गये वाक़िआत के अलावा कुछ और वाक़िआत भी बयान किये हैं जो आशूरा के दिन से मुताल्लिक हैं। जैसे :

1. इसी दिन अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन, लौह व क़लम, हज़रत आदम व हव्वा अलैहिस्सलाम को पैदा किया।
2. इसी दिन क़ियामत क़ाइम होगी।
3. इसी दिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात नाज़िल हुई।
4. इसी दिन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश हुई।
5. इसी दिन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को क़ैदख़ाने से रिहाई नसीब हुई और मिस्र की हुकूमत मिली।
6. इसी दिन दुनिया में पहली बाराने रहमत (रहमत की बारिश) हुई।
7. इसी दिन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह फ़रमाया।
8. इसी दिन अबू लुअलुअ मजूसी के हाथों से मुसल्ला-ए-

रसूलुल्लाह सल्ल० पर हज़रत फारूक़ आज़म रज़ि० ने ज़ख़्मी होकर जामे शहादत नौश फ़रमाया। —अस्माउर्रिजाल, मिश्कात शरीफ़

9. इसी दिन कूफ़ी फ़रेबकारों ने नवास-ए-रसूल सल्ल० और जिगरे गोशा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को शहीद किया।

10. इसी दिन क़ुरैश ख़ान-ए-काबा पर नया ग़िलाफ़ डालते थे।

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 4, पेज 168 पैग़ाम हक़ व सदाक़त, पेज 168

11. इसी दिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम की तौबा क़बूल हुई और उनके ऊपर से अज़ाब टला।

—मआरिफ़ुल क़ुरआन, पारा 11, आयत 98

12. इसी दिन हज़रतजी मौलाना इनामुल हसन साहब रह० का इन्तिक़ाल हुआ।

बात करने में इख़्तिसार से काम लीजिए

हज़रत अम्र बिन अल्-आस रज़ि० से रिवायत है कि एक दिन जबकि एक शख़्स (उनकी मौजूदगी में) खड़े होकर (वाज़ व तक़रीर के तौर पर) बात की और बहुत लम्बी बात की तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर यह शख़्स बात छोटी करता तो इसके लिए ज़्यादा बेहतर होता। मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है, आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं यह मुनासिब समझता हूँ या आपने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से यह हुक्म है कि बात करने में इख़्तिसार से काम लूँ क्योंकि बात में इख़्तिसार ही बेहरत होता है। —सुनन अबू दाऊद

तर्जुबा बताता है कि बहुत लम्बी बात से सुनने वाले उकता जाते हैं और देखा गया है कि किसी वक़्त तक़रीर या वाअ से सुनने वाले शुरू में बहुत अच्छा असर लेते हैं लेकिन जब बात हद

से ज़्यादा लम्बी हो जाती है तो लोग उकता जाते हैं और वह असर भी ख़त्म हो जाता है।

हज़रत अली रज़ि०, हज़रत उमर इब्ने अल्-आस रज़ि० और हज़रत अमीर मुआविया रज़ि० के क़त्ल करने की अजीब स्कीम

साहिबे मज्मउ़ल फ़वाइद ने मोजम कबीर तबरानी के हवाले से हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० की शहादत का वाक़िया किसी क़द्र तफ़्सील से इस्माईल इब्ने राशिद की रिवायत से नक़ल किया है, नीचे उसका हासिल और ख़ुलासा नज़्रे नाज़िरीन किया जाना मुनासिब मालूम हुआ, लेकिन इसके लिए ज़रूरी है कि फ़िर्क़ा ख़्वारिज का कुछ तआरुफ़ करा दिया जाए।

यह हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के लश्कर ही का एक ख़ास गिरोह था जो अपनी हिमाक़त और ज़हनी कज़रवी की वजह से उनके फ़ैसले को ग़लत और अल्लाह ने करे क़ुरआन मजीद के सरीह ख़िलाफ़ समझ कर उनका मुख़ालिफ़ और बग़ावत के लिए आमादा हो गया था, इनकी तादाद कई हज़ार थी। फिर हज़रत अली रज़ि० की इफ़्हाम व तफ़्हीम के नतीजे में उनमें से एक ख़ास तादाद सीधे रास्ते पर आ गई, लेकिन उनकी बड़ी तादाद अपनी गुमराही पर क़ाइम रही और क़त्ल व क़िताल पर आमादा हो गई, और आख़िरकार हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० को उनके ख़िलाफ़ ताक़त इस्तेमाल करनी पड़ी। (तारीख़ में यह वाक़िया जंगे नहरवान के नाम से मशहूर है।)

जिसके नतीजे में इनमें से अक्सर का ख़ातमा हो गया, कुछ बाक़ी रह गये, इन बाक़ी रह जाने वालों में से तीन लोग 1. बरक

इब्ने अब्दुल्लाह, 2. अम्र इब्ने बक्र तमीमी और 3. अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम। मक्का मुकर्रमा में जमा हुए, उन्होंने सूरते हाल पर आपस में मशविरा किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि सारा फ़ितना इन लोगों की वजह से है जिनके हाथों में हुकूमत है, इनको किसी तरह ख़त्म कर दिया जाए, इस सिलसिले में इन्होंने तीन हज़रात को मुतअय्यन तौर पर नामज़द किया। 1. हज़रत मुआविया रज़ि०, 2. हज़रत अम्र बिन अल्-आस और 3. हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि०। बरक ने कहा कि मुआविया रज़ि० को क़तल करने की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ, अम्र तमीमी ने कहा अम्र इब्ने अल्-आस को ख़तम करने की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ। अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम ने कहा कि हज़रत अली रज़ि० को क़त्ल कर देने की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ, फिर उन्होंने आपस में इस पर अहद व पैमान किया और इसके लिए यह स्कीम बनाई कि हममें से हर एक 17 रमज़ानुल मुबारक को जबकि यह लोग फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाने के लिए निकल रहे हों, हमला करके अपना काम करें, उस दौर में नमाज़ की इमामत ख़िलाफ़ते वक़्त या उनके मुक़र्रर किए हुए अमीर ही करते थे।

अपने बनाए हुए इस प्रोग्राम के मुताबिक़ बरक इब्ने अब्दुल्लाह हज़रत मुआविया रज़ि० के दारुल ख़िलाफ़ा दमिश्क़ रवाना हो गया और उ़मरो तमीमी मिस्र की तरफ़ जहाँ के अमीर व हाकिम हज़रत अम्र बिन अल्-आस रज़ि० थे और अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के दारुल ख़िलाफ़त कूफ़ा के लिए रवाना हो गया।

17 रमज़ानुल मुबारक की सुबह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाने के लिए हज़रत मुआविया रज़ि० तशरीफ़ ले जा रहे थे, बरक ने तलवार से

हमला किया, हज़रत मुआविया रज़ि० को कुछ महसूस हो गया और उन्होंने दौड़कर अपने को बचाना चाहा फिर भी बरक की तलवार से उनकी सुरैन पर गहरा ज़ख़्म आ गया, बरक को गिरफ़्तार कर लिया गया (और बाद में क़तल कर दिया गया)। ज़ख़्म के इलाज के लिए तबीब बुलाया गया, उसने ज़ख़्म को देखकर कहा कि जिस तलवार का ज़ख़्म है, उसको ज़हर में बुझाया गया है, इसके इलाज की सूरत यह है कि गर्म लोहे से ज़ख़्म को दाग़ा जाए इस सूरत में उम्मीद है कि ज़हर सारे जिस्म में नहीं फैल सकेगा। दूसरी सूरत यह है कि मैं आपको ऐसी दवा तैयार करके पिलाऊं जिसका असर यह होगा कि उसके बाद आपकी कोई औलाद न हो सकेगी। हज़रत मुआविया रज़ि० ने फ़रमाया कि गरम लोहे के दाग़ को तो मैं बर्दाश्त न कर सकूंगा इसलिए मुझे वह दवा तैयार करके पिला दी जाए, मेरे लिए दो बेटे यज़ीद और अब्दुल्लाह काफ़ी हैं। ऐसा ही किया गया और हज़रत मुआविया रज़ि० सेहतयाब हो गये।

उमरो तमीमी अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ हज़रत उमर बिन अल्-आस रज़ि० को ख़त्म करने के लिए मिस्र पहुँच गया था लेकिन अल्लाह की मर्ज़ी कि 17 रमज़ान की रात में हज़रत उमर बिन अल्-आस रज़ि० को ऐसी शदीद तक्लीफ़ हुई कि वह फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाने मस्जिद में नहीं हो सके थे, उन्होंने एक दूसरे साहब ख़ारजा बिन हबीब को हुक्म दिया कि वह उनकी जगह मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ाएं, चुनांचे वह आए और नमाज़ पढ़ाने के लिए इमाम के मुसल्ले पर खड़े हुए, तो अमरो ने उनको उमर बिन अल्-आस रज़ि० समझकर तलवार से वार किया वह वहीं शहीद हो गये, अम्र को गिरफ़्तार कर लिया गया, लोग उस

को पकड़कर मिस्र के अमीर व हाकिम हज़रत अम्र बिन अल्-आस रज़ि० के पास ले गये, उसने देखा कि लोग उनको अमीर के लफ़्ज़ से पुकार रहे हैं, उसने लोगों से पूछा कि यह कौन हैं? बताया गया कि यह मिस्र के अमीर व हाकिम हज़रत उमर बिन अल्-आस रज़ि० हैं, उसने कहा मैंने जिस शख़्स को क़त्ल किया वह कौन था? बतलाया गया वह ख़ारजा इब्ने हबीब थे, उस बदबख़्त ने हज़रत उमर बिन अल्-आस रज़ि० को मुख़ातिब करके कहाः ऐ फ़ासिक़! मैंने तो तुझको क़तल करने का इरादा किया था, हज़रत अम्र बिन अल्-आस रज़ि० ने फ़रमायाः तूने इरादा किया था और अल्लाह तआला का वह इरादा था जो हो गया, उसके बाद ख़ारजा इब्ने हबीब के क़िसास में अमरो तमीमी को क़तल कर दिया गया।

इनमें तीसरा ख़बीस तरीन और शक़ी तरीन बद्बख़्त अब्दुर्रहमान इब्ने मुल्जिम अपने प्रोग्राम के मुताबिक़ कूफ़ा पहुँच गया था तो वह 17 रमज़ान को फ़ज्र से पहले मस्जिद के रास्ते में छिपकर बैठ गया, हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० का मामूल था कि वह घर से निकलकर अस्-सलात अस्-सलात पुकारते हुए और लोगों को नमाज़ के लिए बुलाते हुए मस्जिद तशरीफ़ लाते। उस दिन भी रोज़ाना की तरह तशरीफ़ ला रहे थे कि बद्-बख़्त इब्ने मुल्जिम ने सामने से आकर अचानक अपकी पेशानी पर तलवार से वार किया और भागा लेकिन पीछा करके लोगों ने उसे पकड़ लिया और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि० के सामने पेश किया गया। आप रज़ि० ने अपने बड़े साहबज़ादे हज़रत हसन रज़ि० से फ़रमाया कि अगर मैं ज़िन्दा रहा तो इस क़ातिल इब्ने मुल्जिम के बारे में जैसा चाहूँगा फ़ैसला करूंगा, चाहूंगा तो माफ़ कर दूंगा,

और चाहूँ तो क़िसास में क़त्ल करा दूंगा और अगर मैं इसमें मर जाऊँ तो फिर इसको शरई क़ानूने क़िसास के मुताबिक़ क़त्ल कर दिया जाए लेकिन मुसूला न किया जाए (यानी हाथ-पाँव वग़ैरह दूसरे हिस्से अलग-अलग न काटे जाएं) क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि कट-खने कुत्ते को भी मारा जाए तो उसको मुसूला न किया जाए। हज़रत अली मुर्तजा रज़ि० ख़बीस इब्ने मुल्जिम की इस चोट के नतीजे में वासिले बहक़ हो गये तो हज़रत हसन रज़ि० के हुक्म से इस बदबख़्त को क़त्ल किया गया और ग़ैज़ व ग़ज़ब से भरे हुए लोगों ने उसकी लाश को जला भी दिया। —मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 8, पेज 399

दो शरीकों का अजीब क़िस्सा

दो शख़्स आपस मे शरीक थे। उनके पास आठ हज़ार अशर्फ़ियाँ जमा हो गई, एक चूंकि पेशा हरफ़े से वाक़िफ़ था और दूसरा नावाक़िफ़ था इसलिए उस जानने वाले ने नावाक़िफ़ से कहा कि अब हमारा निबाह मुश्किल है, आप अपना हक़ लेकर अलग हो जाइये, आप काम काज से नावाक़िफ़ हैं। चुनांचे दोनों ने अपने अपने हिस्से अलग-अलग कर लिए और अलग-अलग हो गये। फिर उस हरफ़े वाले ने बादशाह के मर जाने के बाद उसका शाही महल एक हज़ार दीनार में ख़रीदा और अपने साथी को बुलाकर उसे दिखाया और कहा बतलाओ मैंने कैसी चीज़ ख़रीदी? उसने बड़ी तारीफ़ की और यहाँ से बाहर चला, अल्लाह तआला से दुआ की और कहा ख़ुदाया! इस मेरे साथी ने तो एक हज़ार दीनार का क़सर दुनयवी ख़रीद लिया है और मैं तुझसे जन्नत का महल चाहता हूँ। मैं तेरे नाम पर तेरे मिस्कीन बन्दों पर एक हज़ार

दीनार ख़र्च करता हूँ। चुनाँचे उसने एक हज़ार दीनार अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिए। फिर उस दुनियादार शख़्स ने एक ज़माने के बाद एक हज़ार दीनार ख़र्च करके अपना निकाह किया दावत पर उस पुराने साथी को भी बुलाया और उससे ज़िक्र किया कि मैंने एक हज़ार दीनार ख़र्च करके इस औरत से शादी की है। उसने उसकी भी तारीफ़ की। बाहर आकर अल्लाह तआला की राह में एक हज़ार रुपये दिए और अल्लाह तआला से अर्ज़ कि की ऐ बारे इलाहा! मेरे साथी ने इतनी ही रक़म ख़र्च करके यहाँ की एक औरत हासिल की है और मैं इस रक़म से तुझसे हुरे ऐन चाहता हूँ और फिर वह रक़म अल्लाह की राह में सद्क़ा कर दी। फिर कुछ मुद्दत के बाद उस दुनियादार ने उसको बुलाकर कहा कि दो हज़ार के दो बाग़ मैंने ख़रीदे हैं, देख लो कैसे हैं? उसने देखकर बहुत तारीफ़ की और बाहर आकर अपनी आदत के मुताबिक़ जनाब बारी तआला में अर्ज़ कि की ख़ुदाया! मेरे साथी ने दो हज़ार के दो बाग़ यहाँ के ख़रीदे हैं। मैं तुझसे जन्नत के दो बाग़ चाहता हूँ और यह दो हज़ार दीनार तेरे नाम पर सद्क़ा हैं। चुनांचे इस रक़म को मुस्तहिक़ों में तक़्सीम कर दिया फिर जब फ़रिश्ता उन दोनों को फ़ौत करके ले गया, उस सद्क़ा करने वाले को जन्नत के महल में पहुँचा दिया, जहाँ पर एक हसीन औरत भी उसे मिली और उसे दो बाग़ भी दिए गये और वह नेमतें मिली जिन्हें ख़ुदा आला के अलावा और कोई नहीं जानता, तो उस वक़्त अपना वह साथी याद आ गया। फ़रिश्ते ने बतलाया कि वह तो जहन्नम में है और तुम अगर चाहो तो तो झाँककर उसे देख सकते हो। उसने जब उसे जहन्नम के अन्दर जलता देखा तो उससे कहा कि क़रीब था कि तू मुझे भी चकमा दे जाता और यह तो रब तआला की

मेहरबानी हुई कि मैं बच गया। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 367-368

ऐ बारी तआला हमारे दिल की खिड़की खोल दे

शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह० ने एक हिकायत बयान की है जिसको मौलाना रूमी रह० ने नक़ल फ़रमाया है कि एक मर्तबा रूमियों और चीनियों के दर्मियान झगड़ा हुआ, रूमियों ने कहा हम अच्छे सन्नाअ और कारीगर हैं। चीनियों ने कहाः हम भी हैं। बादशाह के सामने यह मुक़द्दमा पेश हुआ। बादशाह ने कहाः तुम अपनी सफ़ाई दिखाओ। इस वक़्त सन्नाईयों का मवाज़ना करके फ़ैसला किया जाएगा और उसकी सूरत यह की गई कि बादशाह ने एक मकान बनवाया और उसके दर्मियान पर्दे की एक दीवार खड़ी कर दी गई। चीनियों से कहा कि आधे मकान में तुम अपनी कारीगरी दिखाओ और रूमियों से कहा कि दूसरे आधे में तुम आनी सन्नाई का नमूना पेश करो। चीनियों ने तो दीवार पर पलस्तर करके तरह-तरह के बेल-बूटे और फूल पत्ते, रंग-बिरंग के बनाए और अपने हिस्से के कमरे को अलग-अलग नक़्श व निगार और रंगा-रंग बेल-बूटे से गुल व गुलज़ार बना दिया। इधर रूमियों ने दीवार पर पलास्तर करके एक भी फूल पत्ता नहीं बनाया और न ही कोई एक भी रंग लगाया बल्कि दीवार के पलास्तर को सैक़ल करना शुरू कर दिया और इतना शफ़्फ़ाफ़ और चमकदार कर दिया कि उसमें शीशे की तरह सूरत नज़र आने लगी। जब दोनों ने अपनी अपनी कारीगरी और सन्नाई ख़त्म कर ली तो बादशाह को ख़बर दी। बादशाह आए और हुक्म दिया कि दर्मियान की दीवार निकाल दी जाए, जैसे ही दीवार बीच से हटी, चीनियों की वह तमाम नक़्क़ाशी और गुलकारी रूमियों की दीवार

में नज़र आने लगी और वह तमाम बेल बूटे रूमियों की दीवार पर मुन्अकिस हो गये जिसे रूमियों की सैक़ल करके आईना बना दिया था। बादशाह सख़्त हैरान हुआ कि किसके हक़ में फ़ैसला दे क्योंकि एक ही क़िस्म के नक़्श व निगार दोनों तरफ़ नज़र आ रहे थे। आख़िरकार उसने रूमियों के हक़ में फ़ैसला दिया कि उनकी सन्नाई आला है।

क्योंकि उन्होंने अपनी सन्नाई भी दिखाई और साथ ही चीनियों की कारीगरी भी छीन ली।

मौलाना रूम ने इस क़िस्से को नक़ल करके आख़िर में नसीहत के लिए फ़रमाया कि ऐ अज़ीज़! तू अपने दिल पर रूमियों की सन्नाई जारी कर, यानी अपने दिल को रियाज़त व मुजाहिदे से माँझकर इतना साफ़ कर ले कि तुझे घर बैठे ही दुनिया के सारे नक़्श व निगार अपने दिल में नज़र आने लगें।

यानी तो अपने दिल की खिड़कियों को खोल दे कि इसमें से हर क़िस्म का माद्दी मैल कुचैल निकाल फैंक और उसे इल्मे इलाही की रौशनी से मुनव्वर कर दे तो तुझे दुनिया व आख़िरत के हक़ाइक़ व मआरिफ़ घर बैठे ही नज़र आने लगेंगे। ऐसे दिल साफ़ी पर बे उस्ताद व किताब बराहे रास्त उलूम ख़ुदावन्दी का फ़ैज़ान होता है और वह रौशन से रौशन तर हो जाता है।

हज़रत ज़ाहिर रज़ि० का क़िस्सा

शमाइल तिर्मिज़ी के अन्दर एक सहाबी हज़रत ज़ाहिर बिन हिज़ाम अश्जई रज़ि० का एक वाक़िआ बहुत ख़ूबसूरत अंदाज़ से नक़ल किया गया है। यह देहात के रहने वाले थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास देहाती तोहफ़ा लाया करते थे,

सब्ज़ी-तरकारी वग़ैरह जो भी देहात में उनको हासिल हो तो हुज़ूर सल्ल के लिए तोहफ़े में लाया करते थे। आप उनका तोहफ़ा बहुत ख़ुशी के साथ क़बूल फ़रमा लिया करते थे और सूरत व शक्ल के ऐतिबार से क़बूले सूरत नहीं थे लेकिन उनकी सीरत और कमाले ईमान आला दर्जे का था। जब यह हुज़ूर सल्ल० के पास से देहात वापस जाते थे तो आप सल्ल० भी उनको कुछ तोहफ़ा दिया करते थे। एक बार मदीना के बाज़ार में हज़रत ज़ाहिर रज़ि० अपना सामान बेच रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने चुपके से उनके पाछे की तरफ़ से आकर अचानक उनकी आँखों को बन्द करके दबा लिया, अब तो उनको नज़र नहीं आया और मालूम भी नहीं कि कौन है। उनके ज़हन में यह बात है कि आम लोगों में से कोई है, ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाकर कहने लगे कि यह कौन है, मुझे छोड़ दो कन्खियों से हुज़ूर सल्ल० को देखकर पहचान लिया। जब हुज़ूर सल्ल० को पहचान लिया तो बजाए छोड़ दो कहने के अपनी पीठ को हुज़ूर सल्ल० के सीने से चिपका दिया कि महबूबे हक़ीक़ी के सीने से मेरे बदन का लग जाना ख़ैर व बरकत है। इसके बाद हुज़ूर कहने लगे कौन ख़रीदेगा? तो हज़रत ज़ाहिर रज़ि० ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल०! अगर आप मुझे बेचेंगे तो निहायत घाटा होगा, मुझ जैसे बदसूरत को बेचने से क्या पैसा मिल सकेगा, तो इस पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि आप अल्लाह के यहाँ कम क़ीमत और सस्ते नहीं हैं बल्कि अल्लाह के नज़दीक आप बड़े क़ीमती हैं। इस वाक़िए से हर शख़्स को इबरत हासिल करने की ज़रूरत है कि अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत का मदार इंसानों के दिलों पर है जिसने तक़वे का आला मक़ाम हासिल कर लिया है उसने हुब्बे ख़ुदा और हुब्बे रसूल का भी आला मक़ाम

हासिल कर लिया। हदीस में आता है कि हज़रत उसामा रज़ि० बहुत काले थे मगर हज़रात सहाबा में हुज़ूर सल्ल० को हज़रत उसामा रज़ि० की मुहब्बत सबसे ज़्यादा थी। एक बार हज़रत आईशा रज़ि० से फ़रमाया कि तुम उससे मोहब्बत करो क्योंकि मैं उससे मुहब्बत करता हूँ। —शामाइल तिर्मिज़ी, पेज 16

पन्द्रह क़िस्म की बुराइयाँ उम्मत में नमूदार होंगी

जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने एक बाद उम्मत को मुख़ातिब करके फ़रमाया जब मेरी उम्मत में पन्द्रह क़िस्म की बुराइयाँ आएंगी तो उम्मत की ख़ैर नहीं और बलाएँ और आसमानी मुसीबतें इस तरह एक के बाद एक आना शुरू हो जाएंगी जैसे तस्बीह का धागा टूट जाने की वजह से तसलसुल के साथ एक के बाद दूसरे सारे दाने निकल जाते हैं इसी तरह तसलसुल के साथ बलाएँ, हादसे, आसमानी आफ़तें आने लगेंगी, इसके बारे में पहले हदीस शरीफ़ मुलाहिज़ा फ़रमाइये, उसके बाद इसके बारे में इन्शा अल्लाह इब्रतनाक मालूमात सामने आ जाएंगी।

عن علی بن ابی طالب ﷺ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم اذا فعلت امتی خمس عشرۃ خصلۃ حل بہا البلاء قیل وما ھی یا رسول قال (۱) اذا کان المغنم دولاً. (۲) والامانۃ مغنماً. (۳) والزّکوۃ مغرماً. (۴) واطاع الرّجل زوجتہٗ. (۵) وعق امّہٗ. (۶) وبرّ صدیقہٗ. (۷) وجفا اباہ. (۸) وارتفعت الاصوات فی المساجد. (۹) وکان زعیم القوم ارذلہم. (۱۰) واکرم الرّجل مخافۃ شرہ. (۱۱) وغربت الخمور. (۱۲) ولبس الحریر. (۱۳) واتخذت القیان. (۱۴) والمعارف.

(١٥) ولعن اخر هذه الامّة اوّلها فليرتقبوا عند ذٰلك ريحًا حمراء اَوْ خسفًا اَوْ مسخًا.

(وفی روایة) او قذفًا وايات تتابع كنظام بال قطع سلكهٗ فتتابع.

(तिर्मिज़ी, जिल्द 2, पेज 144, अल्-हदीस 1)

हज़रत अली रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जब मेरी उम्मत पन्द्रह क़िस्म की बुराइयों का इर्तिकाब करेगी तो उम्मत पर बला और बुसीबतें आ पड़ेंगी तो पूछा गया कि या रसूलुल्लाह सल्ल० वह क्या क्या बुराइयाँ हैं? तो फ़रमाया :

1. जब माले ग़नीमत को अपने लिए दौलत समझ लिया जाएगा।
2. और लोगों की अमानत को अपने लिए ग़नीमत समझ लिया जाएगा।
3. और ज़कात की अदायगी को तावान समझ लिया जाएगा।
4. और आदमी अपनी बीवी की इताअत करने लगेगा।
5. और आदमी अपनी माँ की नाफ़रमानी करेगा।
6. और आदमी अपने दोस्त के साथ नेकी और रवादारी का मामला करेगा।
7. और अपने बाप के साथ सख़्ती और बदअख़्लाक़ी और नाफ़रमानी करेगा।
8. और मस्जिदों में बाज़ार के शोर की तरह शोर मचाया जाएगा, इस पर रोक थाम न होगी।
9. और लोगों का नुमाइंदा और सरबराह उनमें सबसे घटिया कम इल्म, बे-अक़ल और बे-दीन, रज़ील-कमीन शख़्स होगा।

10. आदमी का ऐज़ाज़ व इक्राम उसकी शरारत से बचने के लिए किया जाएगा।
11. लोगों में शराब की कसूरत होगी।
12. मर्द भी रेशम के कपड़े पहनने लगेंगे।
13. नाचने गाने वाली रंडियों के नाच का शौक़ होगा।
14. गाने और बजाने की चीज़ें आम हो जाएंगी और उसी का शौक़ होगा।
15. इस उम्मत के आख़िर के लोग गुज़रे हुए लोगों पर लअ्न-तअ्न करेंगे। जब यह सब आसार ज़ाहिर होंगे तो उस वक़्त सुर्ख़ आंधी, ज़लज़ला, ज़मीन के धंस जाने, शक्ल बिगड़ जाने, पत्थरों की बारिश का इन्तिज़ार करो और उन निशानियों का इन्तिज़ार करो जो एक के बाद दूसरे इस तसलसुल के साथ आने वाली हैं कि जिस तरह हार की लड़ी टूट जाने से तसलसुल से मोती निकल जाते हैं।

—तिर्मिज़ी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 22

पाँच चीज़ों की मुहब्बत पाँच चीज़ों को भुला देगी

एक ज़माना ऐसा आने वाला है जिसमें लोगों को पाँच चीज़ों से मुहब्बत होगी और पाँच चीज़ों को भुला देंगेः

1. दुनिया से मुहब्बत करेंगे और आख़िरत को भुला देंगे।
2. माल से मुहब्बत करेंगे और हिसाब व किताब को भुला देंगे।
3. मख़्लूक़ से मुहब्बत करेंगे और ख़ालिक़ को भुला देंगे।
4. गुनाह की चीज़ों से मुहब्बत करेंगे, तौबा को भुला देंगे।
5. बड़े-बड़े महल और कोठियों से मुहब्बत करेंगे और क़ब्र को

भुला देंगे। —मकाशफ़तुल क़ुलूब, पेज 34

अल्लाह तआला हम तमाम ही मुसलमानों को अपनी और अपने हबीब जनाब रसूलुल्लाह की सच्ची मुहब्बत नसीब फ़रमाए। आमीन!

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा को अंधेरे में सूई मिल गई

हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कन्ज़ुल आमाल में एक रिवायत मरवी है। वह फ़रमाती हैं कि मैंने हज़रत हफ़सा बिन्त रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हा से आरयत पर एक सूई ले रखी थी, उससे में हुज़ूर सल्ल० का कपड़ा सिया करता थी। अंधेरी रात में वह सूई मेरे हाथ से गिर गई। बहुत तलाश की नहीं मिली, जब हुज़ूर अकरम सल्ल० घर में तशरीफ़ लाए तो आप सल्ल० के चेहर-ए-अनवर के नूर की किरनों से सूई दिखाई देने लगी। मैंने हंसकर सूई उठा ली। देखिए आपके हुस्न का क्या आलम है कि हुस्ने हसी और हुस्ने सादी दोनों आप सल्ल० में जमा हैं। कि आप सल्ल० का हुस्न व जमाल तमाम इंसानों के हुस्न से फ़ाइक़ है, और किसी को ऐसा हुस्न अता नहीं हुआ है जिसके हुस्न के ज़रिए से तारीक रात में चमक और रौशनी पैदा हो जाती है। हदीस की इबारत मुलाहिज़ा फ़रमाइये।

عن عائشةؓ قالت استعرتُ من حفصة بنت رواحةؓ إبرةً كنت اخيط بها ثوب رسول اللهﷺ فسقطت عنی الابرة فطلبتها فلم اقدر عليها. فدخل رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم فتبينت الا برة بشعاع نور وجهها

فضحكت الحديث.

हुस्ने यूसुफ़ दमे ईसा यर बैज़ा दारी
आंचेह ख़ूबाँ दारन्द तू तन्हादारी

हज़रत आईशा रज़ि० फ़रमाती हैं।

لنا شمسٌ وللآفاقِ شَمْسٌ وشمسِى اَفْضَلُ مِنْ شَمْسِ السَّمَاءِ

(हमारा एक सूरज है और दुनिया वालों का भी एक सूरज है, और हमारा सूरज आसमान के सूरज से अफ़ज़ल है) जब आप सल्ल० के अन्दर सबबे जमाल बदर-जए उत्तम मौजूद है तो उसकी वजह से आप सल्ल० से तमाम मोमिनीन को दुनिया व माफ़ीहा से ज़्यादा मुहब्बत होनी चाहिए।

—मुन्तख़ब कन्ज़ुल आमाल अली हामिश, मुसनद इमाम अहमद बिन हम्बल, हिस्सा 3, पेज 29

बे-अमल आलिम जन्नत की ख़ुश्बू से महरूम रहेगा

عَنْ اَبِى هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ تَعَلَّمَ عِلْمًا مِمَّا يُبْتَغٰى بِهٖ وَجْهُ اللّٰهِ لَا يَتَعَلَّمُهٗ اِلَّا لِيُصِيْبَ بِهٖ عَرَضًا مِنَ الدُّنْيَا لَمْ يَجِدْ عَرَفَ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَعْنِى رِيْحَهَا.

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह इल्म जिससे अल्लाह की रिज़ा चाही जाती है (यानी दीन और किताबे सुन्नत का इल्म) अगर इसको कोई शख़्स दुनिया की दौलत कमाने के लिए हासिल करे तो वह क़ियामत में जन्नत की ख़ुश्बू से भी महरूम रहेगा।

—मुस्नद अहमद, सुनन अबी दाऊद, इब्ने माजा

عَنْ اِبْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ تَعَلَّمَ الْعِلْمَ لِغَيْرِ اللّٰهِ وَاَرَادَ بِهٖ غَيْرَ اللّٰهِ فَلْيَتَبَوَّاْ مَقْعَدَهٗ مِنَ النَّارِ.

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस किसी ने इल्मे दीन अल्लाह की रिज़ा के लिए नहीं बल्कि ग़ैर अल्लाह के लिए (यानी अपनी दुनयवी और नफ़सानी इग़राज़ के लिए) हासिल किया वह जहन्नम में अपना ठिकाना बना ले। —जामेअ तिर्मिज़ी

अल्लाह तआला ने दीन का इल्म अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के ज़रिए और आख़िर में सैयदना हज़रत मुहम्मद ख़ातिमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अपनी आख़िरी मुक़द्दस किताब क़ुरआन मजीद के ज़रिए इसलिए नाज़िल फ़रमाया कि उसकी रौशनी और रहनुमाई में उसके बन्दे अल्लाह की रिज़ा के रास्ते पर चलते हुए उसके दारे रहमत जन्नत तक पहुँच जाएं, अब जो बदनसीब आदमी इस मुक़द्दस इल्म को अल्लाह तआला की रिज़ा व रहमत के बजाए अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात की तक्मील और दुनयवी दौलत कमाने का वसीला बनाता है और उसी के वास्ते उसी की तहसील करता है, वह अल्लाह तआला के नाज़िल फ़रमाए हुए और रसूलुल्लाह सल्ल० के लाए हुए उस मुक़द्दस इल्म पर ज़ुल्मे अज़ीम करता है और यह शदीद तरीन मआसियत है। और इन हदीसों में रसूलुल्लाह सल्ल० ने इत्तिला दी है कि उसकी सज़ा जन्नत की ख़ुशबू से महरूमी और जहन्नम का अज़ाबे अलीम है। अल्लाहुम्मह फ़िज़ना।

عَنْ جُنْدُبٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الْعَالِمِ الَّذِىْ يُعَلِّمُ النَّاسَ الْخَيْرَ وَيَنْسٰى نَفْسَهٗ كَمَثَلِ السِّرَاجِ يُضِيْءُ النَّاسَ وَيُحَرِّقُ

نَفْسَهٗ.

हज़रत जुन्दुब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि उस आलिम की मिसाल जो दूसरे लोगों को नेकी की तालीम देता है और अपने को भुले रहता है उस चिराग़ की सी है जो आदमियों को तो रौशनी देता है लेकिन अपनी हस्ती को जलाता रहता है।

—हवाला मोअ्जमे कबीर, तबरानी, मुख़्तारहुल ज़िया अल्-मक़्दसी

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ ﷺ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَشَدُّ النَّاسِ عَذَابًا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ عَالِمٌ لَمْ یَنْفَعْهُ عِلْمُهٗ.

(रिवाह अल्-तियालिसी फी मुस्नदह बिन मन्सूर फ़ी सुनन इब्ने अदी फ़िल कामिल वल्-बैहक़ी फ़ी शौबुल ईमान)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे सख़्त अज़ाब उस आलिम को होगा जिसको उसके इल्मे दीन ने नफ़ा नहीं पहुंचाया (यानी उसने अपनी अमली ज़िन्दगी को इल्म को ताबेअ नहीं बनाया।)

कुछ गुनाह ऐसे हैं जिनको बिला तफ़रीक़ मोमिन व काफ़िर सब ही इंसान शदीद व संगीन जुर्म और सख़्त सज़ा का मुस्तौजिब समझते हैं जैसे डाका, ख़ूने नाहक़, ज़िना बिल्-जब्र, चोरी, रिश्वत सतानी, यतीमों और बेवाओं और कमज़ारों पर ज़ुल्म व ज़ियादती और उनकी हक़-तल्फ़ी जैसे ज़ालमाना गुनाह। लेकिन बहुत-से गुनाह ऐसे हैं जिनको आम इंसानी निगाह इस तरह शदीद व संगीन नहीं समझती लेकिन अल्लाह के नज़दीक और फ़िल्-हक़ीक़त वह उन बड़े फ़वाहिश ही की तरह या उनसे भी ज़्यादा संगीन हैं। शिर्क व कुफ़्र भी ऐसे ही गुनाह हैं और इल्मे दीन (जो नबुव्वत की मीरास है)

इसका बजाए दीनी मक़ासिद के दुनयवी कामों के लिए सीखना और दुनिया कमाने का वसीला बनाना, अला हाज़ा अपनी-अपनी अमली ज़िन्दगी को उसके ताबेअ न बनाना बल्कि उसके ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारना यह भी उस क़बील से हैं। पहली क़िस्म की मआसियतों में मख़्लूक़ का मख़्लूक़ पर ज़ुल्म होता है। इसलिए उसको ख़ुदा को न जानने वाला काफ़िर भी महसूस करता और ज़ुल्म व पाप समझता है। लेकिन दूसरी क़िस्म के गुनाहों में अल्लाह और रसूलुल्लाह और उनकी हिदायत व शरीअत और उसके मुक़द्दस इल्म की हक़-तल्फ़ी और उन पर एक तरह का ज़ुल्म होती है, इसकी संगीनी और शिद्दत को वही बन्दे महसूस कर सकते हैं जिनके दिल अल्लाह और रसूलुल्लाह और दीने शरीअत और उनके इल्म की अज़मतों से आशना हों। हक़ीक़त यह है कि इल्मे दीन के बजाए रिज़ाए इलाही और अज्रे-उख़्रवी के दुनयवी मक़्सद के लिए सीखना और उसको दुनिया कमाने का ज़रिया बनाना, इसी तरह ख़ुद उसके ख़िलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ारना, शिर्क व कुफ़्र और निफ़ाक़ के क़बील के गुनाह हैं, इसलिए उनकी सज़ा वह है जो ऊपर दी गई हदीसों में बयान फ़रमाई गई है। (यानी जन्नत की ख़ुश्बू तक से महरूम रहना और दोज़ख़ का अज़ाब) अल्लाह तआला हामीलीने इल्म को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि रसूलुल्लाह सल्ल० के यह इर्शादात व तम्बीहात हमेशा उनके सामने रहें।

अल्लाह तबारक व तआला ने 1000 क़िस्म की मख़्लूक़ात पैदा की हैं

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत

उ़मर रज़ि० के ज़मान-ए-ख़िलाफ़त में एक साल टिड्डिया कम हो गई। हज़रत उ़मर रज़ि० ने टिड्डियों के बारे में बहुत पूछा लेकिन कहीं से कोई ख़बर न मिली। वह इससे बहुत परेशान हुए, चुनांचे उन्होंने एक सवार उधर यानी यमन भेजा और दूसरा शाम और तीसरा इराक़ भेजा ताकि यह सवार पूछकर आएं कि कहीं टिड्डी नज़र आई है या नहीं। जो सवार यमन गया था वह वहाँ से टिड्डियों की एक मुट्ठी लेकर आया और लाकर हज़रत उ़मर रज़ि० के सामने डाल दीं। हज़रत उ़मर रज़ि० ने जब उन्हें देखा तो तीन बाा अल्लाहु अक्बर कहा, फिर फ़रमाया मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना कि अल्लाह तआला ने एक हज़ार मख़्लूक़ पैदा की है छः सौ समन्दर में और चार सौ ख़ुश्की में और इनमें से सबसे पहले टिड्डी ख़त्म होगी, जब टिड्डी ख़तम हो जाएंगी तो फिर और मख़्लूक़ात भी ऐसे आगे पीछे हलाक होनी शुरू हो जाएगी जैसे मोतियों की लड़ी का धागा टूट गया हो।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 131, हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 82

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से देहातियों के अजीब व ग़रीब सवालात

हज़रत सलीम बिन आमिर रह० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के सहाबा कहा करते थे कि अल्लाह तआला हमें देहाती लोगों के सवालात से बड़ा नफ़ा पहुँचाते हैं। एक दिन एक देहाती आया और उसने कहा या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने जन्नत में एक ऐसे पेड़ का ज़िक्र किया है जिससे इंसान को तक्लीफ़ होती है। हुज़ूर सल्ल० ने पूछाः वह कौन-सा पेड़ है? उसने कहा बेरी का पेड़ क्योंकि उसमें तक्लीफ़ देह कांटे होते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने

फ़रमायाः क्या अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया : فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ (सूरः वाक़िआ, आयत 28) तर्जुमा : "वहां उन बाग़ों में होंगे जहाँ बेख़ार बेरिया होंगी।" अल्लाह तआला ने उसके कांटे दूर कर दिए हैं और हर कांटे की जगह फल लगा दिया है। उस पेड़ में ऐसे फल लगेंगे कि हर फल में बहत्तर क़िस्म के ज़ाइक़े होंगे और हर ज़ाइक़ा दूसरे ज़ाइक़े से अलग होगा।

हज़रत उतबा बिन अब्दे सलीमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के पास बैठा हुआ था कि इतने में एक देहाती आदमी आया। उसने कहाः या रसूलुल्लाह सल्ल०! मैंने आप सल्ल० से जन्नत में एक ऐसे पेड़ का ज़िक्र सुना है कि मेरे ख़याल में उससे ज़्यादा काँटे वाला पेड़ कोई और नहीं होगा यानी बबूल का पेड़। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह तआला उसके हर कांटे की जगह भरे हुए गोश्त वाले बकरे के ख़सिये के बराबर फल लगा देंगे और उस फल में सत्तर क़िस्म के ज़ाइक़े होंगे और हर ज़ाइक़ा दूसरे से अलग होगा।

हज़रत उतबा बिन अब्दे सलीमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक देहाती हुज़ूर की ख़िदमत में आया और उसने हुज़ूर सल्ल० से हौज़ के बारे में पूछा और जन्नत का ज़िक्र किया फिर उस देहाती ने कहा क्या उसमें फल भी होंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हाँ उसमें एक पेड़ है जिसे तूबा कहा जाता है। रावी कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने किसी और चीज़ का भी ज़िक्र किया लेकिन मुझे मालूम न हो सका कि वह क्या चीज़ थी? उस देहाती ने कहाः हमारे इलाक़े के किस पेड़ की तरह है। हज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः तुम्हारे इलाक़े के किसी पेड़ की तरह नहीं, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः क्या तुम शाम गये हो? उसने कहा नहीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया

वह शाम के एक पेड़ की तरह है जिसको अख़रोट कहा जाता है, एक तने पर उगता है और उसके ऊपर वाली शाखें फैली हुई होती हैं फिर उस देहाती ने कहाः गुच्छा कितना बड़ा होगा? हुज़ूर ने फ़रमायाः स्याह सफ़ेद दागों वाला कौआ बग़ैर रुके एक महीने उड़कर जितना फ़ासला तै करता है वह गुच्छा उस फ़ासले के बराबर होगा। फिर उस देहाती ने कहा कि उस पेड़ की जड़ कितनी मोटी होगी? आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारे घर वालों के ऊंटों में से एक जवान ऊंट चलना शुरू करे और चलते-चलते बूढ़ा हो जाये और बूढ़ा होने की वजह से उसकी हंसली टूट जाए फिर भी वह उसकी जड़ का एक चक्कर नहीं लगा सकेगा। फिर उस देहाती ने पूछा क्या जन्नत में अंगूर होंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः हाँ। उसने पूछा अंगूर का दाना कितना बड़ा होगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया क्या तेरे बाप ने कभी अपनी बकरियों में से बड़ा बकरा ज़िब्ह किया है? उसने कहाः जी हाँ किया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः फिर उसकी खाल उतारकर तेरी माँ को दे दी हो और उससे कहा हो कि इस खाल को हमारे लिए डोल बना दे? उस देहाती ने कहाः जी हाँ। (हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया वह दाना उस डोल के बराबर होगा) फिर उस देहाती ने कहा (जब दाना डोल के बराबर होगा) फिर तो एक दाने से मेरा और मेरे घर वालों का पेट भर जाएगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया हाँ, बल्कि तेरे सारे ख़ानदान का पेट भर जाएगा। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 66-67

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक देहाती ने आकर नबी-ए-करीम सल्ल० की ख़िदमत में अर्ज़ किया: या रसूलुल्लाह सल्ल०! क़ियामत के दिन मख़्लूक़ का हिसाब कौन लेगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः अल्लाह तआला। उस देहाती ने कहाः रब्बे

कअबा की क़सम! फिर तो हम नजात पा गये। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः ऐ देहाती कैसे? उसने कहा क्योंकि करीम ज़ात जब किसी पर क़ाबू पा लेती है तो माफ़ कर देती है।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 41

छः चीज़ों ज़ाहिर होने से पहले मौत बेहतर

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम्हारे सामने छः चीज़ें ज़ाहिर होने लगें तो इससे पहले ही तुम्हारे लिए दुनिया में ज़िन्दा रहने से मौत बेहतर होगी। इन चीज़ों के साथ ज़िन्दगी इंसानों की ज़िन्दगी न होगी, आप सल्ल० ने इन अलफ़ाज़ के साथ हदीस शरीफ़ को इर्शाद फ़रमाया हैः

عَنْ عَبَسَ الْغَفَارِىْ فَقَالَ اِنِّىْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ بادروا بالموت ستا. (١) اماءة السفهاء. (٢) وكثرة الشرط (٣) وبيع الحكم. (٤) واستخفافاً بالدم. (٥) وقطيعة الرّحم. (٦) ونشاءً ا يتخذون القران مزامير يقدمونه يغنيهم وان كان اقل منهم فقهاً.

तर्जुमा :– हज़रत अबस गिफ़ारी रज़ि० से मरवी है कि वह फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से फ़रमाते हुए सुना है कि छः चीज़ों पर मौत के ज़रिए से सबक़त कर जाओ।

1. बेवक़ूफ़ों और नाअहलों की इमारत और सरबराही पर।
2. पी.ए.सी और सिपाहियों की कस्रत पर।
3. हाकिम के फ़ैसलों की फ़रोख़्तगी पर।
4. ख़ून-रेज़ी के मामूली समझे जाने पर।
5. रिश्ता नाता तोड़े जाने पर।
6. कम लड़कों की जमाअत पर मौत से सबक़त कर जाओ। जो क़ुरआन करीम को गाने-बजाने की चीज़ बना लेंगे, लोग

उनको गाने के लिए पेश करेंगे तो वह राग और गाने की आवाज़ में क़ुरआन सुनाएंगे।

चाहे वह इन लोगों के मुक़ाबले में अक़्ल व समझ के एतिबार से बहुत ही कम क्यों न हों। —मुस्नद अहमद बिन हम्बल, हिस्सा 30, पेज 494

इस हदीस पाक में जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छः क़िस्म की तबाहकुन चीज़ों की पेशीनगोई फ़रमाई है जिनसे उम्मत का हाल बदतर से बदतर हो जाएगा, समाज निहायत ख़राब हो जाएगा, इस्लाम का पूरा हुलिया बदल जाएगा। उस वक़्त के लिए आप सल्ल० ने फ़रमाया कि ऐसी ज़िन्दगी से मौत बेहतर हो जाएगी।

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आने वाला है जिसमें तुम्हारी हुकूमत का ज़िम्मेदार तुम्हारा लीडर निहायत रज़ील और ना-अहल होगा, न उसमें अक़्ल व समझ होगी और न ही इल्म व हुनर होगा।

और अद्ल व इंसाफ़ ख़त्म हो जाएगा तो ऐसे लोगों के साथ रहने से मौत बेहतर होगी। तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक हदीस में आया है कि आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे हुक्काम और लीडर तुममें सबसे घटिया और बदतरीन होंगे और कन्जूस लोग तुम्हारे मालदार होंगे और तुम्हारे मामलात औरतों के मशविरों से तै होने लगेंगे तो तुम्हारा दुनिया में ज़िन्दा रहने से मरकर क़ब्रों में दफ़न हो जाना ज़्यादा बेहतर होगा। —तिर्मिज़ी शरीफ़, हिस्सा 3, पेज 52

हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में पी.ए.सी पुलिस वाले ऐसे नहीं थे जैसे अब हैं। और पी.ए.सी और पुलिस की ज़रूरत सिर्फ़ मक़ामी हालात बेहतर करने के लिए और लोगों को ज़ुल्म व ज़ियादती से रोक-थाम करने के लिए पड़ती है। लेकिन अब तो फली नहीं फूट

रही। पी.ए.सी और पुलिस वालों की तरफ़ से ज़ुल्म व ज़्यादतियाँ शुरू हो जाती हैं। उनकी इन्तिहा नहीं रही रास्तों में गाड़ी घोड़ों की डाकूओं और चोरों की हिफ़ाज़त के लिए गश्ती ही पुलिस और पी.ए.सी को तैनात कर दिया जाए मगर बजाए हिफ़ाज़त करने के खुद ही मुसाफ़िरों और गाड़ी वालों को परेशान करते हैं और ख़ूब रिश्वत लेते हैं। आजकल एस.पी. ए.सी और पुलिस वालों की किस क़द्र तादाद है सब देख रहे हैं। तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जब ऐसी रज़ील तरीन पी.ए.सी और पुलिस वालों की बढ़ोत्तरी हो जाए तो दुनिया में ज़िन्दा रहने से मौत बेहतर है।

एक हदीस में आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मेराज शरीफ़ के मौक़े पर जहन्नम के अज़ाब में जिन लोगों को देखा गया था उनमें से दो क़िस्म के लोग इस वक़्त दुनिया में मौजूद नहीं हैं। वह आइंदा चलकर पैदा होंगे।

1. वह आरतें जो लिबास पहनने के बावजूद नंगी होंगी और रास्ते में निहायत संवर के बे-पर्दा चलेंगी, नंगे सर होने की वजह से चलते वक़्त उनके सर ऊम्दा तरीन ऊंटों के कोहान की तरह हिलते रहेंगे। ऐसी औरतों को जन्नत की बू तक नसीब न होगी।

2. वह पुलिस पी.ए.सी जिनके हाथों में जानवरों की दुम की तरह डंडे होंगे और उनसे ग़रीबों और निहत्तों को मारेंगे उनको भी जन्नत नसीब न होगी।—मुस्लिम शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 20, मिश्कात शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 30

आजकल के ज़माने में यह दोनों क़िस्म के लोग हम सबकी निगाहों में हैं।

आप सल्ल० ने फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आने वाला है

कि जिसमें हाकिमों और क़ाज़ियों के फ़ैसले बिकेंगे। जिसके पास पैसा होगा वह रिश्वत देकर अपने हक़ में फ़ैसला करवा लेगा। अदल व इंसाफ़ नाम का भी नहीं रहेगा, हक़ का फ़ैसला नहीं होगा बल्कि रिश्वत का फ़ैसला हुआ करेगा, हाकिम ख़ुद कहेगा कि हमारा क़लम तो यह बतला रहा है कि हम उसके हक़ में लिखेंगे जो मोटा लिफ़ाफ़ा पेश करेगा।

भाइयों! पहले तो हाकिम का पेशकार कलर्क वग़ैरह छुप-छुपाकर रिश्वत के लिए हाजत पैदा करता था मगर अब तो सबके सामने वहीं हाकिम की मौजूदगी में मामला तै किया जाता है। तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जब ऐसा वक़्त आ जाए तो दुनिया में ज़िन्दा रहने से मौत बेहतर होगी। आप सल्ल० ने तीन लोगों पर लानत फ़रमाई है:

1. रिशवत लेने वाले पर।
2. रिश्वत देने वाले पर।
3. इन दोनों के दर्मियान तर्जुमानी करने वाले पर।

عَنْ ثوبان ﷺ قال لعن رسول الله صلى الله عليه وسلم الراشى والمرتشى والرائش الّذى يمشى بينهما.

हज़रत सौबान रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले और दोनों के दर्मियान तर्जुमानी करने वाले पर आप सल्ल० ने लानत फ़रमाई है।

—मुस्नद अहमद, इमाम अहमद बिन हम्बल, हिस्सा 4, पेज 205।

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐसा ज़माना आने वाला है जिसमें क़त्ल व ग़ारतगरी और बात-बात पर ख़ून ख़राबा करना कोई अहम बात न होगी, ज़रा-ज़रा-सी बात पर चाक़ू, तलवार,

बन्दूक़ निकल आएंगी, मिनटों में क़त्ल व ख़ूनरेज़ी होने लगेगी। कौन किस पर हमला कर रहा है, किसको जान से मार रहा है इसकी कोई परवाह न होगी। जब ऐसा फ़ितना व फ़साद का ज़माना आ जाए तो दुनिया में रहने से मौत बेहतर होगी।

आप सल्ल० ने हिज्जतुल विदाअ के मौक़े पर हर खुतबे में बार-बार यह फ़रमाया कि तुम मेरे बाद एक दूसरे की गर्दन न मारना, इससे तुम पर ख़तरा है कि कुफ़्फ़ार व मुरतदीन बनकर इस्लाम से ही फिर जाओगे। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐसा ज़माना आने वाला है जिसमें अज़ीज़ व अक़ारिब के साथ हमदर्दी, सिल-ए-रहमी सब ख़त्म हो जाएगी, लोग अपने रिश्तेदारों और क़राबतदारों से दूर रहने में आफ़ियत और ख़ैर समझने लगेंगे। कुछ तो इसलिए दूर रहने लगेंगे कि उनको क़राबतदारों से बजाय हमदर्दी के तकलीफ़ और ईज़ा पहुंचती है और कुछ इसलिए दूरी इख़्तियार करेंगे ताकि मदद न करनी पड़े।

एक हदीस शरीफ़ में आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोगों से अल्लाह तआला बहुत सख़्त नाराज़ है, वे अबग़ज़ुन्नास इल्ललाह हैं।

1. अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने वाले।
2. क़राबतदारों के साथ बे-दर्दी से नाता तोड़ने वाले।
3. मुन्किर और बुराई के हुक्म करने वाले और भलाई से रोकने वाले।

—अत्तर्ग़ीब लिल्-मुन्ज़िरी, हिस्सा 3, पेज 227

एक और हदीस शरीफ़ में आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि इंसान दो काम करे। अल्लाह तआला की तरफ़ से तीन चीज़ों की बशारत है और वह काम ये हैं:

1. अल्लाह तआला का ख़ौफ़ ग़ालिब रहे तक़्वा व वरअ इख़्तियार करे।
2. रिश्तेदारों के साथ सिल-ए-रहमी का मामला करे।

जो यह दो काम करेगा उसके लिए यह तीन बशारतें हैं।

1. अल्लाह तआला उसकी उम्र में बरकत देगा, हयात दराज़ करेगा।
2. अल्लाह तआला उसके रिज़्क़ में फ़रावानी करेगा, कभी उसके यहाँ ग़ुरबत नहीं आएगी।
3. बुरी मौत से अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाएगा, इज़्ज़त की मौत देगा।

عن علي بن ابي طالب رضي الله عنه عن النبي صلى الله عليه وسلم قال من سره ان يمد له في عمره ويوسع له في رزقه ويدفع عنه ميتة السوء فليتق الله وليصل رحمه.

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० का इर्शाद पाक है कि जो शख़्स यह चाहे कि उसकी उम्र बढ़ जाए और उसके रिज़्क़ में वुस्अत पैदा कर दी जाए और उससे बुरी मौत को दूर कर दिया जाए तो चाहिए कि अल्लाह से डरे, तक़वा इख़्तियार करे और चाहिए कि सिल-ए- रहमी का आदी बन जाए। —शौबुल ईमान लिल्-बैहक़ी, हिस्सा 12, पेज 219

आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आएगा कि उसमें कुछ नौजवान कम उम्र लड़कों की जमाअत पैदा होगी, न उनमें अक़ल व दानाई होगी और न ही उनमें इल्म होगा, वह क़ुरआन करीम को गाने-बजाने की आवाज़ में लोगों को सुनाएंगे और खेल-तमाशे की तरह देखने और सुनने के लिए लोग जमा हो

जाएंगे, उनमें से किसी शख़्स में यह दाईया न होगा कि क़ुरआन सुनकर उसके मुताबिक़ अमल करे। आजकल के ज़माने में होटलों और चौराहों और दुकानों में उम्दा तरीन पढ़ने वाले की क़िराअत केसिटों में चालू कर दी जाती है और दूर-दूर तक उसकी आवाज़ पहुंचती है और वहीं पर कोई सिग्रेट पी रहा है, और कोई चाय पी रहा है, और कोई बातें कर रहा है और कोई वाह-वाह कर रहा है तो क्या यह क़ुरआन करीम की सख़्त तरीन बे-अदबी और गुस्ताख़ी और तौहीन नहीं है? एक साहबे ईमान मुसलमान इसको कैसे बर्दाश्त कर रहा है? इसलिए जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब ऐसा ज़माने आ जाएगा तो तुम्हारे लिए दुनिया में ज़िन्दा रहने से मौत बेहतर होगी।

नमाज़ की बरकत से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की गर्दन का फोड़ा ठीक हो गया

हज़रत इब्ने उमरो रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की गर्दन का फोड़ा निकल आया। उन्होंने नमाज़ पढ़ी तो वह फ़ोड़ा नीचे उतरकर उनके सीने पर आ गया, हज़रत आदम अलैहि० ने फिर नमाज़ पढ़ी तो वह कोख में आ गया, उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो वह टख़ने में आ गया, उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो अंगूठे में आ गया, उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो वह चला गया।

हज़रत इब्ने मसऊद फ़रमाते हैं कि जब तक तुम नमाज़ में होते हो तो बादशाह का दरवाज़ा खटखटाते हो और जो बादशाह

का दरवाज़ा खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा ज़रूर खुलता है। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं अपनी ज़रूरतें फ़र्ज़ नमाज़ों पर उठा रखो यानी फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद अपनी ज़रूरतें अल्लाह से मांगो। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं जब तक आदमी बड़े गुनाहों से बचता रहेगा उस वक़्त तक एक नमाज़ से लेकर दूसरी नमाज़ तक के दर्मियान जितने गुनाह किए होंगे वह सारे गुनाह अगली नमाज़ से माफ़ हो जाएंगे। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि नमाज़ें बाद वाले गुनाहों के लिए कुफ़्फ़ारा होती हैं। हज़रत आदम अलैहि० के पाँव के अंगूठे में एक फोड़ा निकल आया था फिर वह फोड़ा चढ़कर उनके पाँव की जड़ यानी ऐड़ी में आ गया, फिर चढ़कर घुटनों में आ गया फिर कोख में आ गया फिर चढ़कर गर्दन की जड़ में आ गया फिर हज़रत आदम अलैहि० ने खड़े होकर नमाज़ पढ़ी तो वह फ़ोड़ा कंधों से नीचे आ गया, उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी तो वह निकलकर उनकी कोख पर आ गया, फिर नमाज़ पढ़ी तो उतरकर घुटनों पर आ गया, फिर नमाज़ पढ़ी तो क़दमों में आ गया फिर नमाज़ पढ़ी तो वह फ़ोड़ा ख़त्म हो गया।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 107

अबू हुरैरह रज़ि० वाली औरत का अजीब क़िस्सा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक औरत मेरे पास आई और उसने मुझसे कहा क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है? मैंने ज़िना किया था जिससे मेरे हाँ बच्चा पैदा हुआ फिर मैंने उस बच्चे को क़तल कर डाला, मैंने कहा नहीं (तुमने दो बड़े गुनाह किए हैं इसलिए) न तो तुम्हारी कोख कभी ठंडी हो और न तुझे

शराफ़त व करामत हासिल हो। इसपर वह औरत अफ़सोस करती हुई उठकर चली गई, फिर मैंने हुज़ूर सल्ल० के साथ फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और उस औरत ने जो कुछ कहा था और मैंने उसे जो जवाब दिया था वह सब हुज़ूर सल्ल० को बताया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुमने उसे बुरा जवाब दिया, क्या तुमने यह आयत :

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ से लेकर اِلَّا مَنْ تَابَ

आख़िरी आयत तक नहीं पढ़ते (सूरः फ़ुरक़ान, आयत 68 से 70)।

तर्जुमा :– और जो कि अल्लाह तआला के साथ किसी और माबूद की इबादत नहीं करते और जिस शख़्स के क़तल करने को अल्लाह तआला ने हराम फ़रमाया है उसको क़तल नहीं करते हाँ मगर हक़ पर और वह ज़िना नहीं करते और जो शख़्स ऐसा काम करेगा तो सज़ा से उसको साबिक़ा पड़ेगा कि क़ियामत के रोज़ उसका अज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वह उस अज़ाब में हमेशा-हमेशा ज़लील (व ख़्वार) होकर रहेगा मगर जो (शिर्क और मआसी से) तौबा कर ले और (ईमान) भी ले आये और नेक काम करता रहे तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों के (पिछले) गुनाहों की जगह नेकियाँ इनायत फ़रमाएगा और अल्लाह तआला ग़फ़ूरुर रहीम है।

फिर मैंने यह आयतें उस औरतें को पढ़कर सुनाई, उसने कहाः तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरी नजात की सूरत बनाई।

इब्ने जरीर की एक रिवायत में यह है कि वह अफ़सोस करते हुए उनके पास से चली गई और वह कह रही थी हाय अफ़सोस!

क्या यह हुस्न जहन्नम के लिए पैदा किया गया है। इस रिवायत में आगे यह है कि हुज़ूर सल्ल० के पास से हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० वापस आए और उन्होंने मदीना के तमाम महलों और घरों में उस औरत को ढूँढना शुरू किया, उसे बहुत ढूंढा लेकिन वह औरत कहीं न मिली, अगली रात को वह ख़ुद हज़रत अबू हुरैरह के पास आई तो हुज़ूर सल्ल० ने जो जवाब फ़रमाया था वह हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने उसे बताया। वह फ़ौरन सजदे में गिर गई और कहने लगी। तमाम तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मेरे लिए ख़ुलासी की शक्ल बना दी और जो गुनाह मुझसे हो गया है उससे तौबा का रास्ता बता दिया, और उस औरत ने अपनी एक बादीं और उसके बेटी आज़ाद कर दी और अल्लाह तआला के सामने सच्ची तौबा की। —तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 22

1000 साल तक जहन्नम में या हन्नान या मन्नान कहने वाला और अल्लाह का मामला उसके साथ

रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं कि जहन्नमी एक हज़ार साल तक जहन्नम में चिल्लाता रहेगा या हन्नान या मन्नान। तब अल्लाह तआला जिब्रील अलैहि० से फ़रमाएगाः जाओ देखो यह क्या कह रहा है? जिब्रील अलैहि० आकर देखेंगे कि सब जहन्नमी बुरे हाल में सर झुकाए आह व ज़ारी कर रहे हैं। जाकर जनाब बारी तआला में ख़बर करेंगे। अल्लाह फ़रमाएगाः फिर जाओ फ़लां-फ़लां जगह यह शख़्स है जाओ उसे ले आओ। जिब्रील अलैहि० अल्लाह तआला के हुक्म से जाएंगे और उसे लाकर ख़ुदा के सामने खड़ा कर देंगे। अल्लाह तआला उससे पूछेंगे कि तू कैसी

जगह है? यह जवाब देगा कि खुदाया ठहरने की भी बुरी जगह और सोने बैठने की भी बदतरीन जगह है।

खुदा तआला फ़रमाएंगेः अच्छा अब इसको इसकी जगह वापस कर आओ तो यह गिड़गिड़एगा, अर्ज़ करेगा कि ऐ अरहमुर-राहिमीन खुदा! जब तूने उससे निकाला तो तेरी ज़ात नहीं कि तू फिर मुझे उसमें दाख़िल कर दे, मुझे तुझसे रहम व करम की उम्मीद है, खुदाया बस अब मुझपर करम फ़रमा, जब तूने मुझे जहन्नम से निकाला तो मैं खुश हो गया था कि अब तू उसमें नहीं डालेगा। अब मालिक व रहमान व रहीम खुदा को भी रहम आ जाएगा और फ़रमाएगाः अच्छा मेरे बन्दे को छोड़ दो।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 19

जब इंसान सोता है तो फ़रिश्ता शैतान से कहता है कि फ़रमाते हैं अपना सहीफ़ा दे जिसमें गुनाह लिखे हुए हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं उस शख़्स को पहचानता हूँ जो सबसे आख़िर में जहन्नम से निकलेगा और सबसे आख़िर में जन्नत में जाएगा। यह एक वह शख़्स होगा जिसे खुदा के सामने लाया जाएगा, अल्लाह तआला फ़रमाएगा इसके बड़े-बड़े गुनाहों को छोड़कर छोटे-छोटे गुनाहों के बारे में इससे पूछताछ करो, चुनांचे उससे सवाल होगा कि फ़्लां दिन तूने फ़्लां काम किया था? फ़्लां दिन फ़्लां काम किया था? यह एक का भी इंकार न कर सकेगा, इक़रार करेगा। आख़िर में कहा जाएगा कि तुझे हमने हर गुनाह के बदले नेकी दी अब तो उसकी बांछें खिल

जाएंगी और कहेगाः ऐ मेरे परवरदिगार! मैंने और भी बहुत से बुरे आमाल किए हैं जिन्हें यहाँ न पा रहा। यह फ़रमाकर हुज़ूर अक़्दस सल्ल० इस क़द्र हंसे कि आप सल्ल० के मसूढ़े देखे जाने लगे।

—मुस्लिम

आप सल्ल० फ़रमाते हैं कि जब इंसान सोता है तो फ़रिश्ता शैतान से कहता है कि मुझे अपना सहीफ़ा जिसमें उसके गुनाह लिखे हुए हैं दे। वह दे देता है तो एक-एक नेकी के बदले दस-दस गुनाह वह उसके सहीफ़े से मिटा देता है और उन्हें नेकियाँ लिख देता है, तो तुममें से जो भी सोने का इरादा करे तो वह 33 बार अल्लाहु अक्बर और 34 बार अलहम्दु लिल्लाह कहे और 33 बार सुब्हानल्लाह कहे, यह मिलाकर सौ मर्तबा हो गये। —इब्ने अबिद-दुनिया, इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 21

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० फ़रमाते हैं कि इंसान को क़ियामत के दिन नाम-ए-आमाल दिया जाएगा। वह पढ़ना शुरू करेगा तो उस पर उसकी बुराइयाँ दर्ज होंगी, जिन्हें पढ़कर यह कुछ नाउम्मीद सा होने लगेगा। उसी वक़्त उसकी नज़र नीचे की तरफ़ पड़ेगी तो अपनी नेकियाँ लिखी हुई पाएगा जिससे कुछ ढारस बंधेगी! अब दोबारा ऊपर की तरफ़ देखेगा तो वहाँ की बुराइयों को भी भलाइयों से बदला हुआ पाएगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि बहुत से लोग ख़ुदा के सामने आएंगे जिनके पास बहुत कुछ गुनाह होंगे। पूछा गया वह कौन से लोग हैं? आप सल्ल० ने फ़रमाया वह जिनकी बुराइयों को अल्लाह तआला भलाइयों से बदलेगा। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 2, पेज 21

महफ़ूज़ क़िला (हर चीज़ से हिफ़ाज़त)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ख़बीब रज़ि० रिवायत करते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० को बारिश की रात और सख़्त आंधेरे में तलाश कर रहे थे कि आप सल्ल० को हम मिल गये। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि तीन बार क़ुल हुवल्लाहु अहद और तीन बार क़ुल आऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ और तीन बार क़ुल आऊज़ु बिरब्बिन्नास सुब्ह-शाम पढ़ लिया करो यह तुम्हारे लिए हर चीज़ के लिए काफ़ी हो जाएगा। (मिश्कात) यह वज़ीफ़ा हर शर से बचाने के लिए काफ़ी है यानी नफ़्स व शैतान और जिन्नात व आसेब, जादू, हासिद व दुशमनों के हर शर और बुरी नज़र के शर से, और यह वज़ीफ़ा हर वज़ीफ़े की तरफ़ से काफ़ी है।

दफ़अ् ग़म का नुस्ख़ा

حَسْبِیَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۝

तफ़्सीर रूहुल मआनी में है कि अबू दाऊद शरीफ़ की हदीस में है कि जो शख़्स इसको सात मर्तबा सुब्ह और सात मर्तबा शाम पढ़ लिया करे, अल्लाह तआला उसके दुनिया और आख़िरत के हर ग़म और फ़िक्र के लिए काफ़ी हो जाएगा। मशहूर मुफ़स्सिर अल्लामा आलूसी रह० फ़रमाते हैं कि यह विर्द इस फ़क़ीर का भी है।

—रूहुल मआनी

हज़रत मुआज़ और उनकी बीवी में नोंक-झोंक

हज़रत सअ्द इब्ने मुसय्यब फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर इब्ने

ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० को क़बीला बनू किलाब में सदक़ात वुसूल करने भेजा।

उन्होंने वहाँ जाकर सद्क़ात वसूल करके उनमें ही तक़्सीम कर दिए और अपने लिए कोई चीज़ न छोड़ी। और अपना जो टाट लेकर गये थे उसे ही अपनी गर्दन में रखे हुए वापस आए तो उनकी बीवी ने उनसे पूछा कि सद्क़ात वसूल करने वाले अपने घर वालों के लिए जो हदिए लाया करते हैं और आप भी वह लाए हैं, वह कहाँ हैं।

हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहाः मेरे साथ मुझे दबाकर रखने वाला एक निगरान था इसलिए हदिए न ला सका। उनकी बीवी ने कहाः हुज़ूर सल्ल० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० के हाँ तो आप अमीन थे। हज़रत उ़मर रज़ि० ने आपके साथ दबाकर रखने वाला एक निगरान भेज दिया। वह आपको अमीन नहीं समझते। उनकी बीवी ने अपने ख़ानदान में इसका बड़ा शोर मचाया और हज़रत उ़मर रज़ि० की शिकायत की। जब हज़रत उ़मर रज़ि० को यह ख़बर पहुंची तो उन्होंने हज़रत मुआज़ रज़ि० को बुलाकर पूछाः क्या मैंने तुम्हारे साथ कोई निगरान भेजा था? हज़रत मुआज़ रज़ि० ने कहाः मुझे अपनी बीवी से माज़िरत करने के लिए और कोई बहाना न मिला। यह सुनकर हज़रत उ़मर रज़ि० हंसे और उन्हें कोई चीज़ दी और फ़रमाया यह देकर उसे राज़ी कर लो। इब्ने जरीर कहते हैं कि निगरान से हज़रत मुआज़ रज़ि० की मुराद अल्लाह तआला है।

—हयातुस्सहाबा, हिसा 3, पेज 42

मुहब्बत बढ़ाने के लिए मियाँ-बीवी का आपस में झूठ बोलना जाइज़ है

हज़रत अकरमा रह० कहते हैं कि हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि०

अपनी बीवी के पहलू में लेटे हुए थे, उनकी बांदी घर के कोने में (सो रही) थी। यह उठकर उसके पास चले गए और उसमें मश्गूल हो गये। उनकी बीवी घबराकर उठी और उनको बिस्तर पर न पाया तो वह उठकर बाहर चली गई। और उन्हें बांदी में मश्गूल देखा वह अन्दर वापस आई और छुरी लेकर बाहर निकली। इतने में यह फ़ारिग़ होकर खड़े हो चुके थे और अपनी बीवी को रास्ते में मिले। बीवी ने छुरी उठाई हुई थी। उन्होंने पूछाः क्या बात है? बीवी ने कहाः हाँ क्या बात है? अगर मैं तुम्हें वहाँ पा लेती जहाँ मैंने तुम्हें देखा था तो मैं तुम्हारे कंधों के दर्मियान यह छुरी घोंप देती। हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० ने कहा तुमने मुझे कहाँ देखा था? उन्होंने कहाः मैंने तुम्हें बांदी के पास देखा था हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि० ने कहाः तुमने मुझे वहाँ नहीं देखा था। (मैं बांदी के पास नहीं गया मैंने उसके साथ कुछ नहीं किया अगर मैंने उसके साथ कुछ किया होता तो मैं जनूबी होता) और हुज़ूर सल्ल० ने हालते जनाबत में क़ुरआन पढ़ने से हमें मना फ़रमाया है।

(और मैं अभी क़ुरआन पढ़कर तुम्हें सुना देता हूँ) उनकी बीवी ने कहा अच्छा क़ुरआन पढ़ो, उन्होंने यह अश्आर (इस तरह से) पढ़े कि (उनकी बीवी क़ुरआन समझती रही, मुहब्बत बढ़ाने के लिए मियाँ-बीवी का आपस में झूठ बोलना जाइज़ है):

اَتَانَا رَسُوْلُ اللّٰهِ يَتْلُوْ كِتَابَهٗ   كَمَا لَاحَ مَشْهُوْرٌ مِنَ الْفَجْرِ سَاطِعٌ

हमारे पास अल्लाह के रसूल सल्ल० आए जो अल्लाह की ऐसी किताब पढ़ते हैं जो कि रौशन और चमकदार सुब्ह की तरह चमकती हैं

اَتٰى بِالْهُدٰى بَعْدَ الْعَمٰى فَقُلُوْبُنَا   بِهٖ مُوْقِنَاتٌ اَنَّ مَا قَالَ وَاقِعٌ

आप सल्ल० लोगों के अंधेपन के बाद हिदायत लेकर आए और हमारे दिलों को यक़ीन है कि आप सल्ल० ने जो कुछ कहा है वह होकर रहेगा।

يَبِيْتُ يُجَافِى جَنْبَهٗ عَنْ فِرَاشِهٖ   اِذَا اسْتَثْقَلَتْ بِالْمُشْرِكِيْنَ الْمَضَاجِعُ

जब मुश्रिकीन बिस्तरों पर गहरी नींद सो रहे होते है। उस वक़्त आप सल्ल० इबादत में सारी रात गुज़ार देते हैं और आप सल्ल० का पहलू बिस्तर से दूर रहता है।

यह अश्आर सुनकर उनकी बीवी ने कहा: मैं अल्लाह पर ईमान लाती हूँ और मैं अपनी निगाह को ग़लत क़रार देती हूँ। फिर सुब्ह को हज़रत इब्ने रवाहा ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में जाकर यह वाक़िआ सुनाया तो हुज़ूर सल्ल० इतना हंसे कि आप सल्ल० के दनदाने मुबारक नज़र आने लगे।

मस्जिद में अपनी उंगलियाँ एक-दूसरे में न डालो, यह एक शैतानी हरकत है

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० के एक ग़ुलाम फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं (अपने आक़ा) हज़रत अबू सईद रज़ि० के साथ था। वह हुज़ूर सल्ल० के साथ जा रहे थे। इतने में हम लोग मस्जिद में दाख़िल हो गये तो हमने देखा कि मस्जिद के बीच में एक आदमी पीठ और टांगों को कपड़े से बांधकर बैठा हुआ है और दोनों हाथों की उंगलियाँ एक-दूसरे में डाल रखी हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इशारे से समझाने की कोशिश की लेकिन वह समझ न सका तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबू सईद रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जा होकर फ़रमाया कि जब तुममें से कोई मस्जिद में हो तो

अपनी उंगलियाँ हरगिज़ एक-दूसरे में न डाले क्योंकि यह शैतानी हरकत है और जब तुममें से कोई आदमी मस्जिद में होता है तो वह मस्जिद से बाहर जाने तक नमाज़ ही में शुमार होता है।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 133

एक बड़े आलिम की गुमराही बेजा हुब्बे-माल और बेजा हुब्बे-बीवी की वजह से

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِیْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ○

और सुना दीजिए आप इनको उस शख़्स का हाल जिसको हमने अपनी आयतें दी थीं फिर वह उनको छोड़ निकला फिर उसके पीछे शैतान लग गया तो वह गुमराहों में से हो गया। (आराफ़, 175)

ऊपर दी गई आयत में जिस शख़्स का क़िस्सा बयान किया गया है, चूंकि क़ुरआन करीम में इसका कोई नाम और पहचान मज़कूर नहीं है, इसलिए इसकी तअय्युन व अदम तअय्युन के बारे में अइम्म-ए-तफ़्सीर सहाबा और ताबीईन के दर्मियान इख़्तिलाफ़ है और बहुत-सी आयात इस सिलसिले में आई हैं, सबसे ज़्यादा क़ाबिले एतिमाद और मशहूर रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की है जिसको हज़रत इब्ने मरदूया ने नक़ल किया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस शख़्स का नाम बलुअम बिन बाऊ़र था। बनी इस्राईल का एक बहुत बड़ा आलिम और मशहूर मुक़्तदा था, बहुत ज़्यादा इल्म और अल्लाह तआला की मारिफ़त कामिला रखता था, बड़ा आबिद व ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दअवात था। अल्लाह का इस्मे आज़म

जानता था, मगर जब नफ़्सियानी ख़्वाहिशात व इग़राज़ और दुनिया की तरफ़ मीलान का ग़लबा हुआ और हवा-ए-परस्ती में मुब्तला हुआ तो सब इल्म व मारिफ़त ख़त्म हो गई और अचानक उरूज और हिदायत के बाद गुमराही में फंस गया और इन्दल्लाह तमाम महबूबियत व मक़बूलियत ख़त्म होकर ज़लील व ख़्वार हो गया।

जनाब रसूले करीम सल्ल० को इन आयात में हुक्म होता है कि आप सल्ल० अपनी क़ौम के सामने इस इबरतनाक क़िस्से को सुनाइये ताकि आपकी क़ौम इसको सुनकर अक़्ल व फ़हम से काम ले और इबरत हासिल कर ले और ईमान ले आये।

बलअम बिन माऊ़रा का क़िस्सा

जब फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ ग़र्क़ हो गया और मिस्र फ़तह होकर बनी इस्राईल के हाथ में आ गया, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से हज़रत मूसा (अला नबिय्यना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) और बनी इस्राईल को क़ौम जब्बारैन से जिहाद का हुक्म हुआ और हज़रत मूसा अलैहि० मुजाहिदीने कुफ़्र को लेकर वहाँ पहुंचे। कनआन की ज़मीन में मुजाहिदीन के ख़ेमे खड़े कर दिए गये और शहर बल्क़ा पर हमले का इरादा किया। क़ौमे जब्बारीन ने जब यह देखा कि मूसा अलैहि० बनी इस्राईल के साथ हमला करने वाले हैं, चूंकि उनको मालूम था कि हज़रत मूसा अलैहि० के मुक़ाबले में फ़िरऔन और उसका लश्कर ग़र्क़ होकर तबाह व बर्बाद हो गया, और हम उनका मुक़ाबला नहीं कर सकते, इसलिए क़ौम के सर आवरदा और मुअज़्ज़ज़ लोग जमा होकर बलअम बिन बाऊ़रा के पास आए, और कहा कि मूसा

अलैहि० बहुत तन्द मिज़ाज़ हैं, बड़ी क़ुव्वत और शौकत व दबदबा वाले आदमी हैं, बहुत बड़ा लश्कर लेकर हमारे मुल्क पर हमला करने वाले हैं, वह हम पर ग़लबा हासिल करना चाहते हैं और हमको हमारे मुल्क से निकाल देना चाहते हैं, आप से हमारी यह इल्तिजा है कि आप दुआ कर दें कि वह वापस चले जाएं और हमसे मुक़ाबला न करें, मुल्अम बिन बाऊ़रा ने जवाब दियाः

"دينه وديني واحد وهذا شي لا يكون."

कि ऐसा होना मुश्किल है मैं उनके लिए बद्दुआ नहीं कर सकता, वह तो मेरे हम मज़हब हैं जो इनका दीन है, वही मेरा दीन है :

"كيف ادعو عليه وهو نبي الله ومعه الملائكة والمؤمنين وانا اعلم من الله ما اعلم واني ان فعلت ذالك اذهبت دنياى وآخرتي"

मैं उनके हक़ में बद्दुआ कैसे कर सकता हूँ मैं जानता हूँ वह अल्लाह तआला के नबी हैं और उनकी मदद के लिए अल्लाह के फ़रिश्ते और ईमान वाले उनके साथ हैं। अगर मैंने बद्दुआ कर दी तो दुनिया और आख़िरत में बर्बाद हो जाऊंगा, दोनों जहां में रुस्वाई व ज़िल्लत होगी।

जब लोगों ने बहुत इसरार किया तो बलअम ने कहा कि अच्छा मैं रब से उनके बारे में मालूम कर लूं कि उनके लिए बद्दुआ करने की इजाज़त है या नहीं, हस्बे मामूल बल्अम ने इस्तिख़रा या कोई अमल किया, ख़्वाब में बल्अम को बताया गया कि मूसा अलैहिस्सलाम और उनके कुफ़्र शिक्न मुजाहिदीन के लिए हरगिज़ हरगिज़ बद्दुआ न करें, बलअम ने इस इस्तिख़ारे के बाद साफ़ इंकार कर दिया कि मुझे बद्दुआ करने से सख़्ती के साथ रोक दिया गया था।

कुछ रिवायात में आता है कि शाह बल्क़ा ने धमकी दी कि अगर बद्दुआ न की तो तुमको सूली दे दी जाएगी जबकि कुछ मुफ़स्सीरीन इसके क़ाइल हैं कि क़ौम ने एक बहुत बड़ी रक़म रिश्वत की हिदाया के नाम पर उसकी बीवी को देकर उसको आमादा और तैयार किया। बलूअम को बीवी से बे-इन्तिहा मुहब्बत थी, बीवी ने उसको बद्दुआ के लिए तैयार कर लिया, बादशाह की तख़्वीफ़ और क़ौम की आह व ज़ारी और तज़र्रुअ बहुत ज़्यादा हुई और बीवी की हट हद से ज़्यादा हुई, और बीवी की मुहब्बत और माल की तलब में बिल्कुल अंधा हो गया और अपने गधे पर सवार हुआ। मुक़ाम हसान जहाँ मुसलमानों का लश्कर पड़ा हुआ था उसकी तरफ़ बद्दुआ करने के लिए जा रहा था, तो रास्ते मे गधा गिर पड़ा मुलूअम ज़बरदस्ती उसको आगे चलाना चाहता था, सवारी के रुकने और उसके गिरने से उसको कोई तन्बीह न हुई तो बहुक्मे क़ादिर गधा बोलाः

"يا بلعم! ويحك الا ترى الى هولاء الملائكة امامى يردوننى"

कि एक बलूअम तुम्हारे लिए ख़राबी व बर्बादी हो! तुम सोचते और देखते नहीं हो, मेरे सामने फ़रिश्ते मौजूद हैं जो मुझे आगे नहीं जाने देते, पीछे की तरफ़ मुझे लौटा रहे हैं! यह सुनकर बलूअम कुछ झिझका मगर शैतान ने उसको बहका दिया।
बिल्-आख़िर वह आगे बढ़ा और बद्दुआ करने में मश्ग़ूल हो गया।

उस वक़्त क़ुदरते इलाहिय्या का अजीब व ग़रीब करिश्मा हुआ कि बलूअम बद्दुआ के जो अल्फ़ाज़ व कलिमात हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम के लिए इस्तेमाल करना चाहता था वह सब क़ौमे जब्बारीन हीं के लिए उसकी ज़बान से निकल रहे थे और अपनी क़ौम के लिए जो दुआइया अल्फाज़ बोलना

चाहता था, वह सब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके लश्कर के लिए बोलने लगा। क़ौम जब्बारीन ने जब यह देखा तो वह चिल्ला उठे और कहने लगे कि तुम तो हमारे लिए बद्दुआ कर रहे हो। बलूअम ने जवाब दिया कि मेरी ज़बान मेरे इख़्तियार से बाहर है। यह सबकुछ जो मैं कर रहा हूँ मैं इसके कहने पर क़ादिर नहीं हूँ, बे-इख़्तियार निकल रहे हैं। इस बद्दुआ का नतीजा यह हुआ कि बलूअम की ज़बान तो उसके सीने पर लटक गई और उसकी क़ौम तबाही व बर्बादी में मुब्तला हो गई। जब बलूअम ने देख लिया कि मेरी तो दुनिया व आख़िरत बर्बाद हो गई तो उसने अपनी क़ौम से कहा कि मैं एक हीला करता हूँ और एक मकर व फ़रेब तुम्हें बतलाता हूँ, तुम इसको इख़्तियार कर लो शायद तुम मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम पर ग़ालिब आ जाओ, बलूअम ने अपनी क़ौम को मूसा अलैहि० और उनके लश्कर पर ग़ालिब आने के लिए एक चाल बताई।

बलूअम की बताई हुई चाल

बलूअम ने अपनी क़ौम के सामने यह तजवीज़ पेश की कि तुम अपनी हसीन और ख़ूबसूरत लड़कियों को व्यापारी और ताजिरों की शक्ल में मुजाहिदीन की लश्कर में भेज दो और उन लड़कियों से यह कहो कि अगर बनी इस्राईल का कोई आदमी तुमको कुछ कहे, छेड़ख़ानी करे तो तुम उनको मना न करना, वह जो कुछ चाहें करने देना। बलूअम समझ रहा था कि यह मुजाहिदीन बड़ी लम्बी मुद्दत से अपनी बीवी-बच्चों से अलग हैं, मुसाफ़िर हैं, वतन से निकले हुए लम्बा अर्सा गुज़र गया, उनका बद्कारी में मुब्तला हो जाना उसको आसान मालूम हो रहा था। वह जानता था कि यह लोग बद्कारी और ज़िनाकारी में फंस गये

तो वह हरगिज़ कामियाब और कामरान नहीं हो सकेंगे। चुनांचे लड़कियों को तैयार करके भेज दिया गया और सू-ए-इत्तिफ़ाक़ से उनकी यह चाल कुछ काम आ गई और एक इस्राईली एक लड़की के साथ ज़िनाकारी के गुनाह में मश्गूल हो गया। हज़रत मूसा अलैहि० ने उसको बहुत रोका मगर न माना, बिल्-आख़िर नतीजा यह हुआ कि बनी इस्राईल में एक ताऊ़न फैला और एक ही दिन में सत्तर हज़ार इस्राईली मर गये यहाँ तक कि उस ज़ानी इस्राईली और उस लड़की को क़तल किया गया और उनकी लाशों को सबके सामने लटका दिया गया फिर वह ताऊ़न दूर हुआ।

बल्अम की मिसाल

इंसान बल्कि हर जानदार इस दुनिया में ज़िन्दा रहने के लिए उसका मोहताज है कि अन्दर की गर्मी और ज़हरीली हवा को बाहर फैंके और बाहर से सर सब्ज़ और ताज़ा हवा को नाक के नथुनों और गले की ज़रिए अन्दर ले जाए। उसके बग़ैर कोई चारा नहीं है, ज़िन्दगी हर जानदार की इसी पर मौक़ूफ़ है, और अल्लाह तआला ने हवा की इस आमदो-रफ़्त को हर जानदार पर बिल्कुल इतना आसान और सह्ल कर रहा है कि वह बिला मेहनत और मश्क़्क़त के अन्दर आती है और अन्दर से बाहर निकलती है, क़ुदरती तौर पर यह सब कुछ होता रहता है, कोई ज़ोर और ताक़त या किसी इख़्तियारी अमल की इसके लिए ज़रूरत नहीं है, लेकिन कुत्ता एक ऐसा जानवर है कि वह अपने ज़ोअ्फ़े क़ल्ब की वजह से इस हवा के आने जाने पर हांपता-कांपता रहता है और उसको साँस लेने के लिए ज़बान बाहर निकालनी और मेहनत व मश्क़्क़त उठानी पड़ती है, दूसरे जानवरों की यह हालत कुछ मख़्सूस हालात में हो जाती है कि वह भी ज़ोर लगाकर साँस लेते

हैं मगर यहाँ आरिज़ है जिसका एतिबार नहीं, अल्लाह तआला ने इस आयत में इसकी मिसाल कुत्ते जैसी बयान की है कि कुत्ते पर हमला करो और उसको झिड़को तब भी ज़बान निकालता और हिलाता है और उसको ऐसे ही छोड़ दिया जाए उसको कुछ न कहा जाए तब भी वह ज़बान को निकाले हुए रहता है। बस यही हाल बल्‌अम का भी हुआ कि एहकामे खुदावन्दी की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने और इत्तिबा-ए-हवा की वजह से उसकी ज़बान सीने पर लटक गई, और वह भी कुत्ते की तरह ज़बान निकाले हुए हांपता रहता था, हज़रात मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि आयते करीमा में हालांकि ख़ास तौर पर इसकी मिसाल बयान की गई है मगर इस आयत में हर उस शख़्स की मज़म्मत और बुराई बयान की गई है, जिसको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इल्म अता फ़रमाए और अपनी मारिफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाए, और फिर वह उनको छोड़कर दुनिया का तलबगार हो जाए, और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के हुसूल में लग जाए और कुछ नसीहतें दी गई इन आयात में जो क़िस्सा बयान किया गया है उसमें अहल व फ़िक्र के लिए बहुत सी इबरतें और नसीहतें हैं, कुछ की निशान्दही की जाती है जो बहुत ही अहम हैं:

1. इंसान को अपने इल्म व फ़ज़ल और ज़ुह्द व तक़्वे पर नाज़ और ग़ुरूर नहीं करना चाहिए बल्कि अल्लाह का शुक्र और इस्तिक़ामत की दुआ करते रहना चाहिए, और उससे डरते रहना चाहिए कि कहीं नाज़ और ग़ुरूर करने की सूरत में इसका हश्र बल्‌अम की तरह न हो जाए।

2. बल्‌अम को यह सज़ा नाफ़रमानों और गुमराह लोगों के तोहफ़े को क़बूल करने की वजह से मिली है लिहाज़ा ज़ालिमों और गुमराह लोगों के साथ ताल्लुक़ात और उनकी दावत और

तोहफ़े वग़ैरह क़बूल करने से इन्तिहाई एहतियात बरतनी चाहिए।

३. नेकी और बदी का असर दुनिया में दूसरों के ऊपर भी पड़ता है, कुछ फ़ुक़रा और मसाकीन और अल्लाह-अल्लाह करने वालों की बरकत से हज़ारों बलाएं और परेशानियाँ दूर होकर अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल होती हैं और कुछ गुनाहगारों की शामते आमाल और उनकी नहूसत की वजह से शहर के शहर बर्बाद हो जाते हैं और एक इस्राईली के बे-हयाई के काम करने की वजह से सत्तर हज़ार बनी इस्राईल हलाक व बर्बाद हो गये, लिहाज़ा जो क़ौम अपने आपको तबाही और बर्बादी से बचाना चाहे उस पर लाज़िम है कि वह बे-हयाई और बुरी बातों से अपने आपको महफ़ूज़ रखे। जिस क़ौम में ज़िनाकारी फैल जाती है वह क़ौम ख़ुदा के ग़ज़ब और क़हर की मुस्तहिक़ हो जाती है, क़हत साली और फ़क्र व फ़ाक़े में मुब्तला हो जाती है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० हुज़ूर अकरम सल्ल० का इर्शाद नक़्ल करते हैं :

"اذا ظهر الزنا والربا في قرية فقد احلوا با نفسهم عذاب الله" (अत्तर्ग़ीब व त्तर्हीब)

यानी जब किसी बस्ती में ज़िनाकारी और सूदी लेन-देन ज़ाहिर हो जाये तो उन्होंने अपने ऊपर अल्लाह के अज़ाब को हलाल कर लिया, हज़राते मुफ़स्सिरीन ने और भी क़ीमती नसीहतें ऊपर दिए गये वाक़िए से अख़्ज़ की हैं। अल्लाह तआला हमें इबरत हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मसला :– इबरत और नसीहत हासिल करने के लिए सच्चे क़िस्से और हिकायात बयान करना और सुनना मुस्तहब है और

दुनयावी फ़ायदे हासिल करने के लिए क़िस्से बयान करना मना है, लह्-व-लअ़्ब की ग़र्ज़ से बयान करना तज़ीअ औक़ात होने की वजह से मना है। —तफ़्सीर राज़ी, इब्ने कसीर, वग़ैरह-वग़ैरह

वक़्त की बर्बादी ख़ुदकुशी है

सच यह है कि वक़्त बर्बाद करना एक तरह की ख़ुदकशी है, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि ख़ुदकशी हमेशा के लिए ज़िन्दगी से महरूम कर देती है और वक़्त की बर्बादी एक महदूद ज़माने तक ज़िन्दा को मुर्दा बना देती है, यही मिनट, घन्टा और दिन जो ग़फ़लत और बेकारी में गुज़र जाता है, अगर इंसान हिसाब करे तो उनकी मजमूई तादाद महीनों बल्कि बरसों तक पहुंचती है। अगर किसी से कहा जाए कि आपकी उम्र से दस पाँच साल कम कर दिए गये तो यक़ीनन उसको सख़्त सद्मा होगा लेकिन वह मुअत्तल बैंठा हुआ ख़ुद अपनी उमरे अज़ीज़ को बर्बाद कर रहा है, मगर उसके ज़वाल पर इसको कुछ अफ़सोस नहीं होता।

अगरचे वक़्त का बेकार खोना उम्र का कम करना है, लेकिन अगर यही एक नुक़्सान होता तो चन्दां ग़म न था, लेकिन बहुत बड़ा नुक़्सान और ख़सारा यह है कि बेकार आदमी तरह-तरह के जिस्मानी व रूहानी मर्ज़ों में मुब्तला हो जाता है, हिर्स व तमअ, ज़ुल्म व सितम, जुए-बाज़ी, ज़िनाकारी और शराबनोशी अक्सर वही लोग करते हैं जो ख़ाली और बेकार रहते हैं। जब तक इंसान की तबीयत दिल व दिमाग़ नेक और फ़ायदे के काम में मश्ग़ूल न होगा उसका मीलान ज़रूर बदी और माअ़्सियत की तरफ़ रहेगा। तो इंसान उसी वक़्त सही इंसान बन सकता है, जब वह अपने वक़्त पर निगरान रहे, एक लम्हा भी फ़ुज़ूल न खोए, हर काम के

लिए एक वक़्त और हर वक़्त के लिए एक काम मुक़र्रर कर दे।

वक़्त ख़ाम मसालहे की तरह है जिससे आप जो कुछ चाहें बना सकते हैं, वक़्त वह सरमाया है जो हर शख़्स को अल्लाह तआला की तरफ़ से यक्साँ तरह अता किया गया है, इस सरमाए को मुनासिब मौक़े पर काम में लाते हैं। जिस्मानी राहत और रूहानी मसर्रत उनही को नसीब होती है, वक़्त ही के सही इस्तेमाल से एक वहशी मुहज़्ज़ब बन जाता है, इसकी बरकत से जाहिल, आलिम, मुफ़्लिस, तवंगार, नादान दाना बनते हैं, लेकिन वक़्त ऐसी दौलत है जो शाह व गदा, अमीर व ग़रीब, ताक़तवर और कमज़ोर सबको एक-सा मिलता है।

अगर आप ग़ौर करेंगे तो नव्वे फ़ीसद लोग सही तौर पर यह नहीं जानते कि वह अपने वक़्त का ज़्यादा हिस्सा कहाँ और क्यों काम में लाते हैं, जो शख़्स दोनों हाथ अपनी जेबों में डालकर वक़्त को बर्बाद करता है तो वह बहुत जल्द अपने हाथ दूसरों की जेब में डालेगा।

आपकी कमियाबी का वाहिद इलाज यह है कि आपका वक़्त क़भी ख़ाली नहीं होना चाहिए। सुस्ती नाम की कोई चीज़ न हो इसलिए कि सुस्ती नसों को इस तरह खा जाती है जिस तरह लोहे को ज़ंग। जिन्दा आदमी के लिए बेकारी ज़िन्दा मर जाना है।

जिस मुसलमान की भलाई की शहादत दो आदमी दें वह जन्नती है

मुस्नद अहमद में है अबुल अस्वद रह० फ़रमाते हैं, मैं मदीना में आया, यहां बीमारी थी। लोग बकसूरत मर रहे थे। मैं हज़रत ऊमर बिन ख़त्ताब रज़ि० के पास बैठा हुआ था। एक जनाज़ा

निकला और लोगों ने मरहूम की नेकियाँ बयान करनी शुरू की। आप रज़ि० ने फ़रमायाः इसके लिए वाजिब हो गई। इतने में दूसरा जनाज़ा निकला। लोगों ने उसकी बुराइयाँ बयान कीं, आप रज़ि० ने फ़रमायाः इसके लिए वाजिब हो गई। मैंने कहाः अमीरुल मोमिनीन क्या वाजिब हो गई? आपने फ़रमायाः मैंने वही कहा जो जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिस मुसलमान की भलाई की शहादत चार शख़्स दें, अल्लाह उसे जन्नत में दाख़िल करता है। हमने कहा हुज़ूर सल्ल० अगर तीन दें? आप सल्ल० ने फ़रमायाः तीन भी, हमने कहाः अगर दो हों? आप सल्ल० ने फरमायाः दो भी। फिर हमने एक की बाबत सवाल न किया। इब्ने मरदूदिया की एक हदीस में है, क़रीब है कि तुम अपने भलों और बुरों को पहचान लिया करो। लोगों ने कहा हुज़ूर सल्ल०! किस तरह? आप सल्ल० ने फ़रमायाः अच्छी तारीफ़ और बुरी शहादत से तुम ज़मीन पर खुदा के गवाह हो।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 220

अल्लाह तआला अपने बन्दों पर रऊफ़ व रहीम है

सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने एक क़ैदी औरत को देखा जिससे उसका बच्चा छूट गया था, वह अपने बच्चे को बावलों की तरह तलाश कर रही थी और जब वह नहीं मिला तो क़ैदियों में से जिस बच्चे को देखती उसको गले लगा लेती यहाँ तक कि उसका अपना बच्चा मिल गया, खुशी-खुशी लेकर उसे गोद में उठा लिया, सीने से लगाकर प्यार किया और उसके मुँह में दूध दिया। यह देखकर हुज़ूर सल्ल० ने सहाबा रज़ि० से फ़रमायाः बतलाओ तो

यह अपना बस चलते हुए इस बच्चे को आग में डाल देगी? लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल०! हरगिज़ नहीं। आप सल्ल० ने फ़रमायाः अल्लाह की क़सम जिस क़द्र यह माँ अपने बच्चे पर मेहरबान है इससे कहीं ज़्यादा अल्लाह तआला अपने बन्दों पर रऊफ़ व रहीम है। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 221

हलाल लुक़्मा खाते रहो अल्लाह दुआ क़बूल करेगा

सही मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि परवरदिगार आलम फ़रमाता हैः मैंने जो माल अपने बन्दों को दिया है उसे उनके लिए हलाल कर दिया है मैंने अपने बन्दों को मुवहहिद पैदा किया मगर, शैतान ने इस दीने-हनीफ़ से उन्हें हटा दिया और मेरी हलाल की हुई चीज़ों को उनपर हराम कर दिया। हुज़ूर सल्ल० के सामने जिस वक़्त इस आयत की तिलावत हुई तो हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने खड़े होकर कहाः हुज़ूर मेरे लिए दुआ कीजिए कि अल्लाह तआला मेरी दुआओं को क़बूल फ़रमाया करे। आप सल्ल० ने फ़रमायाः ऐ सअ्द! पाक चीज़ें और हलाल लुक़्मा खाते रहो अल्लाह तआला तुम्हारी दुआएं क़बूल फ़रमाता रहेगा। क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मुहम्मद सल्ल० की जान है। हराम लुक़्मा जो इंसान अपने पेट में डालता है उसकी नहूसत की वजह से चालीस दिन की उसकी इबादत क़बूल नहीं होती, जो गोश्त-पोस्त हराम से पला वह जहन्नमी है। —तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 235

औरतों के बारे में अल्लाह से डरते रहो

सही मुस्लिम में हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हिज्जतुल विदाअ के अपने खुत्बे में फ़रमायाः लोगो! औरतों के बारे में अल्लाह से डरते रहो। तुमने अल्लाह की अमानत से उन्हें लिया है और अल्लाह के कलिमे से उनकी शर्मगाहों को अपने लिए हलाल किया है। औरतों पर तुम्हारा यह हक़ है कि वह तुम्हारे फ़र्श पर किसी को न आने दें जिससे तुम नाराज़ हो अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मारो लेकिन ऐसी मार न हो कि ज़ाहिर हो। उनका तुम पर यह हक़ है कि उन्हें अपनी बिसात के मुताबिक़ खिलाओ, पिलाओ, उढ़ाओ।

अपनी बीवी को खुश करने के लिए शौहर को भी ज़ीनत करनी चाहिए

एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या हमारे औरतों के हम पर हक़ हैं? आप सल्ल० ने फ़रमायाः जब तुम खाओ तो उसे भी खिलाओ, जब तुम पहनो तो उसे भी पहनाओ, उसके मुँह पर न मारो, उसे गालियाँ न दो, उससे रूठकर और कहीं न भेज दो, हाँ घर में ही रखो। इसी आयत को पढ़कर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मैं पसन्द करता हूँ कि अपनी बीवी को खुश करने के लिए मैं भी अपनी ज़ीनत करूं जिस तरह वह मुझे खुश करने के लिए अपना बनाव सिंगार करती है।

नोटः— जो आँख को न लगे वह दिल को क्या लगे यानी उसे आँख क़बूल न करे उसे दिल कैसे क़बूल करे।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 313

मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत है

फिर फ़रमाया कि मर्दों को उनपर फ़ज़ीलत है, जिस्मानी हैसियत से भी, अख़्लाक़ी हैसियत से भी, मर्तबे के हैसियत से भी, हुक्मरानी की हैसियत से भी, ख़र्च-इख़राजात की हैसियत से भी, देखभाल और निगरानी की हैसियत से भी। ग़र्ज़ दुनयवी और उख़वी फ़ज़ीलत के हर एतिबार से, जैसे और जगह है।

"اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ...الخ"

यानी मर्द औरतों पर सरदार हैं। अल्लाह तआला ने एक को एक पर फ़ज़ीलत दे रखी है और इसलिए भी कि यह माल ख़र्च करते हैं। फिर फ़रमाया अल्लाह तआला अपने नाफ़रमानों से बदला लेने पर ग़ालिब है और अपने एहकाम में हिक्मत वाला है।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 313

हज़रत मुहम्मद सल्ल० बहुत रहमदिल थे

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० बहुत रहमदिल थे। जो भी आप सल्ल० के पास आता (और सवाल करता और आप सल्ल० के पास कुछ न होता) तो उससे आप वादा कर लेते (कि जब कुछ आएगा तो तुम्हें ज़रूर दूंगा) और अगरचे कुछ पास होता तो उसी वक़्त उसे दे देते। एक मर्तबा नमाज़ की अक़ामत हो गई, एक देहाती ने आकर आप सल्ल० के कपड़े को पकड़ लिया और कहा कि मेरी ठोड़ी-सी ज़रूरत बाक़ी रह गई है और मुझे डर है कि मैं इसे भूल जाऊंगा, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० उसके साथ खड़े हो गये। जब उसकी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुए तो फिर आगे बढ़कर नमाज़ पढ़ाई। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 150

ज़ुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत सुन्नत का पढ़ना तहज्जुद के बराबर है

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, वह ज़ुहर से पहले नमाज़ पढ़ रहे थे। मैंने पूछाः यह कौन सी नमाज़ है? हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः यह नमाज़ तहज्जुद की नमाज़ की तरह शुमार होती है।

हज़रत असवद, हज़रत मर्रा और हज़रत मसरूक़ रह० कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने फ़रमायाः दिन की नमाज़ों में से सिर्फ़ ज़ुहर की नमाज़ से पहले की चार रकअतें रात की तहज्जुद के बराबर हैं और दिन की तमाम नमाज़ों पर उन चार रकअतों को ऐसी फ़ज़ीलत है जैसे नमाज़ बा-जमाअत को अकेले की नमाज़ पर।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 164

नौजवान के बदन से मुश्क व अम्बर की खुश्बू

हज़रत अल्लामा अब्दुल्लाह बिन असअद याफ़िई रज़ि० ने फ़ने तसव्वुफ़ में एक किताब लिखी, उसका नाम "अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब" है। उसमें उन्होंने एक नौजवान का वाक़िआ नक़ल फ़रमाया है कि एक नौजवान से हमेशा मुश्क, अम्बर की खुश्बू महकती थी तो उसके किसी जानने वाले ने उससे कहा कि आप हमेशा इतनी उम्दा तरीन खुश्बू में मुअत्तर रहते हैं इसमें कितना पैसा बिला वजह ख़र्च करते रहते हैं? तो इस पर नौजवान ने जवाब दिया कि मैंने ज़िन्दगी में कोई खुश्बू नहीं ख़रीदी और न ही कोई खुश्बू

लगाई। तो पूछने वाले ने कहा तो फिर यह खुश्बू कहाँ से और कैसे? तो नौजवान ने कहा कि यह एक राज़ है जो बतलाने का नहीं। पूछने वाले ने कहा कि आप बतला दीजिए शायद इससे हमको भी फ़ायदा होगा।

नौजवान ने अपना वाक़िआ सुनाया कि मेरे बाप ताजिर थे, घरेलू सामान बेचा करते थे, मैं उनके साथ दुकान में बैठा हुआ था, एक बूढ़ी औरत ने आकर कुछ सामान ख़रीदा और वालिद साहब से कहा कि आप लड़के को मेरे साथ भेज दीजिए, ताकि मैं इसके साथ सामान की क़ीमत भेज दूँ। मैं उस बूढ़ी औरत के साथ गया तो एक निहायत ख़ूबसूरत घर में पहुँचा और उसमें एक निहायत खुबसूरत कमरे में एक मसहरी पर एक ख़ूबसूरत लड़की मौजूद थी, वह मुझे देखते ही मेरी तरफ़ मुतवज्जा हुई क्योंकि मैं भी निहायत हसीन हूँ। मैंने ख़्वाहिश पूरी करने से इंकार किया तो उसने मुझे पकड़कर अपनी तरफ़ खींचा तो अल्लाह पाक ने मेरे दिल में यह बात डाल दी। मैंने कहा कि मुझे क़ज़ा-ए- हाजत के लिए बैतुलख़ला जाने की ज़रूरत है। उसने फ़ौरन अपनी बांदियों और ख़ादिमों से कहा कि जल्दी से बैतुलख़ला को साफ़ कर दो। मैंने बैतुलख़ला में दाख़िल होकर ख़ुद इजाबत करके नजासत को अपने बदन और कपड़ों पर मल लिया। और उसी हालत में बाहर आया। जब मुझे इस हालत में देखा तो उसने कहा कि इसे फ़ौरन यहाँ से बाहर निकाल दो, यह मजनूँ है। मेरे पास एक दिरहम था, मैंने उससे एक साबुन ख़रीदकर एक नहर में जाकर ग़ुस्ल किया, और कपड़े भी धोकर पहन लिए और मैंने यह राज़ किसी को बतलाया नहीं। जब मैं उस रात में सोया तो ख़्वाब में देखा कि एक फ़रिश्ते ने आकर मुझसे कहा कि अल्लाह तआला की तरफ़ से

तुमको जन्नत की बशारत है और मओसियत से बचने के लिए जो तदबीर तुमने इख़्तियार की थी उसके बदले में तुमको यह ख़ुश्बू पेश की जा रही है। चुनांचे मेरे पूरे बदन पर वह ख़ुश्बू लगाई गई जो मेरे बदन और कपड़ों से हर वक़्त महकती रहती है जो आज तक लोग महसूस करते हैं। वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बुल आलमीन।

कापी बनाइये और अपने गुनाह भी तहरीर कीजिए फिर तौबा कीजिए

अल्लामा याफ़ई रह० ने "अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब" में एक वाक़िया यह भी तहरीर फ़रमाया है कि एक नौजवान निहायत बदकार था लेकिन वह जब भी कोई गुनाह करता तो उसको एक कापी में नोट कर लेता था। एक बार का ज़िक्र है कि एक औरत निहायत ग़रीब उसके बच्चे तीन दिन से भूके थे, बच्चों की परेशानी नहीं बर्दाश्त कर सकी तो उसने अपने पड़ोसी से एक उ़म्दा रेशम का जोड़ा उधार लेकर उसे पहनकर निकली तो उस नौजवान ने देखकर अपने पास बुलाया, और जब उसके साथ बदकारी का इरादा किया तो औरत रोती हुई तड़पने लगी, और कहा मैं फ़ाहिशा ज़ानिया नहीं हूँ, मगर मैं बच्चों की परेशानी की वजह से इस तरह निकली हूँ, और जब तुमने मुझे बुलाया तो मुझे ख़ैर की उम्मीद हुई तो उस नौजवान ने उसे कुछ दिरहम व रुपये देकर छोड़ दिया और ख़ुद रोने लगा और अपनी माँ से आकर पूरा वाक़िआ सुना दिया, और उसकी माँ उसको हमेशा बुरे कामों से रोकती और मना करती थी। आज यह ख़बर सुनकर बहुत ख़ुश हुई और कहाः बेटा! तूने ज़िन्दगी में यही एक नेकी की है इसको भी अपनी कापी में नोट कर ले। बेटे ने कहा कि कापी में अब

कोई जगह बाक़ी नहीं है, तो वालिदा ने कहा कि कापी के हाशिए में नोट कर ले। चुनांचे हाशिए में नोट कर लिया, और निहायत ग़मगीन होकर सोया और जब बेदार हुआ तो देखा कि पूरी कापी सफ़ेद और साफ़ काग़ज़ों की है, कोई चीज़ लिखी हुई बाक़ी नहीं रही, सिर्फ़ हाशिए में जो आज का वाक़िआ नोट किया था, वही बाक़ी है और कापी के ऊपर के हिस्से में यह आयत लिखी हुई है:

اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ. (सूरः हूद, 114)

इसके बाद उसने हमेशा के लिए तौबा कर ली और इसी पर क़ाइम रहकर मरा।

अपने साथियों के साथ नर्मी का मामला करना

हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब भी कहीं कोई लश्कर रवाना फ़रमाते तो उस लश्कर के अमीर को ताकीद से यह हिदायत फ़रमाते थे कि अपने मातहतों के साथ नर्मी का मामला करना, उनको तंगी में मुब्तला न करना। उनको बशारत और ख़ुशख़बरी देते रहना। इसी तरह जब किसी को किसी इलाके या क़ौम का गर्वनर और अमीन बनाकर भेजते तो उनको हिदायत फ़रमा देते कि क़ौम के साथ अदल व इंसाफ़ और हमदर्दी का मामला करना, और उनके साथ नर्मी का मामला करना, उन्हें तंगी और सख़्ती में मुब्तला न करना, उनको दुनिया व आख़िरत में कामियाबी की बशारत देना, और आख़िरत की रग़बत दिलाते रहना और उनमें नफ़रत न फैलाना, और उनके दर्मियान मुवाफ़िक़त और इत्तिहाद पैदा करना और इख़्तिलाफ़ न फैलाना। हदीस शरीफ़ के अल्फ़ाज़ का तर्जुमा मुलाहिज़ा फ़रमाइए।

हज़रत अबू बुरदा रज़ि० इब्ने अबी मुसा फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अक्रम सल्ल० ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० और अबू मूसा अश्अरी को यमन रवाना फ़रमाया और रवानगी के वक़्त यह हिदायत फ़रमाई कि तुम दोनों नर्मी और आसानी का मामला करते रहना और लोगों के साथ तंगी और सख़्ती का मामला न करना और लोगों को दुनिया व आख़िरत की कामियाबी की बशारत की बातें पेश करते रहना और लोगों में तनफ़्फ़ुर न पैदा करना कि जिससे लोग फ़रार का रास्ता इख़्तियार करें और आपस में मुहब्बत व शफ़क़त का मामला करते रहना और इख़्तिलाफ़ व फूट की बातें न करना। —बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 426, हदीस नम्बर 2942

नोट :– इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि कलाम में नर्मी इख़्तियार कीजिए, क्योंकि अल्फ़ाज़ की ब-निस्बत लहजे का असर ज़्यादा पढ़ता है। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हराम कितना ही थोड़ा हो हलाल पर हमेशा ग़ालिब रहेगा, सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्ल० ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! जो मेरी उम्मत का वाली हो अगर वह उम्मत पर सख़्ती करे तो तू भी उसके साथ सख़्ती का मामला करना और अगर वह नर्मी करे तो तू भी उसके साथ नर्मी का मामला करना। इसलिए हर जगह ज़िम्मेदार अपने मातहतों के साथ नर्मी का मामला करें।

—सीरते आइशा रज़ि०, सैयद सुलैमान नदवी रह०, पेज 122

उक़बा बिन आमिर की अपनी वफ़ात के वक़्त अपनी औलाद को तीन नसीहतें

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० के इन्तिक़ाल का वक़्त जब क़रीब आया तो उन्होंने फ़रमाया, ऐ मेरे बेटों! मैं तुम्हें तीन बातों

से रोकता हूँ, इन्हें अच्छी तरह याद रखना:

1. हुज़ूर अक्रम सल्ल० की तरफ़ से हदीस सिर्फ़ मोतबर और क़ाबिले एतिमाद आदमी से ही लेना किसी और से न लेना।
2. क़र्ज़ा लेने की आदत न बना लेना चाहे चोग़ा पहनकर गुज़ारा करना पड़े।
3. अश्आर लिखने में न लग जाना वर्ना उनमें तुम्हारे दिल ऐसे मश्गूल हो जाएंगे कि क़ुरआन से रह जाओगे।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 231

हज़रत ज़ुल-कफ़िल का अजीब क़िस्सा

मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं यह एक नेक बुज़ुर्ग आदमी थे जिन्होंने अपने ज़माने के नबी से अहद व पैमान किए और उन पर क़ाइम रहे, क़ौम में अद्ल व इंसाफ़ किया करते थे। मरवी है कि हज़रत यस्अ बहुत बूढ़े हो गये तो इरादा किया कि मैं अपनी ज़िन्दगी में ही अपना ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूँ और देख लूँ कि वह कैसे अमल करता है, लोगों को जमा किया और कहा कि तीन बातें जो शख़्स मन्ज़ूर करे मैं उसे ख़िलाफ़त सौंपता हूँ— दिन भर रोज़ा से रहे, रात भर क़ियाम करे और कभी भी गुस्सा न हो। कोई और तो खड़ा न हुआ, एक शख़्स जिसे लोग बहुत हल्के दर्जे का समझते थे खड़ा हुआ और कहने लगा: मैं इस शर्त को पूरा कर दूंगा। आपने पूछा तू दिन को रोज़े से रहेगा और रातों को तहज्जुद पढ़ता रहेगा और न किसी पर ग़ुस्सा करेगा? उसने कहा: हाँ। यस्अ् ने फ़रमाया अच्छा अब कल सही। दूसरे रोज़ भी आपने उसी तरह मज्लिसे आम में सवाल किया लेकिन उस शख़्स के अलावा और कोई न खड़ा हुआ चुनांचे उन्हीं को ख़लीफ़ा बना

दिया गया। अब शैतान ने छोटे-छोटे शयातीन को उस बुज़ुर्ग को बहकाने के लिए भेजना शुरू कर दिया, मगर किसी की कुछ न चली, इब्लीस ख़ुद चला, दोपहर को खाने के बाद आप लेटे ही थे जो ख़बीस ने कुंडियाँ पीटनी शुरू कर दी। आपने पूछा कि तू कौन है? उसने कहना शुरू किया कि मैं एक मज़लूम हूँ, फ़रियादी हूँ, मेरी क़ौम मुझे सता रही है, मेरे साथ उसने यह किया, यह किया अब जो लम्बा क़िस्सा सुनाना शुरू किया तो किसी तरह ख़त्म ही नहीं करता, नींद का सारा वक़्त उसमें चला गया।

और हज़रत ज़ुल्-किफ़्ल दिन रात में बस उसी वक़्त ज़रा-सी देर के लिए सोते थे। आपने फ़रमायाः अच्छा शाम को आना मैं तुम्हारा इंसाफ़ करूंगा, अब शाम को जब आप फ़ैसला करने लगे हर तरफ़ उसे देखते हैं लेकिन उसका कहीं पता नहीं यहां तक कि ख़ुद जाकर इधर-उधर भी तलाश किया मगर उसे न पाया। दूसरी सुब्ह को भी वह न आया फिर जब आप दोपहर को दो-घड़ी आराम के इरादे से लेटे तो यह ख़बीस आ गया। और दरवाज़ा ठोंकने लगा। आपने खुलवा दिया और फ़रमाने लगे। मैंने तो तुमसे शाम को आने को कहा था मैं मुन्तज़िर रहा लेकिन तुम न आये। वह कहने लगा हज़रत क्या बतलाऊं जब मैंने आपकी तरफ़ आने का इरादा किया तो वह कहने लगे कि तुम न जाओ हम तुम्हारा हक़ अदा कर देते हैं। मैं रुक गया और फिर उन्होंने इंकार कर दिया और अब भी कुछ लम्बे चौड़े वाक़िआत बयान करने शुरू कर दिए और आज की नींद भी खोई। अब शाम को फिर इन्तिज़ार किया लेकिन न उसे आना था न आया। तीसरे दिन आपने आदमी मुक़र्रर किया कि देखो कोई आदमी दरवाज़े पर न आने पाये, नींद के मारे मेरी हालत बुरी हो रही है। आप

अभी लेटे ही थे जो वह मरदूद फिर आ गया। चौकीदार ने उसे रोका। यह एक ताक़ में से अन्दर घुस गया और अन्दर से दरवाज़ा खटखटाना शुरू किया। आपने उठकर पहरेदार से कहा कि देखो मैंने तुम्हें हिदायत कर दी थी फिर भी दरवाज़े पर किसी को आने दिया। उसने कहाः नहीं मेरी तरफ़ से कोई नहीं आया, अब जो ग़ौर से आपने देखा तो दरवाज़े को बन्द पाया और उस शख़्स को अन्दर मौजूद पाया। आप पहचान गये कि यह शैतान है। उस वक़्त शैतान ने कहाः ऐ वली अल्लाह! मैं तुझसे हारा, न तो तूने रात का क़ियाम किया, न तो तूने रात का क़ियाम छोड़ा, न तू इस नौकर पर ऐसे मौक़े पर ग़ुस्से हुआ। पस ख़ुदा ने उनका नाम ज़ुल्-किफ़्ल रखा इसलिए कि जिन बातों की उन्होंने किफ़ालत ली थी उन्हें पूरा कर दिखाया।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 392

वाक़ई हक़ तलबी है तो हक़ ज़रूर खुल जाता है

एक हदीस में है, हदीस तो पुरानी है मगर मुन्कर व मौज़ूअ नहीं सिर्फ़ पुरानी है लेकिन फ़ज़ाइल आमाल में है इसलिए लोग इसे क़बूल कर लेते हैं।

अरब में एक पहलवान था। रुकाना उसका नाम था, वह बड़ा ज़बरदस्त पहलवान था और मशहूर यह था कि यह एक हज़ार आदमियों से मुक़ाबला कर सकता है, बहुत ताक़तवर था, उसके बदन के वज़न की यह कैफ़ियत थी कि ऊंट ज़िब्ह करके उसकी खाल बिछा दी जाती और रुकाना उसपर बैठते और नौजवान अरब उस खाल को खींचते तो वह खाल टूट जाती, फट जाती

मगर वह हिस्सा नहीं हिलता जिस पर रुकाना बैठे हुए थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सामने इस्लाम पेश किया और फ़रमाया रुकाना! आख़िरत आने वाल है, क्यों अपनी उम्र को बर्बाद कर रहे हो, इस्लाम क़बूल कर लो और अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जा हो जाओ। उन्होंने कहा कि ऐ मुहम्मद! मैं न तो कोई आलिम व फ़क़ीह हूँ, न समझदार। मैं तो एक पहलवान हूँ मुझसे कुश्ती लड़ो तो अगर आपने मुझे पछाड़ दिया तो मैं आपका दीन क़बूल कर लूंगा। आपने फ़रमायाः बिस्मिल्लाह! वह लंगोट कस के आ गये एक दो दाव और पेच के बाद हुज़ूर सल्ल० ने उसकी कमर में हाथ डाला और एक हाथ से इस तरह उठाया जैसे कोई चिड़िया को उठाता है और आहिस्ता से ज़मीन पर रखकर छाती पर बैठ गये और फ़रमायाः "रुकाना" अब कहो। मगर रुकाना को यक़ीन नहीं आया कि मैं पिछड़ गया हूँ क्योंकि किसी ने आज तक उसे पछाड़ा ही नहीं था। और हुज़ूर सल्ल० ने इस तरह पछाड़ा कि इतनी वज़नी लाश को एंक हाथ से उठकार नचाया और आहिस्ता से रख दिया। उसने कहा कि क्या मैं पछड़ गया हूँ, मुझे तो यक़ीन नहीं आया, एक बार और कुश्ती लड़ो। तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमायाः बिस्मिल्लाह! फिर आप सल्ल० ने एक दो दाव-पेंच के बाद कमर में हाथ डालकर उठाकर नचाया और आहिस्ता से ज़मीन पर रख दिया। फ़रमायाः अब बताओ यही शर्त तो ठहरी थी। अगर तुम पछड़ गये तो इस्लाम क़बूल कर लोगे। उसने कहा कि मुहम्मद! यह आपके बदन की कुव्वत तो है नहीं कि मेरी लाश को चिड़िया की तरह उठाकर नचा दी। मालूम होता है कि आपके अन्दर कोई चीज़ है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं उस अन्दर ही वाली चीज़ की दावत दे

रहा हूँ, बदन की दावत नहीं दे रहा हूँ, तो फिर रुकाना ने इस्लाम क़बूल कर लिया और इस्लाम में पुख़्ता हो गये और बड़े बड़े काम भी किए।

एक मर्तबा बहुत से चोर आए और रात को बहुत से ऊँट बैतुल-माल से चुराकर चलते बने। सुब्ह को पता चला तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि लोगो! उनके पीछे दोड़ो, रुकाना ने कहा मैं तन्हा काफ़ी हूँ। चोर रात ही में निकल खड़े हुए थे और तेज़ी से भागे जा रहे होंगे। मालूम नहीं कितनी दूर चले जा चुके होंगे। रुकाना दौड़ पड़े और रास्ते में उनको थाम लिया और कहा कि सामान और ऊँट लेकर वापस चलो चुनांचे उनको पकड़ कर लाए तो हुज़ूर सल्ल० ने उनको सज़ाएं दीं। कहने का मक़सद यह है कि बहुत-से लोगों के दिल में हक़ आ जाता है, अगर तअस्सुब न हो और वाक़ई हक़ तलबी है तो हक़ ज़रूर खुल जाता है।

—मजालिस हकीमुलइस्लाम, पेज 162

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम की अजीब व ग़रीब फ़ज़ीलत

1. हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं जब यह आयत उतरीः

1. बादिल मश्रिक़ की तरफ़ छट गये।
2. हवाएं साकिन (रुक) हो गईं।
3. समुन्दर ठहर गया।
4. जानवरों ने कान लगा लिए।
5. शयातीन पर आसमान से शोले गिरे।
6. परवरदिगार आलम ने अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम

खाकर फ़रमाया कि जिस चीज़ पर मेरा यह नाम लिया जाएगा उसमें ज़रूर बरकत होगी।

2. इब्ने मरदूदया में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझपर एक ऐसी आयत उतरी है कि किसी नबी पर सिवाए हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ऐसी आयत नहीं उतरी वह आयत **बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम** है।

3. हज़रत इब्ने मसुऊद रज़ि० फ़रमाते हैः कि जहन्नम के 19 दारोग़ों से जो बचना चाहे वह **बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम** पढ़े। इसके भी 19 हुरुफ़ हैं, हर हुरुफ़ पर हर फ़रिश्ता से बचाव बन जाएगा। इसे इब्ने अतिया ने बयान किया है और इसकी ताकीद एक हदीस से भी की है जिसमें है कि मैंने 30 से ऊपर-ऊपर फ़रिश्तों को देखा कि वह जल्दी कर रहे थे। यह हुज़ूर ने उस वक़्त फ़रमाया था जब एक शख़्स ने "رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ" पढ़ा था। इसमें भी तीस से ऊपर-ऊपर हर्फ़ हैं। इतने ही फ़रिश्ते उतरें इसी तरह बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम में भी 19 हुरुफ़ हैं और वहाँ फ़रिश्तों की तादाद भी 19 है वग़ैरह वग़ैरह।

4. मुस्नद अहमद में है आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी पर आपके पीछे जो सहाबी सवार थे उनका बयान है कि हुज़ूर सल्ल० की ऊंटनी ज़रा फिसली तो मैंने कहा शैतान का सत्यानास हो। आप सल्ल० ने फ़रमाया यह न कहो, इससे शैतान फूलता है और ख़्याल करता है कि जैसे उसने अपनी कुव्वत से गिराया। हाँ बिस्मिल्लाह कहने से वह मक्खी की तरह ज़लील व पस्त हो जाता है। नसई ने अपनी किताब عملاليوم والليله में और इब्ने मरदूदया ने अपनी तफ़सीर में भी इसे वारिद किया है और उनका नाम उसामा बिन उमैर बतलाया है और उसमें है कि

बिस्मिल्लाह कह, यह बिस्मिल्लाह की बरकत है इसलिए हर काम और हर बात के शुरू में बिस्मिल्लाह कह लेना मुस्तहब है खुत्बे के शुरू में बिस्मिल्लाह कहनी चाहिए। हदीस में है कि जिस काम को **बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम** से शुरू न किया जाए वह बे-बरकत होता है, पाख़ाना में जाते वक़्त भी बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 38

पड़ोसियों के हक़ में बहुत-सी हदीसें आई हैं, कुछ पढ़ लीजिए

1. एक अंसारी सहाबी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने के लिए घर से चला। वहाँ पहुँचकर देखता हूँ कि एक सहाबी खड़े हैं और हुज़ूर सल्ल० उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हैं, मैंने ख़्याल किया कि शायद उन्हें आप सल्ल० से काम होगा। हुज़ूर सल्ल० खड़े हैं और उनसे बातें हो रही हैं। बड़ी देर हो गई, यहाँ तक कि मुझे आप सल्ल० के थक जाने के ख़्याल ने बेचैन कर दिया। बहुत देर के बाद आप सल्ल० लौटे और मेरे पास आए। मैंने कहाः हुज़ूर सल्ल० उस शख़्स ने तो आपको बहुत देर तक खड़ा रखा, मैं तो परेशान हो गया, आपके पाँव थक गये होंगे। आप सल्ल० ने फ़रमायाः अच्छा तुमने उनको देखा? मैंने कहाः हाँ ख़ूब अच्छी तरह देखा। फ़रमायाः जानते हो वह कौन थे? वह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे, मुझे पड़ोसियों के हुक़ूक़ की ताकीद करते रहे, यहाँ तक कि इतने हुक़ूक बयान किये कि मुझे खटका हुआ कि ग़ालिबन आज तो पड़ोसी को वारिस ठहरा देंगे।

2. बज़्ज़ार में है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

पड़ौसी तीन तरह के हैं:

1. एक हक़ वाला यानी अदना।
2. दो हक़ वाले।
3. तीन हक़ वाले यानी आला।

एक हक़ वाला वह है जो मुश्रिक हो और उससे रिश्तेदारी न हो, दो हक़ वाला वह है जो मुसलमान हो और रिश्तेदार न हो, एक हक़ इस्लाम दूसरा हक़ पड़ोसी। तीन हक़ वाला वह है जो मुसलमान भी हो और पड़ौसी भी हो और रिश्ते-नाते का भी हो तो (1) हक़ इस्लाम, (2) हक़ हमसायगी, (3) हक़ सिल-ए-रहमी— तीन हक़ उसके होंगे।

3. मुस्नद अहमद में है कि हज़रत आईशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं, मैं एक को तोहफ़ा भेजना चाहती हूँ तो किसे भिजवाऊं? आप सल्ल० ने फ़रमाया: जिसका दरवाज़ा क़रीब हो।

4. तबरानी में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वुज़ू किया, लोगों ने आपके वुज़ू के पानी को लेना और मलना शुरू किया। आप सल्ल० ने पूछा: ऐसा क्यों करते हो? उन्होंने कहा: अल्लाह तआला और उसके रसूल की मुहब्बत में। आप सल्ल० ने फ़रमाया: जिसे यह खुश लगे कि अल्लाह और और उसका रसूल उससे मुहब्बत करे तो उसे चाहिए कि जब बात करे सच करे और जब अमानत दी जाए तो अदा करे। (तफ़्सीर इब्ने कसीर में यह हदीस यहीं पर ख़तम है लेकिन शायद अगला जुमला इसका ग़लती से रह गया है जिसका सही ताल्लुक़ इस मसले से है वह यह कि उसे चाहिए पड़ोसी के साथ सुलूक और एहसान करे। मुतर्जिम)

5. मुस्नद अहमद में है कि क़ियामत के दिन सबसे पहले जो झगड़ा खुदा के सामने पेश होगा वह दो पड़ोसियों का होगा।

6. मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं मुझे हज़रत जिब्रील अलैहि० पड़ोसियो के बारे में यहाँ तक वसीयत और नसीहत करते रहे कि मुझे गुमान हुआ कि शायद यह पड़ोसियों को वारिस बना देंगे। फ़रमाते हैं, बेहतर साथी अल्लाह के नज़दीक वह है जो अपने हमराहियों के साथ खुश सुलूक ज़्यादा हो और पड़ोसियों में सबसे बेहतर खुदा तआला के नज़दीक वह है जो हमसायों से नेक सुलूक ज़्यादा हो। फ़रमाते हैं कि इंसान को न चाहिए कि अपने पड़ोसी की आसूदगी के बिना खुद शिक्म सेर हो जाए। एक मर्तबा आप सल्ल० ने फ़रमायाः ज़िना के बारे में तुम क्या कहते हो? लोगों ने कहाः वह हराम है, अल्लाह और उसके रसूल ने उसे हराम किया है और क़ियामत तक वह हराम ही रहेगा। आप सल्ल० ने फ़रमायाः सुनो, दस औरतों से ज़िना करने वाला उस शख़्स के गुनाह से कम गुनाहगार है जो अपनी पड़ोसी औरत से ज़िना करे। फिर पूछाः तुम चोरी के बारे में क्या कहते हें? उन्होंने जवाब दिया कि उसे भी अल्लाह और उसके रसूल ने हराम किया है और वह भी क़ियामत तक हराम है। आप सल्ल० ने फ़रमाया सुनो! दस घरों में चोरी करने वाले का गुनाह उस शख़्स के गुनाह से हल्का है जो अपने पड़ोसी के घर से कुछ चुराए।

7. सहीहैन की हदीस में है कि हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० सवाल करते हैं कि या रसूलुल्लाह सल्ल०! कौन-सा गुनाह सबसे बड़ा है? आप सल्ल० ने फ़रमायाः यह कि तू अल्लाह के साथ शरीक ठहराए हालांकि उसी एक ने तुझे पैदा किया है, मैंने पूछाः

फिर कौन-सा? फ़रमायाः तू अपने पड़ोसन से ज़िनाकारी करे।

8. (मुस्नद इमाम अहमद) मुस्नद अब्द बिन हमीद में है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स अवाली मदीना से आया, उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्ल० और हज़रत जिब्रील अलैहि० उस जगह नमाज़ पढ़ रहे थे जहाँ जनाज़ों की नमाज़ पढ़ी जाती थी। जब आप सल्ल० फ़ारिग़ हुए तो उस शख़्स ने कहाः हुज़ूर सल्ल० के साथ यह दूसरा कौन-सा शख़्स नमाज़ पढ़ रहा था? आप सल्ल० ने फ़रमायाः तुमने उन्हें देखा? उसने कहाः हाँ। फ़रमायाः तुमने बहुत बड़ी भलाई देखी, यह जिब्रील अलैहि० थे, मुझे पड़ोसी के बारे में वसीयत करते रहे, यहाँ तक कि मैंने देखा कि अन्-क़रीब उसे वारिस बना देंगे।

—तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 561

पड़ोसी के यहाँ खाना भेजना

मुस्लिम शरीफ़ के अन्दर अबुज़र ग़िफ़ारी रज़ि० से एक रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने बतौर वसीयत के हज़रत अबुज़र ग़िफ़ारी रज़ि० से फ़रमाया कि जब तुम खाने की हंडिया तैयार करो तो उसमें ज़रा शोरबा ज़्यादा कर दिया करो ताकि तुम अपने पड़ोसियों के पास भी कुछ भेज सको। —मुस्लिम शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 29

हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि० को जो वसीयत की वह पूरी उम्मत के लिए है, अकेले उनके लिए नहीं है। बुख़ारी शरीफ़ में एक रिवायत है जो बुख़ारी में चार जगह पर लिखी हुई है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस रिवायत के अन्दर पड़ोसी के साथ हमदर्दी और रवादारी को कमाले ईमान की अलामत क़रार दिया जो शख़्स पड़ोसियों के साथ ग़मख़्वारी व

हमदर्दी का मामला नहीं करता है वह मोमिन कामिल नहीं है। चुनांचे हुज़ूर ने इर्शाद फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआला और आख़िरत पर ईमान रखता है तो वह हरगिज़ अपने पड़ोसी को तक्लीफ़ न पहुंचाए। और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है वह ज़रूर अपने पड़ोसी के साथ हमदर्दी और इक्राम का मामला करे और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है वह ज़रूर मेहमानों की मेहमानदारी और उनके साथ इज़्ज़त व इक्राम का मामला करे।

—बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 779, हदीस 4991

जब पड़ोसी के साथ हमदर्दी और रवादारी का मामला करना कमाले ईमान की अलामत है तो यही अल्लाह और रसूल से मुहब्बत की अलामत होगी जिस शख़्स के अन्दर यह सिफ़ात मौजूद हैं उसका अल्लाह व रसूल से मुहब्बत का दावा सच्चा होगा और जिस शख़्स के अन्दर पड़ोसी की हमदर्दी नहीं है उसका अल्लाह और रसूल से मुहब्बत का दावा झूठा है।

यहूदी पड़ोसी का हक़

तिर्मिज़ी शरीफ़ के अन्दर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की एक रिवायत है कि जब उनके यहाँ कोई बकरी वग़ैरह ज़िब्ह की जाती तो वह पूछा करते थे कि हमारे यहूदी पड़ोसी के पास तोहफ़ा पहुंचाया है या नहीं। —तिर्मिज़ी, हिस्सा 2, पेज 16

इसलिए कि पड़ोसी का हक़ अल्लाह तआला ने बिल्कुल अलग थलग रखा है। चाहे मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, हर हाल में उसका हक़ होता है पड़ोसी होने की वजह से। लिहाज़ा हमारे हिन्दुस्तान के अन्दर हर तरफ़ से हिन्दु भाई हमारे पड़ोसी हैं,

हमको उनका भी ख़याल रखना चाहिए।

पड़ोसी के बच्चों की दिलशकनी से बचना

हज़रत इमाम अबू हामिद ग़ज़ाली रह० ने अहयाउ़ल उलूम के अन्दर नक़्ल फ़रमाया है कि तुम अपने घर की इमारत को इतनी ऊँची न करो जिससे पड़ोसी का घर ढक जाये और उसके घर में हवा पहुंचने से रुकावट बन जाए। अलबत्ता पड़ोसी तुम्हारे घर के ऊँचा करने में राज़ी है तो कोई हर्ज नहीं है। और अपनी ऊँची-ऊँची इमारतों के ज़रिए ग़रीब पड़ोसी को मत सताया करो कि उसका घर बेकार न हो जाये और उसके घर में धूप और हवा दाख़िल न हो, और जबक तुम बाज़ार से फल-फ्रूट ख़रीदकर लाओ तो पड़ोसी के यहाँ भी उसमें से भेज दो। वर्ना उसको अपने घर में ख़ुफ़िया तौर पर दाख़िल कर लो। और तुम्हारे बच्चे फल लेकर बाहर न निकलें कि उससे पड़ोसी के बच्चे कबीदा ख़ातिर हों और अपनी पकी हुई हांडी से और अपने पकवान की ख़ुश्बू से पड़ोसी को मत सताओ। हाँ, अलबत्ता पड़ोसी के यहाँ उसमें से कुछ भेजने का इरादा हो तो कोई हर्ज नहीं ।

—अहयाउ़ल उ़लूम, हिस्सा 2, पेज 119

पड़ोसी के हक़ के बारे में दो हदीसें और पढ़ लीजिए

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! फ़लां औरत के बारे में यह मशहूर है कि वह कस्रत से रोज़ा-नमाज़ और सद्क़ा-ख़ैरात करने वाली है (लेकिन) अपने पड़ोसियों को अपनी ज़ुबान से तकलीफ़ देती है

यानी बुरा-भला कहती है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः वह दोज़ख़ में है। फिर एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! फ़लां औरत के बारे में यह मशहूर है कि वह नफ़्ली रोज़ा, सद्क़ा, ख़ैरात और नमाज़ तो कम करती है बल्कि उसका सद्क़ा व ख़ैरात पनीर के कुछ टुकड़ों से आगे नहीं बढ़ता लेकिन अपने पड़ोसियों को अपनी ज़बान से कोई तक्लीफ़ नहीं देती, रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, वह जन्नत में है।—मुस्नद अहमद

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने पूछाः या रसूलुल्लाह सल्ल०! मुझे कैसे मालूम हो कि मैंने यह काम अच्छा किया है और यह काम बुरा किया है? रसूलुल्लाह सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुमने अच्छा किया तो यक़ीनन तुमने अच्छा किया और जब तुम अपने पड़ोसियों को यह कहते हुए सुनो कि तुमने बुरा किया है तो यक़ीनन बुरा किया।

—रवाहुत तबरानी, मज्मउज़्ज़वाइद, हिस्सा 10, पेज 480

किन हालात में अम्र बिल् मारूफ़ व नहिअनिल मुन्कर की ज़िम्मेदारी साक़ित हो जाती है

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया जिसका मतलब यह है कि अपने दीन की फ़िक्र के साथ दूसरे बन्दगाने खुदा के दीन की फ़िक्र और इस सिलसिले में अमर बिल् मारूफ़ व नही अनिल मुन्किर भी दीनी फ़रीज़ा और खुदावन्दी मुतालबा है इसलिए उसको बराबर करते रहो, हाँ जब उम्मत में नीचे दिए गये रज़ाइल आ जाएं—

1. दौलत की पूजा होने लगे।
2. बुख़्ल, कन्जूसी उम्मत का मिज़ाज बन जाये।
3. ख़्वाहिशाते नफ़्सानी का इत्तिबाअ् किया जाने लगे।
4. आख़िरत को भुलाकर दुनिया ही को मक़्सूद बना लिया जाए।
5. खुदराइ-ए-खुदबीनी की वबा आम हो जाये तो इस बिगड़ी हुई फ़िज़ा में चूंकि अम्र बिल् मारूफ़ और नहिये अनिल मुन्कर की तासीर व इफ़ादियत और अवाम की इस्लाह-पज़ीरी की उम्मीद नहीं होती इसलिए चाहिए कि बन्दा अवाम की फ़िक्र छोड़कर बस अपनी ही इस्लाह और मअसित से हिफ़ाज़त की फ़िक्र करे।

आख़िर में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बाद में ऐसे दौर भी आएंगे जब दीन पर क़ाइम रहना और अल्लाह व रसूल के एहकाम पर चलना हाथ में आग लेने की तरह तक्लीफ़-देह और सब्र आज़मा होगा। ज़ाहिर है कि ऐसे हालात में खुद दीन पर क़ाइम रहना बहुत बड़ा जिहाद होगा और दूसरों की इस्लाह की फ़िक्र और इस सिलसिले में अमर बिल् मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर की ज़िम्मेदारी बाक़ी नहीं रहेगी और ऐसी नामुवाफ़िक़ फ़िज़ा और सख़्त हालात में अल्लाह व रसूल के एहकाम पर सब्र व साबित- क़दमी के साथ अमल करने वालों के बारे में आप सल्ल० ने फ़रमाया कि उनको पचास-पचास तुम्हारे जैसे अमल करने वालों के बराबर अज्र व सवाब मिलेगा।

—मआरिफ़ुल हदीस, हिस्सा 8, पेज 103

पीर के दिन की छः खुसूसियतें

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की एक रिवायत है, वह

फ़रमाते हैं कि यौमुल अस्नैन यानी पीर के दिन को आक़ा-ए-नामदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के साथ एक ख़ास ख़ुसूसियत और मुनासिबत है। वह फ़रमाते हैं :

1. पीर के दिन आप सल्ल० की विलादत बा सआदत हुई
2. पीर ही के दिन आप सल्ल० को नुबुव्वत मिली।
3. पीर के दिन हज्रे असवद को उसकी जगह रखा गया।
4. पीर के दिन आप सल्ल० ने मक्का मुकर्रमा से मदीनतुल मुनव्वरा हिजरत के लिए ग़ारे सूर से सफ़र की इब्तिदा फ़रमाई।
5. पीर के दिन आप मदीनतुल मुनव्वरा पहुँचे।
6. पीर ही के दिन आप सल्ल० की वफ़ात का सानिहा पेश आया।

—मुस्नद अहमद बिन हम्बल, हिस्सा 1, पेज 277, मुस्नद अहमद रक़्म हदीस 2506

हुज़ूर सल्ल० के ज़माने के पेड़ भी हुज़ूर सल्ल० को पहचानते थे मगर आज का उम्मती हुज़ूर को नहीं पहचानता

एक हदीस पाक हदीस की बहुत-सी किताबों में सहीह सनदों के साथ मरवी है कि हज़रत सैयदुल कोनैन सल्ल० एक सफ़रत में थे, सफ़ के बीच एक देहाती आपके सामने से गुज़रा। आप सल्ल० ने उसको अपने पास बुलाकर फ़रमाया कि तुम कहाँ जाना चाहते हो? उस देहाती ने कहा: मैं अपने घर जा रहा हूँ, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुम अपने घर जा रहे हो तो हमारे पास से एक ख़ैर की बात लेकर जाओ तो उस देहाती ने कहा वह कौन-सी ख़ैर की बात है, जो आप सल्ल० पेश करना चाहते हैं?

तो आप सल्ल० ने कलिम-ए-शहादत के यह अल्फ़ाज़ सुना दिए।

تَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ.

तुम इस बात की शहादत दे दो कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई हमसर नहीं और मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। इसपर उस देहाती ने कहा कि इसकी सच्चाई पर कौन गवाही देगा? तो वहाँ से कुछ दूरी पर घाटी के किनारे पर एक पेड़ था तो आक़ा-ए-नामदार अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि यह पेड़ गवाही देगा। चुनांचे आप सल्ल० ने उस पेड़ को अपने पास बुलाया तो वह पेड़ ज़मीन फाड़ता हुआ हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया सल्ल० की ख़िदमते बारगाह में पहुँचकर उसने कलिमा शरीफ़ की तीन मर्तबा गवाही दी, उसके बाद वह पेड़ जैसे आया था वैसे ही अपनी जगह वापस पहुंच गया। हज़रत ख़ातिमुल अम्बिया जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० का यह मोजिज़ा जब उस देहाती ने देखा तो बेसाख़्ता पुकार उठा, आप सल्ल० अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, मैं आप पर ईमान ले आया हूँ। मैं यहाँ से जाकर अपने क़बीले के सामने यह कलिमा पेश करूंगा। अगर वे लोग इसको क़बूल कर लेंगे तो मैं उनको लेकर आप सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हो जाउंगा और अगर वे लोग क़ुबूल नहीं करेंगे तो मैं अपने क़बीले को छोड़कर अकेले आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर आप ही के साथ रहूंगा। यह हज़रत सैयदुल कोनैन अलैहि वस्सलातु वस्सलाम का हैरतअंगेज़ मोजिज़ा है कि पेड़ का ज़मीन फाड़ते हुए आ जाना फिर वापस चले जाना, इंसान की अक़्ल को ऐसी हैरत में डालने वाला है कि बड़े-बड़े साइंसदाँ और ऐटमी दिमाग़ वाले ऐसा मोजिज़े को समझने से क़ासिर हैं इसलिए कि मोजिज़ा का ताल्लुक़

खुदाई ताक़त से है, इंसानी अक़्ल से नहीं है। एक-एक मोजिज़ा देखकर पूरे-पूरे क़बीले और इलाक़े नूरे ईमानी की दौलत से सरफ़राज़ हो चुके हैं। —मज्मउज़ ज़वाइद, हिस्सा 8, पेज 292, हदीस 5636

जहन्नम के सात तब्क़े हैं

जहन्नम में सात तब्क़ हैं, हर तब्क़ ख़ास लोगों के लिए ख़ास होगा। जैसे एक तब्क़ एक दरवाज़ा मुश्रिकों के लिए, एक दहरियों के लिए, एक ज़िन्दीक़ों के लिए, एक ज़ानियों, सूदख़ोरों, चोरों और डाकूओं के लिए वग़ैरह-वग़ैरह या सात दरवाज़ों से मुराद सात तब्क़ और सात दर्जे हैं। 1. जहन्नम। 2. लिज़ा। 3. हुत्मा। 4. सईर। 5. सक़र। 6. जहीम। 7. हाविया।

1. **जहन्नम**– यह सबसे ऊपर वाला दर्जा है जिसमें मुवह्हिदीन को दाख़िल किया जाएगा जिन्हें कुछ सज़ा देने के बाद या सिफ़ारिश पर निकाल दिया जाएगा।
2. **लिज़ा**– यहूदी के लिए मख़्सूस है।
3. **हुत्मा**– ईसाई के लिए मख़्सूस है।
4. **सईर**– साबी के लिए मख़्सूस है।
5. **सक़र**– मजूसी के लिए मख़्सूस है।
6. **जहीम**– मुश्रिकीन के लिए मख़्सूस है।
7. **हाविया**– मुनाफ़िक़ीन के लिए मख़्सूस है।

सबसे ऊपर वाले दर्जे का नाम जहन्नम है उसके बाद इसी तर्तीब से नाम हैं। —फ़तहुल क़दीर, तफ़्सीर मस्जिद नब्वी, हिस्सा 1, पेज 718, तफ़्सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 95

अपना प्रोग्राम इस्लामी साल व इस्लामी तारीख़ के मुताबिक़ बनाइये, इसमें बरकत भी है और नूरानियत भी

इस्लाम से पहले सिर्फ़ ईसवी साल और महीनों से तारीख़ लिखी जाती थी और मुसलमानों में तारीख़ लिखने का दस्तूर नहीं था। हज़रत उ़मर रज़ि० के दौरे ख़िलाफ़त 17 हिज्री में हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० ने हज़रत उ़मर रज़ि० के पास ख़त लिखा कि आपकी तरफ़ से हुकूमत के अलग-अलग इलाकों में खुतूत जारी होते हैं मगर आपके उन ख़तों में तारीख़ नहीं होती और तारीख़ लिखने से बहुत फ़ायदा होता है कि किस दिन आपकी तरफ़ से हुक्म जारी हुआ और कब पहुंचा और कब उसपर अमल हुआ। इन सब बातों के समझने का मदार तारीख़ लिखने पर है तो हज़रत उ़मर रज़ि० ने इसको निहायत माक़ूल बात समझा और फ़ौरी तौर पर अकाबिर सहाबा की एक मिटिंग बुलाई। इसमें मशविरा देने वाले अकाबिर सहाबा की तरफ़ से चार क़िस्म की रायें सामने आईं—

1. अकाबिर सहाबा की एक जमाअत की राय हुई कि आप सल्ल० की विलादत के साल से इस्लामी साल की शुरूआत की जाए।
2. दूसरी जमाअत की यह राये हुई कि नुबुव्वत के साल से इस्लामी साल की शुरूआत की जाए।
3. तीसरी जमाअत की यह राए हुई कि हिज्रत से इस्लामी साल की शुरूआत की जाए।
4. चौथी जमाअत की राए यह हुई कि आप सल्ल० की वफ़ात

से इस्लामी साल की शुरूआत की जाए।

इन चारों क़िस्म की रायों को समाने आने के बाद उनपर बा-ज़ाबता बहस हुई तो हज़रत उ़मर रज़ि० ने यह फ़ैसला सुनाया कि विलादत या नुबुव्वत से इस्लामी साल की शुरूआत करने में इख़्तिलाफ़ सामने आ सकता है। इसलिए कि आपकी विलादत का दिन उसी तरह से आपकी बेअ़्सत का दिन क़तई तौर पर इस वक़्त मुतअय्यिन नहीं है, बल्कि इख़्तिलाफ़ है और वफ़ात से शुरूआत इसलिए मुलासिब नहीं है कि वफ़ात का साल इस्लाम और मुसलमानों के ग़म और सद्मे का साल है। इसलिए मुनासिब यह होगा कि हिज्रत से इस्लामी साल की शुरूआत की जाए, इसमें चार ख़ूबियाँ हैं—

1. हज़रत उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हिज्रत ने हक़ व बातिल के दर्मियान में वाज़ेह इम्तियाज़ पैदा कर दिया।
2. यही वह साल है जिसमें इस्लाम को इ़ज़्ज़त और क़ुव्वत मिली।
3. यही वह साल है जिसमें नबी-ए-करीम सल्ल० और मुसलमान अम्न व सुकून के साथ बग़ैर ख़ौफ़-व-ख़तर के अल्लाह की इ़बादत करने लगे।
4. इसी साल मस्जिदे नब्वी की बुनियाद रखी गई।

इन तमाम ख़ूबियों की वजह से तमाम सहाबा किराम का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ इस बात पर हुआ कि हिज्रत के साल ही से इस्लामी साल की शुरूआत होगी। यह पूरी तफ़्सीर बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 560 हदीस 3794 393 के तहत शरह में फ़त्हुल बारी, मत्बअ़् दारुल रियान, हिस्सा 7, पेज 315, मत्बअ़् अशरफ़िया देवबन्द, हिस्सा 7, पेज 341, उम्दतुल क़ारी नुस्ख़ा

क़दीम, हिस्सा 7, पेज 66, अल्-रौज़ुल अनफ़, हिस्सा 4, पेज 256 में मौजूद है।

फिर उसी मज्लिस में दूसरा मसला उठा कि साल में बारह महीने हैं उनमें चार महीने शहर हराम 1. ज़ी-क़ादा, 2. ज़िल्-हिज्जा, 3. मुहर्रम, 4. रजब, जो जमादिस्सानी और शाबान के दर्मियान में है। —बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 632, हदीस 4228

साल के महीने की शुरूआत में भी अकाबिर सहाबा की अलग-अलग रायें सामने आईं कि साल के महीने की शुरूआत किस महीने से की जाए।

चुनांचे इस सिलसिले में अकाबिर सहाबा की तरफ़ से चार क़िस्म की राय समाने आईं—

1. एक जमाअत ने यह मशविरा दिया कि रजब के महीने से साल के महीने की शुरूआत की जाए इसलिए कि रजब से ज़िल्-हिज्जा तक छः महीने होते हैं फिर मुहर्रम से रजब की शुरूआत तक छः महीने होते हैं।
2. दूसरी जमाअत ने मशविरा दिया कि रमज़ान के महीने से साल के महीने की शुरूआत की जाए, इसलिए कि रमज़ान सबसे अफ़्ज़ल तरीन महीना है जिसमें पूरा क़ुरआन करीम नाज़िल हुआ।
3. तीसरी जमाअत ने यह मशविरा दिया कि मुहर्रम के महीने से साल के महीने की शुरूआत की जाए इसलिए कि माहे मुहर्रम में हज्जाज किराम हज के लिए वापस आते हैं।
4. चौथी जमाअत ने यह मशविरा दिया कि रबीउ़ल अव्वल से साल के महीने की शुरूआत की जाए। इसलिए कि इसी महीने में हुज़ूर सल्ल० ने हिजरत फ़रमाई कि शुरू रबीउ़ल

अव्वल में मक्का मुकर्रमा से सफ़र शुरू फ़रमाया और 8 रबिउ़ल अव्वल को मदीना मुनव्वरा पहुँच गये।

तो हज़रत उमर रज़ि० ने सबकी राय निहायत एहतराम के साथ सुनी फिर आख़िर में यह फ़ैसला दिया कि मुहर्रम के महीने से साल के महीने की शुरूआत होनी चाहिए, इसकी दो ख़ूबियाँ सामने आईं–

1. हज़रात अन्सार रज़ियल्लाहु अन्हुम ने बैते अक़्बा के मौक़े पर हुज़ूर सल्ल० को मदीनतुल मुनव्वरा हिज्रत करके तशरीफ़ लाने की दावत पेश फ़रमाई थी और आप सल्ल० ने अन्सार की दावत क़बूल फ़रमाई और यह ज़िल् हिज्जा के महीने में हज के बाद पेश आया था और हुज़ूर सल्ल० ने मुहर्रम के शुरू से सहाबा रज़ि० को हिज्रत के लिए रवाना करना शुरू फ़रमा दिया था लिहाज़ा हिज्रत की शुरूआत मुहर्रम के महीने से हुई और इसकी तकमील रबीउ़ल अव्वल में आप सल्ल० की हिज्रत से हुई।
2. हज इस्लाम की एक तारीख़ी इबादत है जो साल में सिर्फ़ एक मर्तबा होती है और हज से फ़राग़त के बाद मुहर्रम के महीने में हाजी लोग अपने घर वापस आते हैं, इन ख़ूबियों की वजह से साल के महीने की शुरूआत मुहर्रम से मुनासिब है।

इसपर तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ् हुआ कि साल के महीने की शुरूआत मुहर्रम से होगी। इसलिए इस्लामी साल की शुरूआत हिज्रत से और इस्लामी महीने की शुरूआत मुहर्रमुल हराम से मान ली गई और इसी पर उम्मत का अमल जारी है।

(बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 560, हदीस 3794, फ 3934, फ़तुल बारी मतबअ् दारुल रियान, हिस्सा 7, पेज 315, मतबअ् अशरफिया देवबन्द, हिस्सा 7, पेज 341, अल्-रौज़ुल अनफ़, हिस्सा 4, पेज 256, उम्दतुल क़ारी, नुस्ख़ा क़दीम, हिस्सा 7, पेज 66)

नोटः— हमारे प्रोग्राम में हमारी शादी ब्याह की तारीख़ें, सफ़र की तारीख़ें, कारोबार शुरू करने की तारीख़ें और मामलात व मआशिरत में जो भी प्रोग्राम तै हुआ उसपर अमल इस्लामी साल और इस्लामी तारीख़ों के मुताबिक़ होना चाहिए, इसलिए कि इस्लामी साल और इस्लामी महीने के मुताबिक़ प्रोग्राम बनाने से प्रोग्राम में रूहानियत व नूरानियत आयेगी, बहुत अफ़सोस की बात है कि उम्मत का बहुत बड़ा तब्क़ा इस्लामी साल व इस्लामी महीनों को जानता ही नहीं है, अपने बच्चों को इस्लामी साल और इस्लामी महीने की अहमियत बतलाया करो। अल्लाह ने रोज़ा, ईद, हज का प्रोग्राम इस्लामी साल व इस्लामी तारीख़ों पर रखा है, ईसवी तारीख़ों पर नहीं रखा। ईसवी तारीख़ ताबेअ् है, इस्लामी तारीख़ के, अल्लाह तआला हमको अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

इ़ल्म और माल में फ़र्क़ (एक ख़त का जवाब)

हज़रत अ़ली रज़ि० फ़रमाते हैं कि इ़ल्म और माल में फ़र्क़ है, वह यह कि माल को जितना ख़र्च करो घटता है और इ़ल्म को जितना ख़र्च करो उतना बढ़ता है। अगर इ़ल्म कहीं घट जाया करता तो जो हाफ़िज़े क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाने बैठता तो जितनी आयतें बच्चों को सिखलाया करता ख़ुद भूल जाया करता उसका इ़ल्म दूसरे के पास मुन्तक़िल हो जाया करता हालांकि जितना पढ़ाता है उतना उस्ताद पुराना हो जाता है, इसका इ़ल्म तरक़्क़ी कर जाता है। ग़र्ज़ इ़ल्म को जितना ख़र्च करो बढ़ता है, दौलत को

जितना ख़र्च करो घटती है।

दूसरा फ़र्क़ यह है कि माल की हिफ़ाज़त मालिक को करनी पड़ती है। चार पैसे होंगे तो आपको फ़िक्र है कि रात को कोई चोर न आ जाए, तो आपको ख़ुद माल की हिफ़ाज़त करनी पड़ती है। और इल्म आलिम की हिफ़ाज़त करता है। आलिम को ज़रूरत नहीं, इल्म ख़ुद बताएगा कि यह ख़तरे का रास्ता है यह नजात का। तो इल्म अपने आलिम की ख़ुद हिफ़ाज़त करता है, मगर माल अपने मालिक की हिफ़ाज़त नहीं करता, मालिक को हिफ़ाज़त करनी पड़ती है।

अब ज़ाहिर बात है कि माल आएगा तो सौ मुसीबतें साथ लेकर आएगा कि हिफ़ाज़त करो, चोर से और उससे वग़ैरह-वग़ैरह। और इल्म आएगा तो एहसान जतलाता हुआ आएगा कि मैं तेरा मुहाफ़िज़ हूँ, मैं तेरी ख़िदमत करूंगा, मैं तुझे नजात का रासता बतलाऊंगा, तो इल्म जैसी चीज़ अगर कोई सिखलाए तो सबसे बड़ा मोहसिन है कि उसने दुनिया और आख़िरत का रास्ता खोल दिया।

दौलत से रासते नहीं खुलते उससे तो आदमी बहकता है सिवाए इसके कि वहाँ भी इल्म ही काम आता है। अगरचे इल्म के मुताबिक़ कमाए और इल्म के मुताबिक़ ख़र्च करे तो दौलत कमा देगी, और अगर जाहिलाना तरीक़े से कमाए, हलाल व हराम की इम्तियाज़ न करे और ख़र्च करने में हलाल व हराम का इम्तियाज़ न हो तो दौलत मुसीबत बन जाती है।

अब तक तो हम अक़ीदे से समझते थे कि भई दौलत को बेजा तरीक़े से कमाओ तो मुसीबत बन जाती है मगर आज तो दुनिया में मुशाहिदा हो रहा है यानी जिनके पास नाजाइज़ तरीक़े से

कमाई हुई दौलत थी आज वह मुसीबत में मुब्तला हैं वह कहते हैं कि खुदा के लिए दौलत निकले, जान तो हमारी बच जाए। कोई पहाड़ों में छिपा रहा है, कोई समुन्दर में डाल रहा है मगर गवरमेंट है कि खोज निकाल कर उन चीज़ों को निकाल रही है तो मालदारों पर एक अजीब मुसीबत गुज़र रही है।

यह अल्लाह मियां का फ़ज़्ल है कि इस वक़्त हम जैसे लोग जो यह कहा करते थे कि भई थोड़े पैसे काफ़ी हैं। जो ग़रीब या ज़ाहिद थे आज उन्हें उमरा से कहने का मौक़ा है कि भई आराम में तो हम हैं तुम्हारी दौलत ने तुम्हें फ़ायदा नहीं दिया। हमारी ग़ुर्बत ने हमें फ़ायदा दिया। फ़क़ीर के घर गवरमेंट का कोई आदमी नहीं आएगा कि टैक्स अदा करो। वह कहेगा कि मेर हाथ पहले ही कुछ नहीं, मैं कहाँ से अदा करूं, वह आराम से है, और जिसके हाथों में सबकुछ है वह मुसीबत में मुब्तिला है। हज़रत थानवी रह० कहा करते थे कि हम कुछ नहीं रखते, इसलिए ग़म भी कुछ नहीं रखते, हम दस्तार भी नहीं रखते, पेच व ग़म कहाँ से रखते? जिस पर दस्तार होगी वह पेच व ग़म की फ़िक्र कर ले यहाँ तो दस्तार ही लापता है, यहाँ कपड़ा ही लापता है तवक्कली और दामन की फ़िक्र क्यों होगी?

बहरहाल जो लोग आज कम यानी ज़रूरत के मुताबिक़ रखते हैं वह आराम में हैं और जो ज़्यादा रखते हैं वह मुसीबत में हैं। मगर क्यों मुब्तला हैं? सिर्फ़ ज़्यादा रखने की वजह से नहीं, इस्लाम ने यह नहीं कहा कि तुम मुफ़्लिस और क़ल्लाश बनो, नाजाइज़ तरीक़े पर ज़्यादा रखते हो, इसलिए परेशान हो। जिसके पास जाइज़ तरीक़े से है वह आज भी परेशान नहीं है।

इससे मालूम हुआ कि जाइज़ रास्ते पर चलना हमेशा राहत की

वजह बनता है। नाजाइज़ रास्ते पर चलना हमेशा मुसीबत की वजह होता है।

चाहे वह क़ानूनन नाजाइज़ हो या शरअ़न जाइज़ हो। जब किसी नाजाइज़ चीज़ का आदमी इर्तिकाब कर ले तो मुसीबत में मुब्तला होगा।

नोट :– ऊपर दिया मज़मून एक साहब जिनके पास काफ़ी माल था और काफ़ी रक़म थी अचानक उनपर नामुनासिब हालात आये कि रातों रात उनका सारा माल ख़तम हो गया चूंकि वह आलिम भी थे और माल वाले भी थे। रातों रात ऐसे हालात आए, उन्होंने ख़त लिखा इसके जवाब में यह मज़मून लिखा है। अल्लाह तआला नामुनासिब हालात से सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन!

60 रूहानी नुस्ख़े वालिद साहब रह० की ख़ास अलमारी से मिले

ग़म मत कर

1. مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيهَا ط (पारा 1, आयत 71, सूरः बक़रह)

अगर आपके बदन पर नासूर हो या कोई दाग़-धब्बा हो तो 41 बार दवा या मरहम पर पढ़कर फूंके और फिर इस्तेमाल करें, इन्शाअल्लाह दाग़-धब्बा दूर हो जाएगा।

ग़म मत कर

2. وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهٰرُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ.

(पारा 1, आयत 44, सूरः बक़रह)

अगर आपको गुर्दे और पित्ते की पथरी दर्द करती हो तो 41 बार पढ़कर दम करके उस वक़्त तक पिलाएं जब तक कामियाबी न हो।

ग़म मत कर

3. صُمٌّ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ٥ (पारा 1, आयत 18, सूरः बक़रह)

अगर रास्ते में किसी मूज़ी जानवर या दुश्मन से ख़ौफ़ महसूस हो तो 7 दफ़ा उस पर ऊपर दी गई आयत पढ़कर फूंकें।

ग़म मत कर

4. أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥

(पारा 1, आयत 5, सूरः बक़रह)

अगर आप दीन से ग़ाफ़िल हो सीधे रास्ते से भटके हुए हो या बुरे कामों में मुब्तला हो तो ऊपर दी गई आयत को पानी पर 101 मर्तबा पढ़कर दम करके 41 दिन तक पी लो।

ग़म मत कर

5. وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٥ (पारा 7, आयत 17, सूरः अल्-अनआम)

अगर आपको हर क़िस्म की बीमारी से शिफ़ा हासिल करनी हो तो 7 या 11 बार ऊपर दी गई आयत को जिस जगह तकलीफ़ हो वहां हाथ रखकर पढ़ लो और थुथला दो।

ग़म मत कर

6. رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ٥ (पारा 7, आयत 177, सूरः अल्-माइदा)

अगर आप रिज़्क़ की तंगी से परेशान हैं या किसी ख़ास चीज़

के खाने की हाजत हो तो ऊपर दी गई आयत को 7 मर्तबा पढ़कर आसमान की तरफ़ फूंकें। ख़बरदार दुआ पूरी होने के बाद अल्लाह का शुक्र अदा करना।

ग़म मत कर

7. اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ ط اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ o

(पारा 13, आयत 18, सूरः अर्-रअ्द)

अगर आपको दिल की घबराहट और बीमारी दूर करनी हो तो 41 बार पानी पर दम करके पी लो।

ग़म मत कर

8. وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا o

(पारा 15, आयत 18)

अगर आपको मुक़द्दमे में कामियाबी हासिल करनी हो तो रोज़ाना किसी नमाज़ के बाद 133 बार ऊपर दी गई आयत पढ़ लो अगर हक़ पर हो तब, वर्ना नाहक़ पढ़ने वाला ख़ुद मुसीबत में गिरफ़्तार हो सकता है।

ग़म मत कर

9. وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ o

(पारा 4, आयत 134, सूरः आले इम्रान)

अगर आपका ग़ुस्सा तेज़ है और आपे से बाहर हो जाते हैं तो 101 बार ऊपर दी गई आयत 21 दिन तक चीनी पर पढ़कर पी लो।

ग़म मत कर

10. اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ o

(पारा 20, आयत 62, सूरः अन्-नमल)

अगर आपको अपनी औलाद का रिश्ता नहीं मिलता तो उठते-बैठते ऊपर दी गई आयत का विर्द जारी रखें।

ग़म मत कर

11. وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ط قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ٥

(पारा 8, आयत 10, सूरः बक़रह)

अगर आपके पास रहने की जगह या मकान न हो या रोज़ी का ज़रिया न हो या रिज़्क़ से तंग हो या मुसाफ़िर हो और सामान आपके पास कोई न हो तो ऊपर दी गई आयत को 15 मर्तबा रोज़ाना पढ़ लो जब तक कामियाबी न हो। इन्शाअल्लाह कामियाबी होगी।

ग़म मत कर

12. فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ٥

(पारा 23, आयत 83, सूरः यासीन)

अगर आप लोगों की नज़रों से गिर गये हों और चाहिए कि आपकी इज़्ज़त क़ाम हो जाये तो आप ऊपर दी गई आयत को 11 बार पढ़कर अपने ऊपर फूंक लें, इन्शाअल्लाह आप कामियाब होगे।

ग़म मत कर

13. وَيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ٥

(पारा 29, आयत 12, सूरः नूह)

अगर आपके यहाँ औलादे नरीना नहीं है तो हमल ठहरते ही नौ महीने तक 11 मर्तबा रोज़ाना पढ़िए, रिज़्क़ की तंगी को दूर करने के लिए भी इस दुआ को रोज़ाना सात मर्तबा पढ़िए।

ग़म मत कर

14. وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ط اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ۝

(पारा 21, आयत 21, सूरः रूम)

अगर आपको अपनी बीवी से इख़्तिलाफ़ है, आपस में मुहब्बत नहीं है तो ऊपर दी गई आयत को 99 बार किसी मीठी चीज़ पर तीन दिन तक दम करें और दोनों खाएं।

ग़म मत कर

15. قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ۝ وَاَلْقِ مَا فِىْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ط اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ط وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى۝

(पारा 16, आयत 68-69, सूरः ता-हा)

अगर आपको शक है कि आप पर जादू किया गया है या अलामतें महसूस हो रही हों तो जादू के असर को ख़तम करने के लिए 11 दिन तक 100 बार ऊपर दी गई आयत पढ़कर अपने ऊपर फूंकें या और किसी पर शक हो तो उस पर पढ़कर फूंकें, इस दुआ के दौरान कोई दूसरा अमल न पढ़ें।

ग़म मत कर

16. قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ج فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝

(पारा 7, आयत 100, सूरः अल्-माइदा)

अगर किसी का शौहर दूसरी औरत से नाजाइज़ ताल्लुक़ रखता हो या हराम की कमाई घर में लाता हो तो उसे रोकने के लिए 11 दिन तक 141 मर्तबा इस ऊपर दी गई दुआ को किसी खाने की चीज़ पर पढ़कर दम करके खिलाएं। इन्शाअल्लाह कामियाबी होगी।

ग़म मत कर

17. اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّىْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ٥
(पारा 9, आयत 9, सूरः अनफ़ाल)

मुसलमानों पर वाजिब है कि तमाम कामों में अल्लाह पर उम्मीद करें उसके सिवा किसी और पर वसूक़ न करें, मदद और कामियाबी उसी क़ुव्वत वाले के हाथ में है जो सबका पैदा करने वाला है। हर जाइज़ मुराद के लिए 14 बार ऊपर दी गई आयत 11 दिन तक पढ़ें।

ग़म मत कर

18. رَبِّ اِنِّىْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَىَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ٥ (पारा 20, आयत 24, सूरः क़सस)

अगर आपकी लड़की के लिए रिश्ता न आता हो या आता हो मगर रिश्ता पसन्द न आता हो तो आप 112 मर्तबा इस दुआ को और तीन दफ़ा सूरः अज़्-ज़ुहा पढ़ें। हर महीने यह अमल जारी रखें।

ग़म मत कर

19. وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ط وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا٥
(पारा 5, आयत 113, सूरः निसा)

अगर आपका बच्चा कुन्द ज़हन हो या तालिब इल्म को 121 मर्तबा पानी पर दम करके आप रोज़ाना पिलाएं, इन्शाअल्लाह इसकी बरकत से आलिम फ़ाज़िल हो जाएगा।

ग़म मत कर

20. فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ٥ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ص وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ٥
(पारा 5, आयत 36-37, सूरः जासिया)

अगर आपको इज़्ज़त व आबरू और वक़ार हासिल करना हो, या बुख़ार के लिए, या ज़ख़्म को ठीक करना हो, अच्छे कामों में नाम पैदा करना हो, अमल का वज़न भारी करना हो तो रोज़ाना ऊपर दी गई आयत 7 मर्तबा पढ़ें।

ग़म मत कर

21. رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ط اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ○

(पारा 16, आयत 15, सूरः अहक़ाफ़)

अगर आप अपनी औलाद की फ़रमांबरदारी चाहते हैं और ख़ुदा के लिए पसन्दीदा अमल करना चाहते हैं तो ऊपर दी गई आयत 3 बार रोज़ाना पढ़ें। इन्शा-अल्लाह फ़ायदेमन्द साबित होगी।

ग़म मत कर

22. وَاُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَی اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بَصِیْرٌ بِالْعِبَادِ○

(पारा 24, आयत 44, सूरः मोमिन)

इशां की नमाज़ के बाद 101 बार पढ़ने से हर रंज व ग़म दूर करने के लिए ग़ैब से मदद का दरवाज़ा खुलता है।

ग़म मत कर

23. وَهَدَیْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ○

(पारा 23, आयत 118, सूरः साफ़्फ़ात)

अगर आप सीधी राह से भटक जाएं, अच्छाई-बुराई की तमीज़ न रहे तो आप 313 बार ऊपर दी गई आयत पर दम करके उस वक़्त तक पीते रहें जब तक आपकी हालत सुधर न जाए।

ग़म मत कर

24. فَإِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ هُوَ الَّذِىٓ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ○

(पारा 19, आयत 61, सूरः अनफ़ाल)

फ़तह और कामियाबी के लिए या इम्तिहान में आसान पर्चों के लिए जाने से पहले 7 मर्तबा ज़रूर पढ़ें।

ग़म मत कर

25. اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ط

(पारा 9, आयत 195, सूरः आराफ़)

अगर कोई हाथ, पैर, कान, आँख या टांग वग़ैरह से लाचार हो तो इस आयत को ख़ूब पढ़कर मरीज़ के पानी पर दम करके पिलाएं।

ग़म मत कर

26. فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ○

(पारा 27, आयत 10, सूरः क़मर)

अगर आपको कोई बीमारी हो और डाक्टर की समझ से बाहर हो या कोई दवा असर न करती हो या कोई शख़्स मज़्लूम हो और ज़ालिम का ज़ुल्म इन्तिहा तक पहुँच चुका हो तो रोज़ाना 313 बार ऊपर दी गई आयत पढ़कर आसमान की तरफ़ मुँह करके फूंके और मरीज़ को पानी पर दम करके पिलाए। यह अमल 21 रोज़ तक करें।

ग़म मत कर

27. अगर किसी को यरक़ान हो गया हो तो वह पहले सूरः फ़ातिहा एक बार फिर सूरः हश्र 7 बार और फिर एक बार सूरः क़ुरैश पढ़कर पानी पर दम करके उस वक़्त तक पिलाएं जब तक फ़ायदा न हो।

ग़म मत कर

28. रिज़्क़ की तरक़्क़ी और बरकत के लिए या कोई काम बस से बाहर हो और कोई वसीला नज़र न आता हो या अगर किसी काम में आसानी और जल्दी मत्लूब हो तो सूरः मुज़्ज़म्मिल एक बैठक में 4 बार तीन दिन तक पढ़ें। इस अमल से दूसरों को नुक़्सान पहुंचाना मक़्सूद नहीं होना चाहिए।

ग़म मत कर

29. لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝

(पारा 27, आयत 27, सूरः फ़तह)

अगर आपको हज पर जाने की ख़्वाहिश हो और कोई वसीला जाने का न हो तो कस्रत से इस ऊपर दी गई आयत का विर्द करें उस वक़्त तक जब तक उम्मीद की किरन न मिल जाए।

ग़म मत कर

30. اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ زُجَاجَةٍ ؕ اَلزُّجَاجَةُ كَاَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ؕ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ يَهْدِى اللّٰهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

(पारा 18, आयत 35, सूरः अन्-नूर)

अगर आपको अपने दिल और चेहरे पर नूर पैदा करना है तो रोज़ाना ऊपर दी गई आयत अपने ऊपर पढ़कर फूंके।

ग़म मत कर

31. وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ط إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ o

(पारा 10, आयत 63, सूरः अनफ़ाल)

अगर किसी शख़्स के दिल में मुहब्बत डालना चाहते हो या जिस ख़ानदान में ना-इत्तिफ़ाक़ी हो तो इत्तिफ़ाक़ पैदा करने के लिए यह आयते मज़्कूरा 11 बार रोज़ाना पढ़ें।

ग़म मत कर

32. فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ o

(पारा 7, आयत 45, सूरः अनआम)

ज़ालिम को दफ़ा करने के लिए 3 दिन तक 21 मर्तबा पढ़ना फ़ायदे मन्द है। यह आयत बड़ी जलाली है। इसको नाजाइज़ पढ़ना अपने आपको हलाकत में डालना है। जब ज़ालिम का ज़ुल्म नाक़ाबिले बर्दाश्त हो जाए तब इस दुआ का इस्तिमाल करें।

ग़म मत कर

33. وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ط يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ o

(पारा 6, आयत 17, सूरः माएदा)

अगर आप औलाद से ना-उम्मीद हैं तो 41 दिन तक 300 बार किसी मीठी चीज़ पर पढ़कर दम करके आधा शौहर और आधा बीवी खाए।

ग़म मत कर

34. قُلْ لَّنْ يُّصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ج هُوَ مَوْلٰنَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ o

(पारा 10, आयत 15, सूरः तौबा)

अगर किसी शख़्स को दुश्मन से तक्लीफ़ या नुक़सान पहुंचने का अंदेशा हो या तक्लीफ़ पहुंचता हो तो इस ऊपर दी गई आयत को रोज़ाना 7 मर्तबा पढ़ें। इन्शा-अल्लाह उसकी तक्लीफ़ से

महफ़ूज़ रहेगा।

ग़म मत कर

35. لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝

(पारा 21, आयत 26, सूरः लुक़मान)

रिज़्क़ की कुशादगी के लिए, कारोबार की तरक़्क़ी के लिए, या नया कारोबार शुरू करने से पहले इस आयत को रोज़ाना 141 बार पढ़ें।

ग़म मत कर

36. اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

(पारा 22, आयत 56, सूरः अहज़ाब)

जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हम-कलाम होने का या उनकी ज़ियारत का ख़्वाहिशमन्द हो वह रात को सोते वक़्त इसकी तस्बीह करे। इन्शा अल्लाह जल्द ही ख़्वाहिश पूरी होगी।

ग़म मत कर

37. وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝ (पारा 23, आयत 76, सूरः साफ़्फ़ात)

अगर किसी शख़्स की औलाद मर जाती है या ज़िन्दा न रहती हो या वह किसी सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहता हो तो इस दुआ को रोज़ाना सुब्ह व शाम 11 बार पढ़े।

ग़म मत कर

38. لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝

(पारा 25, आयत 49, सूरः अश्-शोरा)

जिसके हाँ औलाद न होती हो वह यह दुआ 133 बार पानी पर दम करके फ़ज्र की नमाज़ के बाद दोनों मियां-बीवी पिएं।

ग़म मत कर

39. وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ج يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ط نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ o (पारा 13, आयत 56, सूरः यूसुफ)

अगर कोई बच्चा या शख़्स बीमार हो या कमज़ोर हो या सूखता चला जा रहा हो और बज़ाहिर कोई बीमारी नज़र नहीं आती हो तो पहले और आख़िर तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़कर 21 दिन तक 141 बार इसको पढ़े।

ग़म मत कर

40. وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ o

(पारा 11, आयत 82, सूरः यूनुस)

अगर कोई झूठे मुक़द्दमे में फंस गया हो या किसी ने किसी पर झूठी तोहमत लगाई हो या किसी की इज़्ज़त पर कोई हर्फ़ आया हो। वह इस दुआ को उठते बैठते कस्रत से पढ़े। इन्शा अल्लाह उसे कामियाबी होगी।

ग़म मत कर

41. قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ o يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ o

(आयत 73-74, सूरः आले-इम्रान)

अगर आपको अल्लाह की हर नेमत हासिल करनी है तो यह दुआ सुब्ह व शाम रोज़ाना 7 बार पढ़ें और हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करते रहें।

ग़म मत कर

42. اِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ط مَا مِنْ دَآبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ط اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ o

(पारा 12, आयत 56, सूरः हूद)

अगर आपकी औलाद नाफ़रमान है तो उनकी पेशानी के बाल पकड़कर 11 बार फूंकें।

ग़म मत कर

43. اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ط اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌo (पारा 21, आयत 62, सूरः अनकबूत)

अगर आपको रिज़्क़ की कुशादगी करनी है तो ऊपर दी गई आयत 11 बार फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़ें।

ग़म मत कर

44. فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ط فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ط لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ط ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَo

(पारा 21, आयत 30, सूरः रुम)

जो शख़्स चाहे कि मरते दम तक उसके जिस्म के तमाम हिस्सा दुरुस्त रहें और वह तन्दरुस्त रहे तो रोज़ाना 3 बार अपने ऊपर पढ़कर फूंकें।

ग़म मत कर

45. يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰى اِبْرٰهِيْمَo (आयत 69, सूरः अम्बिया)

बुख़ार की तेज़ी ख़त्म करने के लिए पढ़कर मरीज़ पर दम करें और गुस्सा और ज़िद को ख़त्म करने के लिए भी इस दुआ का इस्तेमाल करें।

ग़म मत कर

46. اَلَّذِيْ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍo ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍo ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ط قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَo (पारा 21, आयत 7-9, सूरः अस्-सजदा)

अगर आप औलाद की नेमत से महरूम हैं तो अल्लाह पर भरोसा रखते हुए कसरत से इन आयात को पढ़ें।

ग़म मत कर

47. رَبَّهٗ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَo

(पारा 17, आयत 83, सूरः अम्बिया)

अगर आप ऐसी बीमारी में मुब्तला हों जो न समझ में आने वाली है या ला-इलाज है तो आप या खुद मरीज़ खुद इस आयत को कसरत से पढ़े।

ग़म मत कर

48. وَهُوَ الَّذِیْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ط وَكَانَ رَبُّكَ قَدِیْرًاo

(पारा 19, आयत 54, सूरः फ़ुरक़ान)

अगर आपके बेटे या बेटी या अक़द न होता हो तो आप अपनी इस मुराद के लिए 21 दिन तक 313 बार पढ़ें।

ग़म मत कर

49. قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ o الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَo وَالَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَo وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فَاعِلُوْنَ o وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ o اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَo فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَo وَالَّذِیْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ o وَالَّذِیْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَo اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَo اَلَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ط هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَo

(पारा 18, आयत 1-11, सूरः मोमिनून)

रात को सोते वक़्त ऊपर दी गई आयतें ज़रूर पढ़ें क्योंकि यह आयतें इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करती हैं, बे-नमाज़ियों को नमाज़ की रग़बत दिलाती हैं, बेहूदा और बुरी बातों से रोकती हैं और जन्नतुल फ़िर्दोस का वारिस बना देती हैं।

ग़म मत कर

50. وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ط اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ o اَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ط وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ o

(आयत 13-14, सूरः मुलक)

इशा की नमाज़ के बाद 2 रक्अत नफ़्ल इस्तिख़ारा की नीयत से पढ़ें इसके बाद इन आयात को 101 बार पढ़कर बग़ैर बात किए सो जाएं।

ग़म मत कर

51. يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ o بِنَصْرِ اللّٰهِ ط يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ o

(आयत 328, सूरः हज)

हर जाइज़ मुराद के लिए और हर मुश्किल की आसानी के लिए इन आयात को 113 बार पढ़ें।

ग़म मत कर

52. اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ o

(आयत 38, सूरः हज)

अगर किसी शख़्स को हर वक़्त दुश्मन की तरफ़ से ख़ौफ़ रहता हो या उसकी दुश्मनी बढ़ती जा रही हो तो दुश्मन से हिफ़ाज़त के लिए इस आयत को 11 बार रोज़ाना पढ़े।

ग़म मत कर

53. ذِىْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ o مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ o وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ o وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ o وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ o وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ o فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ o اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ o لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ o وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّا اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ o

(आयत 20-29, सूरः अत्-तक्वीर)

अगर किसी शख़्स पर शुब्ह हो कि उसका दिमाग़ी तवाज़ुन बिगड़ता जा

रहा है, या अपनी अस्ल हाल में नहीं है या शुब्ह हो कि किसी ने उस पर कुछ कर दिया है तो इस आयत को 41 बार दम करके पिलायें।

ग़म मत कर

54. يَا مَالِكُ، يَا قُدُّوسُ، يَا سَلَامُ ٥

हर शख़्स को चाहिए कि सरतान या ताऊन या फोड़े-फुन्सी की बीमारी से बचने के लिए इस दुआ को सुब्ह व शाम 11 बार पढ़े। इन्शा अल्लाह, अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखेंगे।

ग़म मत कर

55. وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ٥ (पारा 30, आयत 19, सूरः नाज़िआत)

जो सीधी राह से भटक गया हो या बुरे कामों में पड़ गया हो या अल्लाह की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो गया हो तो इस आयत को रोज़ाना 101 बार पानी पर दम करके उसे पिलायें।

ग़म मत कर

56. سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ٥

(पारा 24, आयत 13, सूरः रअ़्द)

अगर किसी शख़्स को अल्लाह की तरफ़ से कोई तक्लीफ़ पहुंची हो या किसी शख़्स से दुख पहुंचा हो तो इस दुआ को पढ़ें। इन्शा अल्लाह उसके लिए दीन व दुनिया में फ़तुहात के दरवाज़े खुल जायेंगे।

ग़म मत कर

57. وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ط هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥

(पारा 11, आयत 65, सूरः यूनुस)

अगर कोई किसी को बदनाम करने पर तुला हो और उसको अपनी इज़्ज़त का ख़तरा हो तो वह इस दुआ को सुब्ह व शाम 41

बार पढ़कर अपने ऊपर फूंक ले।

ग़म मत कर

58. اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ط اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ○

(पारा 15, आयत 87, सूरः बनी इस्राईल)

अगर कोई शख़्स ग़म में या और कोई परेशानी में हो या उसकी माली हालत बिगड़ती जा रही हो तो उठते-बैठते इसका विर्द रखे।

ग़म मत कर

59. مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ط فِيْهَآ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ج وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ج وَاَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ج وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ط وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ط

(पारा 26, आयत 1, सूरः मुहम्मद)

अगर कोई शख़्स चाहता हो कि दुनिया में भी वह हर नेमत से नवाज़ा जाये और आख़िरत में भी अल्लाह तआला उसको किसी नेमत से महरूम न करें तो वह इस आयत को सुब्ह व शाम तीन मर्तबा पढ़े। इन्शा अल्लाह वह दीन व दुनिया की नेमतों से मालामाल रहेगा।

ग़म मत कर

60. अगर आप औलाद से महरूम हों तो रोज़ाना 101 बार सूरः अल्-कौसर बिस्मिल्लाह के साथ पढ़ें। इन्शा-अल्लाह कामियाबी होगी।

शिर्क की जो इब्तिदा हुई वह तस्वीर से हुई है इसलिए बग़ैर ज़रूरत तस्वीर से बचिये

नफ़्स तस्वीर को शिर्क में भी दख़्ल है, इसी वजह से इसकी

मुमानिअत की गई है। अल्लाह के दीन में जो शिर्क शुरू हुआ और तौहीद में ख़लल पड़ा उसकी बुनियाद तस्वीर ही होती है। सबसे पहला जो शिर्क शुरू हुआ है वह नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम में शुरू हुआ है।

नूह अलैहिस्सलाम का ज़माना आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने से एक हज़ार साल के बाद है। नूह अलैहिस्सलाम जिस क़ौम में पैदा फ़रमाए गये उसमें शिर्क आया और इस शिर्क की बुनियाद यह हुई कि इस क़ौम में पाँच बुज़ुर्ग थे, उनकी मज्लिसों में लोग बैठकर ख़ुदा को याद करते थे, और मसाइल सुनते थे, इससे उनके दीन को तक़्वियत पहुँचती थी। जब उन बुज़ुर्गों का इन्तिक़ाल हो गया तो क़ौम में परेशानी हुई कि अब न वह मजालिस रहीं और न वह मसाइल रहे, अब कहाँ बैठें? उस वक़्त शैतान ने उनके दिल में यह फूंक मारी कि उन बुज़ुर्गों की तस्वीरें बनाकर अपने पास रख लो। जब उन तस्वीरों को देखोगे उनका ज़माना याद आ जाएगा और वह कैफ़ियत पैदा हो जायेगी। तो उन पाँचों के मुजस्समे बनाए गये और उन पाँचों का नाम था। 1. विद। 2. सवाअ। 3. यगूस। 4. नसर। 5. यअूक़। उनका क़ुरआने करीम में ज़िक्र है। यह पाँच बुत बनाकर रखे गये। उनका मक़्सद सिर्फ़ तज़्कीर था कि उन तस्वीरों के ज़रिये याददिहानी हो जाये। उन तस्वीरों को पूजना मक़्सद नहीं था। शुरू में जब तक लोगों के दिलों में मअ़ारिफ़त रही, उन बुज़ुर्गों के अस्रात रहे। लेकिन जब दूसरी नस्ल आई तो उनके दिलों में वह मारिफ़त नहीं रही, उनके सामने तो यही बुत थे।

चुनांचे वह कुछ ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जोह हुए और कुछ बुतों की तरफ़ मुतव्वजोह हुए तो इस तरह उनका दीन मख़्लूत हो

गया। और जब तीसरी नस्ल आई तो उनके दिलों में इतनी भी मारिफ़त नहीं रही। उनके सामने बुत ही बुत रह गये। उन्हीं को सज्दा उन्हीं की नियाज़, उन्ही की नज़र। यहां तक कि शिर्क शुरू हो गया। उस शिर्क को मिटाने के लिए हज़रत नूह अलैहिस्सलाम आए। तो शिर्क की शुरूआत जो हुई वह तस्वीर से हुई है। तस्वीर में ख़ासियत है शिर्क पैदा करने की पस इस तफ़्सील से मालूम हुआ कि तस्वीर या तो ऐसी क़ौम बनाती है जो मज़्हबी क़ौम है और वह बुज़ुर्गों की यादगार के तौर पर ऐसा करती है मगर आगे चलकर यह तस्वीर शिर्क का ज़रिया बन जाती है।

और अगर क़ौम मज़हबी नहीं है और तस्वीरों को सिर्फ़ ज़ीनत के लिए बनाती है तो तस्वीर की ख़ासियत यह है कि आदमी सूरतों में उलझकर हक़ीक़त से दूर हो जाता है। अब इस दौर में तस्वीरों का ग़ल्बा है। देखा जाता है कि तस्वीरों की वह क़द्र व मन्ज़िलत है जो अस्ली इंसान की नहीं। जो कुछ तस्वीरें पुरानी हैं वह शाहकार समझी जाती हैं। मालदार लोग दस-दस हज़ार रुपये देकर ख़रीदते हैं कि यह एक नायाब चीज़ है और पुराने ज़माने की है। आदमी के दाम इतने नहीं उठते हैं जो उन तस्वीरों के उठते हैं।

आज कल सिनेमा में तस्वीरें ही तो हैं, वह गाती नाचती नज़र आती हैं। उस पर लाखों और करोड़ों रुपये ख़र्च हो रहा है। इंसान चाहे भूके मरे मगर इन तस्वीरों की बड़ी अज़मत है। यही वजह है कि लोग अस्ल को भूल गये और सूरतों में उलझ गये। हज़राते सूफ़िया मुहक्क़ीक़ीन लिखते हैं कि अगर तुम यह चाहते हो कि ख़ातमा बिल् ख़ैर हो तो सूरतों की तरफ़ तवज्जोह मत करो, और सूरतों से उन्होंने तस्वीर मुराद ली है।

इंसान की सूरत जो ख़ुदा तआ़ला की बनाई हुई है उनमें मत उलझो बल्कि उनकी सीरतों को देखो। इसलिए सूरत पसन्दों से सीरत पसन्दी ख़त्म हो जाती है। और अस्ल मक़्सूद है सीरतों का इत्तिबाअ, ताकि अख़्लाक़ आए। इल्म आए, अक़्ल आए और अमल आए। न यह कि सूरतों को देख लो और यह कहो कि बड़ी अच्छी सूरत है। इसलिए शरीअते इस्लाम ने तस्वीरों की मुमानिअत कर दी क्योंकि इस्लाम ने तौहीद की तक्मील की है। "اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ" तो सबसे पहला कमाले तौहीद है और अम्बिया-ए-किराम ने भी तौहीद सिखलाई और शिर्क से रोका। मगर इस्लाम ने अस्बाबे शिर्क को भी रोक दिया और बईद से बईद सबब जो शिर्क तक पहुंच सकता है उसको भी रोक दो, चुनांचे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में इसका एहतिमाम है। हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना है और तवाफ़ हो रहा था और लोग हज्रे असवद पर गिर रहे थे और अवामुन्नास यह समझते हैं कि अगर हज्र असवद को बोसा न दिया तो हज ही मुकम्मल न होगा।

हज़रत उमर रज़ि० भी तवाफ़ में शरीक थे। आपने बा-आवाज़ बुलन्द यह ऐलान किया और हज्रे अस्वद को मुख़ातिब करके फ़रमाया कि

"اِنِّيْ اَعْلَمُ اِنَّكَ حَجَرٌ لَا تَنْفَعُ وَلَا تَضُرُّ لَوْ لَا اِنِّيْ رَاَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَبَّلَكَ مَا قَبَّلْتُكَ"

मैं जानता हूँ ते एक पत्थर है, न तुझमें नफ़ा पहुंचाने की क़ुदरत है, न नुक़्सान पहुचांने की क़ुदरत है, तू बेजान पत्थर है अगर मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम को तुझे बोसा देते हुए न देखता तो तुझे कभी बोसा नहीं देता।

मतलब यह है कि तेरी तक़्बील सुन्नत की वजह से है, इस वजह से नहीं है कि तुझमें नफ़ा और नुक़्सान पहुंचाने की ताक़त है। इस क़ौल से शिर्क का माद्दा ख़त्म करना था।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० के इस्लाम लाने का अजीब क़िस्सा

सलमान आपका नाम है। अबु अब्दारूल्लाह आपकी कुन्नियत है। सलमानुल ख़ैर के लक़्ब से मशहूर हैं। गोया सलमान क्या थे? ख़ैरे मुजस्सम थे। मुल्क फारस के राम हरमुज़ के मज़ाफ़ात में से, क़स्ब-ए-जई के रहने वाले थे। शाहाने फ़ारस के ख़ानदान से थे। जब कोई सलमान रज़ि० से पूछता :

ابن من انت؟ आप, किसके बेटे हो? तो यह जवाब देते।

انا سلمان بن الاسلام. मैं सलमान, बेटा इस्लाम का हूँ।

—अलू-इस्तियाब लिल्-हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बिर्र नम्बर 56, हिस्सा 2, हाशिया-ए-असाबा

यानी मेरे रूहानी वजूद का सबब इस्लाम है और वही मेरा मुरब्बी है। فنعم الاب ونعم لابن. पस क्या अच्छा बाप है और क्या अच्छा बेटा।

हज़रत सलमान रज़ि० की उम्र बहुत ज़्यादा हुई। कहा जाता है कि हज़रत सलमान ने हज़रम मसीह बिन मरयम अलैहिस्सलाम का ज़माना पाया है और कुछ कहते हैं कि हज़रत मसीह बिन मरयम का ज़माना तो नहीं लेकिन हज़रत मसीह के किसी हवारी और वसी का ज़माना पाया है। हाफ़िज़ ज़हबी कहते हैं कि जिस क़द्र बातें भी उनकी उम्र के बारे में पाई वह सब इसपर मुत्तफ़िक़ हैं कि आप की उम्र ढाई सौ साल से ज़्यादा है। अबू शैख़, तबक़ात अलू-सब्हारनैन में लिखते हैं कि अहूले इल्म यह कहते हैं

कि हज़रत सुलैमान रज़ि० साढ़े तीन सौ साल ज़िन्दा रहे लेकिन ढाई सौ साल में तो किसी को शक नहीं।

—असाबा तर्जुमा सलमान, हिस्सा 2, पेज 62

इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि मुझसे सलमान फ़ारसी रज़ि० ने अपने इस्लाम लाने का वाक़िआ खुद अपनी ज़ुबान से इस तरह बयान किया है कि मैं मुल्क फ़ारस में से क़रया जई का रहने वाला था। मेरा बाप अपने शहर का चौधरी था और सबसे ज़्यादा मुझको महबूब रखता था। जिस तरह कुँवारी लड़कियों की हिफ़ाज़त करते हैं उसी तरह मेरी हिफ़ाज़त करते थे और मुझको घर से बाहर नहीं जाने देता था। हम मज़हबन मजूसी थे। मेरे बाप ने मुझे आतिश कदा का मुहाफ़िज़ और निगहबान बना रखा था कि किसी वक़्त आग बुझने न पाये। एक मर्तबा मेरा बाप तामीर के काम में मश्ग़ूल था। इसलिए मजबूरी में मुझको किसी ज़मीन और खेत की ख़बरगीरी के लिए भेजा और यह ताकीद की कि देर न करना। मैं घर से निकला, रास्ते में एक गिरजा पड़ता था। अन्दर से कुछ आवाज़ सुनाई दी। मैं देखने के लिए अन्दर घुसा। देखा तो नसारा की एक जमाअत है जो नमाज़ में मश्ग़ूल है। मुझको उनकी इबादत पसन्द आई और अपने दिल में यह कहा कि यह दीन, हमारे दीन से बेहतर है। मैंने उन लोगों से पूछा कि इस दीन की अस्ल कहाँ है? उन लोगों ने कहाः मुल्क शाम में। इसी में सूरज छिप गया। बाप ने इन्तिज़ार करके तलाश में क़ासिद दौड़ाए। जब घर वापस आया तो बाप ने पूछाः ऐ बेटे! तू कहाँ था? मैंने तमाम वाक़िआ बयान किया। बाप ने कहा उस दीन (नसरानियत) में कोई ख़ैर नहीं है। तेरे ही बाप- दादा का दीन (आतिश-परस्ती) बेहतर है। मैंने कहाः हरगिज़ नहीं। ख़ुदा की

क़सम! नसरानियों ही का दीन हमारे दीन से बेहतर है। बाप ने मेरे पैर में बेड़ियाँ डाल दीं और घर से निकलना बन्द कर दिया। जैसे फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा :

لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِىْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ

(अगर तूने मेरे सिवा किसी को माबूद बनाया तो मैं तुझको क़ैदियों में से कर दूँ जैसा कि आम अहले बातिल का तरीक़ा है।)

मैंने पौशीदा तौर पर नसारा से कहला भेजा कि जब कोई क़ाफ़िला शाम का जाये तो मुझको इत्तिला करना। चुनांचे उन्होंने मुझको एक मौक़े पर इत्तिला दी कि नसारा के ताजिरों का एक क़ाफ़िला शाम वापस जाने वाला है। मैंने मौक़ा पाकर बेड़ियाँ अपने पैरों से निकाल फैंकी और घर से निकलकर उनके साथ हो लिया। शाम पहुँचकर पूछा कि ईसाईयों का सबसे बड़ा आ़लिम कौन है? लोगों ने एक पादरी का नाम बतलाया। मैं उसके पास पहुचां और उससे अपना तमाम वाक़िआ बयान किया और यह कहाः मैं आपकी ख़िदमत में रहकर आपका दीन सीखना चाहता हूँ। मुझको आपका दीन मरग़ूब और पसन्द है। आप इजाज़त दें तो आपकी ख़िदमत में रह पड़ूं और दीन सीखूं और आपके साथ नमाज़ें पढ़ा करूं। उसने कहा बेहतर है लेकिन चन्द रोज़ के बाद तजुर्बा हुआ कि वह अच्छा आदमी न था। बड़ा ही हरीस और तामेअ था। दूसरों को सदक़ात और ख़ैरात का हुक्म देता और जब लोग रुपये लेकर आते तो जमा करके रख लेता और फ़क़ीरों और मिस्कीनों को न देता। इसी तरह उसने अशरफ़ियों के सात मटके जमा कर लिए। जब वह मर गया और लोग हुस्ने अक़ीदत के साथ उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन के लिए जमा हुए तो मैंने लोगों से उसका हाल बयान किया और वह सात मटके दिखलाए।

लोगों ने देखकर कहा: खुदा की क़सम! हम ऐसे शख़्स को हरगिज़ दफ़्न न करेंगे। बिल्-आख़िर उस पादरी को सूली पर लटका कर संगसार कर दिया और उसकी जगह किसी और आलिम को बिठाया। सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने उससे ज़ाइद किसी को आलिम और उससे बढ़कर किसी को आबिद व ज़ाहिद, दुनिया से बे-ताल्लुक़ और आख़िरत का शाइक़ और तलबगार नमाज़ी और इबादत गुज़ार नहीं देखा और जिस क़द्र मुझको उस आलिम से मुहब्बत हुई उससे पहले कभी किसी से इस क़द्र मुहब्बत नहीं हुई। मैं बराबर उस आलिम की ख़िदमत में रहा। जब उनका आख़री वक़्त आ गया तो मैंने अर्ज़ किया कि आप मुझको वसीयत कीजिए कि आपके बाद किसकी ख़िदमत में जाकर रहूं। कहा कि मौसल में एक आलिम हैं तुम उसके पास चले जाना। चुनांचे मैं उनके पास गया और उनके बाद उनकी वसीयत के मुताबिक़ नसीबीन में एक आलिम के पास जाकर रहा और उनकी वफ़ात के बाद उनकी वसीयत के मुताबिक़ शहर अमूरिया में एक आलिम के पास रहा। जब उनका भी इन्तिक़ाल होने लगा तो मैंने कहा कि मैं फ़्लां-फ़्लां आलिम के पास रहा। अब आप बतलाएं कि मैं कहाँ जाऊं। उस आलिम ने कहा कि मेरी नज़र में इस वक़्त कोई ऐसा आलिम नहीं जो कि सही रास्ते पर हो और मैं तुमको उसका पता बतलाऊं। अल्बत्ता एक नबी के ज़हूर का वक़्त क़रीब आ गया है जो कि दीने इब्राहीमी पर होगा। अरब की सरज़मीन पर उनका ज़हूर होगा। एक नख़लिस्तानी ज़मीन की तरफ़ हिज्रत करेगा। अगर तुमसे वहाँ पहुंचना मुम्किन हो तो ज़रूर पहुँचना। उनकी अलामत यह होगी कि वह सद्क़ा का माल न खाएंगे, तोहफ़ा क़बूल करेंगे, दोनों शानों के क़रीब मुहरे नुबुव्वत होगी। जब तुम उनको देखोगे तो पहचान लोगे। इस दौरान मेरे पास कुछ गायें और बकरियाँ भी जमा हो गईं थीं। इत्तिफ़ाक़ से

एक क़ाफ़िला अरब का जाने वाला मुझको मिल गया। मैंने उनसे कहा कि तुम लोग मुझको साथ ले चलो। यह गायें और बकरियाँ सबकी सब तुमको दे दूंगा। उन लोगों ने उसको क़बूल किया और मुझको साथ ले लिया। जब घाटी क़रा में पहुंचे तो मेरे साथ यह बदसुलूकी की कि ग़ुलाम बनाकर एक यहूदी के हाथ बेच दिया। जब उसके साथ आया तो खजूर के पेड़ को देखकर ख़्याल हुआ कि शायद यही वह सरज़मीन है लेकिन अभी पूरा इतिमनान नहीं हुआ था कि बनी क़ुरैज़ा में का एक यहूदी उसके पास आया और मुझको उससे ख़रीद कर मदीना ले आया। जब मैं मदीना पहुंचा तो ख़ुदा की क़सम! मदीना को देखते ही पहचान लिया और यक़ीन किया कि यह वही शहर है कि जो मुझको बतलाया गया है। सही बुख़ारी में ख़ुद सलमान फ़ारसी रज़ि० से मरवी है कि मैं इस तरह दस मर्तबा से ज़्यादा बेचा गया हूँ। (लोगों ने सलमान को बारबार बेरग़बती के साथ दराहम मादूदा में ख़रीदा लेकिन उनकी असली क़ीमत को किसी ने नहीं पहचाना)। मैं मदीना में उस यहूदी के पास रहा और बनू क़ुरैज़ा में उसके पेड़ों का काम करता रहा। अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का में मब्ऊस (पैदा) फ़रमाया, मगर मुझको ग़ुलामी और ख़िदमत की वजह से बिल्कुल इल्म न हुआ। जब आप सल्ल० हिज्रत फ़रमाकर मदीना तश्रीफ़ लाए और क़ुबा में बनी उ़मरू बिन औफ़ के यहाँ आप सल्ल० ने क़ियाम फ़रमाया। मैं उस वक़्त एक खजूर के पेड़ पर चढ़ा हुआ काम कर रहा था। और मेरा आक़ा पेड़ के नीचे बैठा था कि एक यहूदी आया जो मेरे आक़ा का चचाज़ाद भाई था और यह कहने लगा। ख़ुदा बनी क़ीला यानी अंसार को हलाक कर दे कि क़ुबा में एक शख़्स के चारों तरफ़ जमा हैं जो मक्का से आया है और यह कहते हैं कि यह शख़्स नबी और पैग़म्बर है। सलमान रज़ि० फ़रमाते हैं :

खुदा की क़सम यह सुनना था कि मुझको लरज़ा और कपकपी ने पकड़ा और मुझको यह ग़ालिब गुमान हो गया कि मैं अपने आक़ा पर अब गिरा। (बशीर व नज़ीर की आमद ने सलमान को ऐसा बेख़ुद और वारफ़्ता बनाया कि अगर لولا ان ربطنا قلبها का मज़्मून न होता तो पेड़ से गिर ही पड़ते) वह दोनों यहूदी उनकी इस हालत और कैफ़ियत को देखकर सख़्त ताज्जुब में थे और सलमान की ज़बाने हाल यह शेअर पढ़ रही थी :

خليلي لا والله ما انا منكما   اذا عَلَم من ال ليلى بد اليا

ऐ मेरे दोस्तो! खुदा की क़सम मैं अब तुम-सा नहीं रहा।
जबकि मुझको दयारे लैला का कोई पहाड़ नज़र आ गया।

बहरहाल दिल को थामकर पेड़ से उतरा और उस आने वाले यहूदी से पूछने लगा। बताओ तो सही, तुम क्या बयान करते हो। वह ख़बर ज़रा मुझको भी तो सुनाओ। यह देखकर मेरा आक़ा गुस्से में आ गया और ज़ोर से एक तमांचा मेरे रसीद किया और कहा तुझको इससे क्या मतलब, तू अपना काम कर। जब शाम हुई और काम से छुट्टी हुई तो जो कुछ मेरे पास जमा था वह साथ लिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप उस वक़्त क़ुबा में तशरीफ़ फ़रमा थे। मैंने अर्ज़ किया कि मुझको मालूम हुआ है कि आप सल्ल० के और आप सल्ल० के साथियों के पास कुछ नहीं हैं। आप सल्ल० और सब हज़रात साहिबे हाजत हैं। इसलिए मैं आप सल्ल० के लिए और आप सल्ल० के साथियों के लिए सद्क़ा पेश करना चाहता हूँ। आप सल्ल० ने अपनी ज़ाते मुतह्हर के लिए सद्क़ा क़बूल करने से इंकार कर दिया और यह फ़रमाया कि मैं सद्क़ा नहीं खाता। और सहाबा को इजाज़त दी कि तुम ले लो। सलमान रज़ि० कहते हैं,

मैंने अपने दिल में कहा खुदा की क़सम! यह उन तीन अलामतों में से एक है। मैं वापस हो गया और फिर कुछ जमा करना शुरू कर दिया। जब आप सल्ल० मदीना तशरीफ़ लाए तो मैं फिर हाज़िरे ख़िदमत हुआ और अर्ज़ किया कि मेरा दिल चहता है कि आप सल्ल० की ख़िदमत में कुछ पेश करूं। सद्क़ा तो आप सल्ल० क़बूल नहीं फ़रमाते। यह तोहफ़ा लेकर हाज़िर हुआ हूँ। आप सल्ल० ने क़बूल फ़रमा लिया और खुद भी उसमें से खाया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी खिलाया। मैंने अपने दिल में कहा यह दूसरी अलामत है। मैं वापस आ गया और दो चार रोज़ के बाद फिर आप सल्ल० की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ। आप सल्ल० उस वक़्त एक जनाज़े के साथ बक़ीअ् में तशरीफ़ फ़रमा थे। और सहाबा किराम रज़ि० की एक जमाअत आप सल्ल० के साथ थी। आप सल्ल० दर्मियान में तशरीफ़ फ़रमा थे। मैंने सलाम किया और सामने से उठकर पीछे आ बैठा ताकि मुहर नुबुव्वत देखूँ। आप सल्ल० समझ गये, पुश्ते मुबारक से चादर उठा दी। मैं देखते ही पहचान गया और उठकर मुहरे नबुव्वत को बोसा दिया और रो पड़ा। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया। सामने आओ। मैं सामने आया, और जिस तरह ऐ इब्ने अब्बास मैंने अपना यह वाक़िआ बयान किया उस तरह मैं तफ़्सील के साथ यह तमाम वाक़िआ रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने, आप सल्ल० के सहाबा की मज्लिस में बयान किया और उसी वक़्त मुशर्रफ़ ब-इस्लाम हुआ। आप सल्ल० बहुत खुश हुए। उसके बाद अपने आक़ा की ख़िदमत में मश्गूल हो गया। इसी वजह से मैं ग़ज़्व-ए-बद्र और ग़ज़्व-ए-उहद में शरीक न हो सका। आप सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः ऐ सलमान! अपने आक़ा से किताबत कर लो। सलमान रज़ि० ने

अपने आक़ा से कहा। आक़ा ने यह जवाब दिया कि अगर तुम चालीस औक़िया सोना अदा कर दो और तीन सौ पेड़ खजूर के लगा दो। जब वे फलदार हो जायें तो तुम आज़ाद हो। सलमान ने आप सल्ल० के इर्शाद से क़बूल किया और आप सल्ल० ने लोगों को तर्ग़ीब दी कि सलमान रज़ि० की खजूर के पौदों से मदद करें। चुनांचे किसी ने तीस पौदों से और किसी ने बीस पौदों से और किसी ने पन्द्रह पौदों से और किसी ने दस पौदों से मदद की। जब पौदे जमा हो गये तो मुझसे फ़रमाया : ऐ सलमान! उनके लिए गढ्ढ़े तैयार करो। जब गढ्ढे तैयार हो गये तो ख़ुद अपने मुबारक हाथ से उन तमाम पौदों को लगाया और बरकत की दुआ फ़रमाई। एक साल गुज़रने न पाया कि सबको फल आ गया और कोई पौदा ऐसा न रहा कि जो ख़ुश्क हो गया हो। सबके सब सरो सब्ज़ व शादाब हो गये और सबको फल आ गया। पेड़ों का क़र्ज़ तो अदा हो गया। सिर्फ़ दिराहम बाक़ी रह गये। एक रोज़ एक शख़्स आपके पास एक बैज़ा (अण्डे) की मिक़्दार सोना लेकर आया। आप सल्ल० ने फ़रमाया वह मिस्कीन मकातिब यानी सलमान फ़ारसी रज़ि० कहाँ है? उसको बुलाओ। तो आप सल्ल० ने वह बैज़ा की मिक़्दार का सोना अता फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि इसको ले जाओ। अल्लाह तुम्हारा क़र्ज़ा अदा फ़रमाएगा। मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह सोना बहुत थोड़ा है। इससे मेरा क़र्ज़ा कहाँ अदा होगा? आप सल्ल० ने फ़रमाया जाओ अल्लाह इसी से तुम्हारा क़र्ज़ा अदा कर देगा। चुनांचे मैंने उसको तोला तो पूरा चालीस औक़िया था। मेरा तमाम क़र्ज़ अदा हो गया और ग़ुलामी से आज़ाद हुआ और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हमरकाब रहा। —सीरत इब्ने हश्शाम, हिस्सा 1, पेज 73

नोटः— हाफ़िज़ इब्ने क़ैयिम फ़रमाते हैं:

1. सलमान का अगर नाम पूछो तो अब्दुल्लाह है।
2. निस्बत पूछो तो इब्ने इस्लाम यानी इस्लाम का फ़रज़न्दे अरजुमन्द है।
3. सरमाया और दौलत पूछा तो फ़क़्र है।
4. दुकान उनकी मस्जिद है।
5. कमाई उनकी सब्र है।
6. लिबास उनका तक़्वा है।
7. तकिया उनका बेदार है।
8. उनका ख़ास एज़ाज़ हुज़ूर सल्ल० का सलमान मिन अह्ल अल्-बैत फ़रमाना है।
9. और अगर उनका क़िस्सा और इरादा पूछते हो तो अल्लाह की ज़ात और उसकी ख़ुशनूदी है।
10. और अगर यह पूछते हो कि कहाँ जा रहे हो तो समझ लो कि जन्नत की तरफ़ जा रहे हैं।
11. और अगर यह पूछते हो कि इस सफ़र में उनका हादी और रहनुमा कौन है तो ख़ूब जान लो कि वह अय्यामुल मुत्तक़ीन हादिउल ख़लाइक़ इला रब्बुल आलमीन सैयदुल अव्वलीन वल्-आख़िरीन ख़ातिमुल अम्बिया वल्- मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। —कज़ा फ़िल फ़वाइद इब्ने अल्-क़ैयिम, पेज 14

हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० का हाफ़िज़ा क़वी था इसकी वजह?

हज़रत अबु हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने मुझसे फ़रमाया: जिस तरह तेरे साथी मुझसे माले-ग़नीमत मांगते हैं तुम नहीं मांगते, मैंने अर्ज़ किया मैं तो आप सल्ल० से यह मांगता हूँ कि जो इल्म अल्लाह ने आपको अता फ़रमाया है आप सल्ल० उसमें से मुझे भी सिखलाएं। उसके बाद मैंने कमर से धारीदार चादर उतारकर अपने और हुज़ूर सल्ल० के दर्मियान बिछा दी और यह मन्ज़र मुझे ऐसा याद है कि अब भी मुझको इस पर जुएं चलती नज़र आ रही थीं। फिर आप सल्ल० ने मुझे हदीस सुनाई, जब मैंने वह हदीस पूरी सुन ली तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया: अब इस चादर को समेटकर अपने जिस्म से बांध लो। (मैंने ऐसे ही किया) उसके बाद हुज़ूर सल्ल० जो भी इर्शाद फ़रमाते मुझे उसमें से एक हर्फ़ भी नहीं भूलता था।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, लोग यह कहते हैं कि अबू हुरैरह रज़ि० हदीसें बहुत बयान करता है हम सबको अल्लाह के पास जाना है (अगर मैं ग़लत हदीस बयान करूंगा तो अल्लाह मेरी पकड़ फ़रमाएंगे और जो मेरे बारे में ग़लत गुमान रखते हैं अल्लाह उनसे भी पूछेंगे) और लोग यह भी कहते हैं कि दूसरे मुहाज़िरीन और अन्सार सहाबा रज़ि० अबू हुरैरह रज़ि० जितनी हदीसें बयान नहीं करते, मेरे मुहाजिर भाई तो बाज़ारों में ख़रीद व फ़रोख़्त में मश्गूल रहते थे और मेरे अन्सारी भाइयों को अपनी ज़मीनों और मवेशियों की मशग़ूली थी और मैं एक मिस्कीन नादार आदमी था। मैं फिर भी हाज़िरे ख़िदमत रहता, वह हुज़ूर से सुनकर अपने कामों में लगकर भूल जाते मैं सबकुछ याद रखता। एक दिन हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुममें से जो आदमी भी अपना कपड़ा मेरे सामने फैलाएगा और जब मैं अपनी बात पूरी कर लूँ वह उसे समेट कर अपने सीने से लगाएगा तो वह

कभी भी मेरी कोई बात नहीं भूलेगा मैंने फ़ौरन अपनी धारीदार चादर बिछा दी मेरी कमर पर उसके अलावा और कोई कपड़ा नहीं था फिर जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी वह बात पूरी फ़रमाई तो मैंने चादर समेटकर अपने सीने से लगा ली। उस ज़ात की क़सम जिसने आप सल्ल० को हक़ देकर भेजा है मैं उसमें से एक बात भी आज तक नहीं भूला, अल्लाह की क़सम अगर अल्लाह की किताब (क़ुरआन) में यह दो आयतें न होतीं (जिनमें इल्म को छिपाने की मनाही है) तो आप लोगों को कभी कोई हदीस बयान न करता।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ से लेकर الرَّحِيمُ तक

—सूरः बक़रह आयत 159-160

तर्जुमा :— जो लोग छुपाते हैं उन मज़ामीन को जिनको हमने नाज़िल किया है जो कि (अपनी ज़ात में) वाज़ेह हैं और (दूसरों को) हादी हैं बाद इसके कि हम उनको किताबे इलाही (तौरात व इंजील) में आम लोगों पर ज़ाहिर कर चुके हों ऐसे लोगों पर अल्लाह तआला भी लानत फ़रमाते हैं और दूसरे बहुतेरे लानत करने वाले भी उनपर लानत भेजते हैं। मगर जो लोग तौबा कर लें और उम-मलाह कर दे और (उन मज़ामीन को) ज़ाहिर कर दें तो ऐसे लोगों पर मैं मुतवज्जेह हो जाता हूँ और मेरी तो बकसूरत आदत है तौबा क़बूल कर लेना और मेहरबान फ़रमाना।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं, लोग कहते थे कि अबू हुरैरह बहुत ज़्यादा हदीसें बयान करता है, अस्ल बात यह है कि मैं हर वक़्त हुज़ूर सल्ल० के साथ रहता था और सिर्फ़ पेट भर खाने पर गुज़ारा कर लेता था। उन लोगों में न ख़मीरी रोटी मुझे मिलती

थी और न पहनने को रेशम और न ख़िदमत करने वाला कोई मर्द मेरे पास था और न कोई औरत और कई मर्तबा मैं भूख की शिद्दत की वजह से अपना पेट कंकरियों के साथ चिमटा देता था (ताकि कंकरियों की ठंडक से भूक की गर्मी में कमी आ जाये) और कभी ऐसा भी होता था कि क़ुरआन की आयत मुझे मालूम हुई थी लेकिन मैं किसी आदमी से कहता कि यह आयत मुझे पढ़ा दो ताकि वह मुझे अपने साथ घर ले जाये और मुझे कुछ खिला दे और मसाकीन के हक़ में सबसे बेहतर हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि० थे। वह हमें घर ले जाते और जो कुछ घर में होता वह सब कुछ हमें खिला देते यहाँ तक कि कई बार वह शहद या घी की कुप्पी ही हमारे पास बाहर ले आते, उस कुप्पी में कुछ होता नहीं था तो हम उसे फाड़कर उसके अन्दर जो होता उसे चाट लेते।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 189

एक मरीज़ की तसल्ली के लिए ख़त और शिफ़ा के लिए चौदह रूहानी नुस्ख़े

हदीस में फ़रमाया गया कि क़ियामत के दिन हक़ तआला शानहु कुछ बन्दों से पूछेंगे कि ऐ बन्दे! मैं बीमार हुआ तो मुझे पूछने न आया? मैं मरीज़ हुआ तू मेरी मिज़ाज पुर्सी को न हाज़िर हुआ?

बन्दा कहेगाः ऐ अल्लाह! आप तो रब हैं, आपको बीमारी से क्या ताल्लुक़? बीमारी तो ऐब और नुक़्स की चीज़ है। आप हर नुक़्स और बुराई से बरी हैं।

फ़रमाएंगेः मेरा फ़्लां बन्दा बीमार हुआ था, अगर तू बीमारपुर्सी के लिए जाता मुझे उसकी चारपाई की पट्टी पर मौजूद पाता।

(मिश्कात शरीफ़, पेज 134) बीमार का दिल बढ़ गया तो मेरी वह खुसूसियत है कि बीमारी में हक़ तआला का क़ुर्ब नसीब होता है, किसी तन्दरुस्ती की चारपाई पर हक़ तआला नहीं है और बीमार की चारपाई पर मौजूद है। यानी ख़ास तजल्ली, लुत्फ़ व करम और इनायत मौजूद है।

किसी तन्दरुस्त के बारे में हक़ तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि तन्दरुस्ती अपने ऊपर लेकर कहा हो कि मैं तन्दरुस्त था तू मेरे पास क्यों नहीं आया। बीमार के बारे में अपने ऊपर लेकर फ़रमाया कि मैं बीमार हुआ तू मुझे पूछने न आया। तो बीमार का दिल बढ़ गया कि ऐसी तन्दरुस्ती को सलाम है जिससे इतना क़ुर्ब न हो मुझे यह बीमारी अज़ीज़ और मुबारक है, मैं इस बीमारी को छोड़ना नहीं चाहता। यह तवज्जोह इलल्लाहु का ज़रिया बन रही है और दरजात व मरातिब तै हो रहे हैं।

हज़रत इमरान बिन अल्-हुसैन रज़ि० जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। एक नासूर फोड़े के अन्दर बत्तीस साल मुब्तला रहे जो पहलू में था और चित लेटे रहते थे करवट नहीं ले सकते थे, बत्तीस बरस तक चित लेटे-लेटे खाना भी, पीना भी, इबादत भी, क़ज़ाए-हाजत करना भी। आप अंदाज़ा कीजिए बत्तीस साल एक शख़्स एक पहलू पर पड़ा रहे उस पर कितनी अज़ीम तक्लीफ़ होगी? कितनी बड़ी बीमारी है?

यह तो बीमारी की कैफ़ियत थी। लेकिन चेहरा इतना हश्शास-बश्शास, किसी तन्दरुस्त को वह चेहरा हासिल नहीं, लोगों को हैरत थी कि बीमारी इतनी शदीद कि बरस गये करवट नहीं बदली और चेहरा देखो तो ऐसा खिला हुआ कि तन्दरुस्तों को भी नसीब नहीं। लोगों ने अर्ज़ किया कि हज़रत! यह क्या बात है कि

बीमारी तो इतनी शदीद और इतनी मुम्तद और लम्बी चौड़ी और आपके चेहरे पर इतनी बशाशत और ताज़गी कि किसी तन्दरुस्त को भी नसीब नहीं।

फ़रमायाः जब बीमारी मेरे ऊपर आई तो मैंने सब्र किया, मैंने यह कहा कि अल्लाह की तरफ़ से मेरे लिए तोहफ़ा है, अल्लाह ने मेरे लिए यही मस्लहत समझी, मैं भी इस पर राज़ी हूँ। इस सब्र का अल्लाह ने मुझे यह फल दिया कि मैं अपने बिस्तर पर रोज़ाना मलाइका अलैहिमुस्सलाम से मुसाफ़ा करता हूँ, मुझे आलमे ग़ैब की ज़ियारत नसीब होती है। आलमे ग़ैब मेरे ऊपर खुला हुआ है।

तो जिस बीमार के ऊपर आलमे ग़ैब का इन्किशाफ़ हो जाये, मलाइका का आना जाना महसूस हो उसे क्या मुसीबत है कि वह तन्दरुसती चाहे? उसके लिए तो बीमारी हज़ार दर्जे की नेमत है।

हासिल यह कि इस्लाम की यह ख़ुसूसियत है कि उसने तन्दरुस्त को तन्दरुस्ती दी, बीमार को कहा कि तेरी बीमारी अल्लाह तक पहुंचने का ज़रिया है तू अगर इसमें सब्र और एहतिसाब करेगा, حسبۃً للہ इस हालत पर साबिर और राज़ी रहेगा, तेरे लिए दरजात ही दरजात हैं।

फिर यह भी नहीं फ़रमाया कि इलाज मत कर, इलाज भी कर, दवा-दारू भी कर, मगर नतीजा जो भी निकले उसपर राज़ी रह, अपनी जिद्दोजहद किए जा, बाक़ी कामे खुदावन्दी में मुदाख़िलत न कर, तेरा काम दवा करना है, तेरा यह काम नहीं कि दवा के ऊपर नतीजा भी मुरत्तब कर दे कि सेहत होनी चाहिए।

यह अल्लाह का काम है तू अपना काम कर, अल्लाह के काम में दख़ल मत दे, दवा-दारू कर मगर अल्लाह की तरफ़ से जो कुछ हो जाये उस पर राज़ी रह कि जो कुछ हो रहा है मेरे लिए ख़ैर हो

रहा है, इसपर सब्र करोगे वही बीमारी तरक़्क़ी-ए-दरजात और अख़्लाक़ की बुलन्दी का ज़रिया बनती जाएगी, इससे आदमी के रूहानी मक़ामात तै होते होंगे। तन्दरुस्त को रूहानियत के वे मक़ामात नहीं मिलते जो बीमार को मिलते हैं तो बीमार यूँ कहेगा, मुझे मेरी बीमारी मुबारक मुझे तन्दरुस्ती की ज़रूरत नहीं। तन्दरुस्ती में मुझे यह मक़ामात मिल नहीं सकते थे जो बीमारी में मिले।

तो इस्लाम ने तन्दरुस्त को तन्दरुस्ती में तसल्ली दी कि तू इसको मुझतक पहुंचने का ज़रिया बना, बीमार को बीमारी में तसल्ली दी कि तू बीमारी को मुझ तक पहुंचने का ज़रिया बना, तू बीमारी की वजह से महरूम नहीं रह सकता। यह ख़याल मत कर कि जो कुछ मिलना था, तन्दरुस्त को मिल गया मेरे लिए कुछ नहीं रहा। तेरी बीमारी में तेरे लिए सब कुछ है।

बहरहाल हर एक को अपने दायरे और अपने मक़ाम पर तसल्ली देना यह इस्लाम का काम है।

नोटः— 1. सूरः फ़ातिहा 21 मर्तबा पढ़कर अपने ऊपर दम कर लीजिए।

2. सूरः फ़ातिहा 21 मर्तबा पढ़कर पानी पर दम करके पी लिया कीजिए।
3. **या सलामु** 143 मर्तबा पढ़कर दम कर लिया कीजिए।
4. सद्क़ा कर लिया कीजिए।
5. ख़ालिस शहद इस्तेमाल किया कीजिए।
6. आप जैसी बीमारी में कोई दूसरा मुब्तिला हो उसकी शिफ़ाअत की दुआ कीजिए।

7. जो भी साथी आपकी अयादत के लिए आए उसे दीन की मेहनत की दावत दीजिए।
8. आपके लिए ज़मज़म रवाना कर रहा हूँ इस्तेमाल कीजिए।
9. अपने रिश्तेदारों के साथ सिला-रहमी कीजिए। हदीस में आता है कि सिला-रहमी में शिफ़ा है।
10. हदीस में आता है क़ुरआन में शिफ़ा है अगर आप पढ़ सकते हो तो पढ़ें और न पढ़ सकते हो तो अपने बेटे या बेटी से सुनें।
11. कोई सुनाने वाला मौजूद न हो तो सिर्फ़ क़ुरआन की तरफ़ देख लिया करें।
12. कलौंजी आपके लिए भेज रहा हूँ इस्तेमाल कीजिए।
13. हदीस में आता है कि बीमार की दुआ अल्लाह क़बूल करता है, आपकी दुआ हमारी ब-निस्बत ज़्यादा क़बूल होगी।
14. हदीस में आता है सफ़र में शिफ़ा दे।

अपने घर में दर्जा ब-दर्जा सबको सलाम।

हज़रत आलमगीर रह० ने हिक्मत से दीन फैलाया

आलमगीर रह० के ज़माने का वाक़िआ है कि आलमगीर रह० के ज़माने में उलमा कुछ आदमी कसमपर्सी में मुब्तला हो गये, उन्हें कोई पूछने वाला नहीं रहा। इस वास्ते के उमरा अपने नशे दौलत में पड़ गये। अब उलमा से मस्ला कौन पूछे? तो उलमा बेचारे जूतियाँ चटख़ाते फिरने लगे। आलमगीर रह० चूंकि ख़ुद आलिम थे, एहले इल्म की अज़्मत को जानते थे, तो उन्होंने कोई

ब्यान वग़ैरह अख़बारात में शाए नहीं कराया कि उलमा की क़द्र करनी चाहिए।

यह तदबीर इख़्तियार की कि जब नमाज़ का वक़्त आ गया तो आलमगीर रह० ने कहा कि हम चाहते हैं कि आज फ़्लां वाली-ए-मुल्क जो दक्कन के नवाब हैं वह हमें वुज़ू कराएं तो जो दक्कन के वाली थे उन्होंने सात सलाम किए कि बड़ी इज़्ज़त आफ़ज़ाई हुई कि बादशाहे सलामत ने मुझे हुक्म दिया कि मैं वुज़ू कराऊं। वह समझे कि अब कोई जागीर मिलेगी। बादशाह बहुत राज़ी है तो आप फ़ौरन पानी का लोटा भर लाए और आकर वुज़ू कराना शुरू कर दिया।

आलमगीर रह० ने पूछा कि वुज़ू में फ़र्ज़ कितने हैं? उन्होंने सारी उम्र कभी वुज़ू किया हो तो उन्हें ख़बर होती। अब वह हैरान, क्या जवाब दें। पूछाः वाजिबात कितने हैं? कुछ पता नहीं। पूछाः सुन्नतें कितनी हैं? जवाब ग़ाइब।

आलमगीर रह० ने कहा बड़े अफ़्सोस की बात है कि लाखों लोगों के ऊपर तुम हाकिम हो, लोखों की गर्दनों पर हुकूमत करते हो और मुस्लिम तुम्हारा नाम है, तुम्हें यह भी पता नहीं कि वुज़ू में फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नतें कितनी हैं, मुझे उम्मीद है कि मैं आइंदा ऐसी सूरतेहाल नहीं देखूंगा। एक के साथ यह बर्ताव किया। रमज़ानुल मुबारक का महीना था, एक दूसरे अमीर से कहा, आप हमारे साथ इफ़्तार करें। उसने कहा :

जहाँपनाह यह तो इज़्ज़त अफ़्ज़ाई है, वर्ना फ़क़ीर की ऐसी कहाँ क़िस्मत कि बादशाह सलामत याद करें और जब इफ़्तार हुआ तो आलमगीर रह० ने उनसे कहा कि मुफ़्सिदात सौम जिनसे रोज़ा फ़ासिद होता है कितने हैं?

उन्होंने इत्तिफ़ाक़ से रोज़ा ही नहीं रखा था, उन्हें पता ही नहीं था कि रोज़े के मुफ़्सिदात क्या हैं, अब चुप हैं क्या जवाब दें।

आलमगीर रह० ने कहा बड़ी बेग़ैरती की बात है कि तुम मुसलमानों के अमीर वाली-ए-मुल्क और नवाब कहलाते हो, हज़ारों आदमी तुम्हारे हुक्म पर चलते हैं और तुम मुसलमान, रियासत इस्लाम, तुम्हें ये भी पता नहीं कि रोज़ा फ़ासिद किन चीज़ों से होता है?

इस तरह किसी से ज़कात का मस्ला पूछा तो ज़कात का मस्ला न आया। किसी से हज वग़ैरह का ग़र्ज़, सारे काम हुए और यह कहा कि आइंदा मैं ऐसा न देखूं।

बस जब यहाँ से उमूरा वापस हुए, अब उन्हें मसाइल मालूम करने की जरूरत पड़ी तो मौलवियों की तलाश शुरू की, अब मौलवियों ने नख़रे शुरू किए, किसी ने कहा, हम पाँच सौ रुपये तन्ख़्वाह लेंगे। उन्होंने कहाः हुज़ूर! हम एक हज़ार रुपये तन्ख़्वाह देंगे इसलिए कि जागीरें जाने का अंदेशा था। रियासत छिन जाती। तो मौलवी न मिले, तमाम मुल्क के अन्दर मौलवियों की तलाश शुरू हुई। जितने उलूमा तलूबा थे सब ठिकाने लग गये, बड़ी-बड़ी तन्ख़्वाहें जारी हो गईं। और साथ ही यह कि जितने उमूरा थे उन्हें मसाइल मालूम हो गये और दीन पर उन्होंने अमल शुरू कर दिया।

भोपाल में एक आम दस्तूर था कि अगर किसी ग़रीब आदमी ने अपने बच्चे को मक्तब में बिठलाया तो आज जैसे उसने **अलिफ़-लाम-मीम** का पारा शुरू किया तो रियासत की तरफ़ से एक रुपये माहाना उसका वज़ीफ़ा मुक़र्रर हो गया, जब दूसरा पारा लगा तो दो रुपये हो गया, तीसरा पारा लगा तो तीन रुपये

माहाना हो गये, यहां तक कि जब तीस पारे हो गये तो तीस रुपये बच्चे का माहाना वज़ीफ़ा होता।

और उस ज़माने में साठ-सत्तर बरस पहले तीस रुपये माहाना ऐसे थे जैसे तीन सौ रुपये महीना बहुत बड़ी आमदनी थी। सस्ता ज़माना था, अरज़ानी थी, उसका नतीजा यह हुआ कि जिनते ग़रीब लोग थे जिन्हें खाने को नहीं मिलता था वह बच्चों को मद्रसे में दाख़िल करा देते थे कि क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ करेगा तो उसी दिन से वज़ीफ़ा जारी, हज़ारों ऐसे घराने थे और हज़ारों ऐसे हाफ़िज़ पैदा हो गये, सारी मस्जिदें हाफ़िज़ों से आबाद हो गईं।

आसमान के सत्तर हज़ार मुक़र्रब फ़रिश्ते तालिबे इल्म के साथ इकराम के लिए चलते हैं

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया (तुम्हें सिखाने वाले) आलिम का यह हक़ है कि तुम उससे सवाल ज़्यादा न करो, उसे जवाब देने के मशक़्क़त में न डालो, यानी उसे मज्बूर न करो और जब वह तुम से मुँह दूसरी तरफ़ फेर ले, तो फिर उस पर इस्रार न करो और जब वह थक जाये तो उसके कपड़े न पकड़ो और न हाथ से उसकी तरफ़ इशारा करो और न आँखों से और उसकी मज्लिस में कुछ न पूछो और उसकी लग़्ज़िश तलाश न करो और अगर उससे कोई लग़्ज़िश हो जाये तो तुम उसका लग़्ज़िश से रुजूअ का इन्तिज़ार करो और जब वह रुजूअ कर ले तो तुम उसे क़बूल कर लो और यह भी न कहो कि फ़्लां ने आपकी बात के ख़िलाफ़ बात कही और उसके किसी राज़ को ज़ाहिर न करो और उसके पास किसी की ग़ीबत न करो, उसके सामने और उसकी पीठ पीछे दोनों हालतों में उसके हक़ का

ख़्याल करो और तमाम लोगों को सलाम करो। लेकिन उसे भी ख़ास तौर से करो और उसके सामने बैठो, अगर उसे कोई ज़रूरत हो तो दूसरे से आगे बढ़कर उसकी ख़िदमत करो और उसके पास जितना वक़्त भी तुम्हारा गुज़र जाये तंगदिल न होना। क्योंकि यह आलिम खजूर के पेड़ की तरह है जिससे हर वक़्त किसी न किसी फ़ायदे के हासिल होने का इन्तिज़ार रहता है और यह आलम उस रोज़ादार के दर्जे में है जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद कर रहा हो। जब ऐसा आलिम मर जाता है तो इस्लाम में ऐसा शिग़ाफ़ (छेद) पड़ जाता है जो क़ियामत तक नहीं भर सकता और आसमान के सत्तर हज़ार फ़रिश्ते तालिब इल्म के साथ इक्राम के लिए चलते हैं।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 242

वाईज़े मदीना को हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तीन अहम नसीहतें

हज़रत शैअ्बी रह० कहते हैं, हज़रत आइशा रज़ि० ने मदीना वालों के वाइज़ हज़रत इब्ने अबी साईब रह० से फ़रमायाः तीन कामों में मेरी बात मानो, वर्ना मैं तुमसे सख़्त लड़ाई करूंगी। हज़रत इब्ने साइब रह० ने अर्ज़ कियाः वे तीन काम क्या हैं? उम्मुल मौमिनीन, मैं आपकी बात ज़रूर मानूंगा। हज़रत आइशा रज़ि० ने फ़रमायाः 1. पहली बात यह है कि तुम दुआ में ब-तक्लीफ़ क़ाफ़िया बन्दी से बचो, क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा इस तरह क़सूदन नहीं किया करते थे। 2. दूसरी बात यह है कि हफ़्ते में एक बार लोगों में बयान किया करो और ज़्यादा करना चाहो तो दो बार वर्ना ज़्यादा से ज़्यादा तीन बार किया करो इससे ज़्यादा न करो वर्ना लोग (अल्लाह की) इस किताब से उकता जाएंगे। 3. तीसरी बात यह

है कि ऐसा हरगिज़ न करना कि तुम किसी जगह जाओ और वहाँ वाले आपस में बात कर रहे हों और तुम उनकी बात काटकर अपना बयान शुरू कर दो। बल्कि उन्हें अपनी बात करने दो और जब वे तुम्हें मौक़ा दें और कहें तो फिर उनमें बयान करो।

—हयातुस्सहाबा हिस्सा 3, पेज 239

दिल अर्शी है, फ़र्शी नहीं है

वजह इसकी यह है कि इंसान के सारे बदन में अगर आख़िरत का कोई हिस्सा है तो वह दिल है, बाक़ी सारे हिस्से दुनिया के हैं। हाथ, पैर, दिमाग़, सर यह सब दुनयवी हिस्से हैं, सिर्फ़ एक ही हिस्सा है जो आख़िरत का हैं।

और यह फ़र्क़ कैसे मालूम हो? इस तरह कि दिल सिर्फ़ हक़ को क़बूल करता है, बातिल को कभी क़ुबूल नहीं करता...यह मुम्किन है कि आप ग़लत- फ़हमी से बातिल को हक़ समझ जाएं मगर दिल हक़ ही समझकर क़बूल करेगा, बातिल को बातिल समझे और क़बूल करे, झूठ को झूठ समझे और फिर क़बूल करके मुतमइन हो जाये ऐसे कभी मुतमइन नहीं होता। जब सच्ची बात दिल में आएगी तभी इतमीनान होगा, मुलम्मा-साज़ी से आप झूठ कहते रहें, दिल कभी मुतमइन नहीं होगा। बुराई की बात करें तो दिल मुतमइन नहीं होगा, चोर चोरी करता है लेकन अन्दर से उसका दिल मलामत करता है। यह बहुत बुरी हरकत कर रहा है, अब चाहे नफ़्स मांने या न माने मगर दिल एलान कर देता है कि यह बात बुरी है...आप किसी को बुरी निगाह से देखें दिल मलामत करेगा कि ग़लत है, नाजाइज़ काम है, बद्-निगाही मत करो तो दिल मलामत करेगा अगर आप देख लेंगे दिल में घुटन होगी कि

बहुत बुरी हरकत है...तो दिल जब भी क़ुबूल करता है हक़ को क़बूल करता है, बातिल को, झूठ को, फ़रेब को कभी नहीं क़ुबूल करता तो इससे ज़्यादा मुख़्लिस कोई दूसरा नहीं है कि सच्चाई का मानने वाला है। झूठ और बातिल का मानने वाला नहीं है।

ब-ख़िलाफ़ और हिस्सों के कि वह सच भी क़ुबूल करते हैं, झूठ भी, हलाल भी क़बूल करते हैं हराम भी, इसी हाथ से आप पाक कमाई उठा लेंगे और नाजाइज़ कमाई चोरी, डकैती की वह भी जब उठाएंगे तो हाथ में छुपेगी नहीं, हाथ उसे भी पकड़ लेगा, दिल क़बूल नहीं करेगा मगर हाथ क़बूल करेगा, हलाल की कमाई रख दो तब, हराम की रख दो तब दोनों को लेकर घर चला आएगा, मुँह में आप कुछ डालें तो जैसी लज़्ज़त हलाल चीज़ के खाने से आएगी वैसी लज़्ज़त हराम की कमाई से भी आएगी, मिठाई अगर हराम की है तो यह नहीं कि वह कड़वी हो जाये। वैसी मीठी लगेगी जैसी हलाल की मिठाई। ज़ुबान दोनों को क़बूल कर लेती है। हलाल की मिठाई को भी हराम की मिठाई को भी। हराम की चीज़ से कांटे नहीं चुभे, वह खा जाती है और उसे ज़ाइक़ा आता है। लेकिन दिल हराम की चीज़ से मुतमइन नहीं होता वह कहता है बड़ी बुरी हरकत की, जाने आख़िरत में क्या बनेगा! क्या मेरी दुरगत होगी...इसी तरह से पैर हैं जिस तरह से आपको मस्जिद की तरफ़ ले जाते हैं। अगर कोई शराब की दुकान की तरफ़ जाएगा, पैर उसे भी ले जाएंगे। पैरों में कांटे नहीं चुभेंगे... बिल्कुल नहीं रुकेंगे। हराम मौक़े पर ले जाओ, हलाल मौक़े पर ले जाओ, अपनी कारगुज़ारी दिखलाएंगे तो हाथ, मुँह, पैर जाइज़ नाजाइज़ दोनों को क़बूल करते हैं।

इस आँख से अगर अपनी माँ और बीवी को देखे तो पाक

निगाह होगी लेकिन अजनबी औरत को देखे नापाक निगाह होगी मगर आँख दोनों को देख लेगी। अजनबी औरत के देखने में आँख के अन्दर कांटे नहीं चुभेंगे। वह वैसी ही लज़्ज़त लेगा जैसे हलाल औरत को देखने में लज़्ज़त आती है लेकिन दिल मुतमइन नहीं होगा। दिल कहेगा बड़ी ग़लत हरकत की, ख़ुदा जाने आख़िरत में क्या ख़म्याज़ा भुगतना पड़े...तो दिल हमेशा हक़ को क़बूल करता है बातिल को क़बूल नहीं करता और दिल के सिवा जितने-जितने हिस्से हैं हक़ व बातिल दोनों को क़बूल करते हैं। इससे मालूम हुआ कि हक़ का हिस्सा सिर्फ़ दिल है। बाक़ी हिस्से हक़्क़ानी भी हैं बातिल-परस्त भी हैं, नेक भी हैं, बद भी हैं। उन्हें हक़ बात से कोई ख़ास ताल्लुक़ नहीं है। यह सिर्फ़ दिल का काम है तो दिल जैसे हक़्क़ानी हिस्से में अगर आदमी ऐसी चीज़ें भर ले जो हलाल भी बन सकती हो और हराम भी तो उसने दिल को गन्दा कर दिया। दिल में ऐसी चीज़ें भरनी चाहिए कि जैसे यह पाक है वैसे ही वह चीज़ भी पाक हो। वह चीज़ अल्लाह की मुहब्बत, इल्म व मारिफ़त ख़ुदवन्दी और पाकीज़ा अख़्लाक़ हैं कि यह हक़ ही हक़ हैं। इनकी जगह दिल में होनी चाहिए। दौलत की जगह दिल में नहीं चाहिए। हाथ-पैर में होनी चाहिए, इसलिए कि वह हलाल व हराम और पाक और नापाक भी बन सकती है।

दिल में ख़ालिस पाक चीज़ आनी चाहिए, अहले अल्लाह का मज़ाक़ हमेशा से यह रहा है कि उन्होंने कमाया दौलत हाथ में आती, लेकिन दौलत को क़िब्ला व काबा न बनाया कि उसकी पूजा में लग जायें, उसे एक ज़रूरत का इस्तेमाल सामान समझा, जाइज़ मौक़ों पर ख़र्च किया, हुक्मे ख़ुदावन्दी के ताबेअ रहे... हासिल यह निकला कि दौलत को अपना ख़ुदा बना लेना कि

अगर वह पास है तो दिल को चैन है और ज़रा उसमें कोई कमी आई दिल बेचैन, डावां डोल। यह शान अल्लाह की मुहब्बत की होनी चाहिए कि हक़ तआला से ज़रा बुअद हो जाये तो दिल बेचैन हो जाए और क़ुर्ब हासिल हो जाये तो फ़रहत व इन्बिसात पैदा हो जाये।

बाज़ार अगर ज़रा मन्दा पड़ जाए, लोग परेशान हो जाते हैं अब क्या होगा? क्या बनेगा? जैसे मालूम हुआ सारा चैन व आराम छिन गया, यह नहीं होना चाहिए कमाने की चीज़ है। इसे जाइज़ तरीक़े पर आदमी कमाए। लेकिन इसको ख़ादिम समझे, मख़दूम न बनाये, ख़िदमत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की और उसकी मुहब्बत की करे।

हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े ज़लीलुल क़द्र सहाबी और बहुत बड़े ताजिर थे, उनकी तिजारत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बरकत की दुआ दी तो कैफ़ियत यह थी कि रुम, शाम और मिस्र में जगह जगह उनकी तिजारत की कोठियाँ थीं और माल सप्लाई होता था और नफ़े की रक़्म जब आती थी यह नहीं था कि एक दो आदमी लेके चले आएं, लाखों रुपये का ख़ज़ाना ऊँटों पर लदकर आता था और जब घर में रखने को जगह नहीं होती थी, तंग आकर कहते कि भई, कौने में ढेर लगा दो, रुपये सोने और चाँदी के मक्के इस तरह छत तक भरे होते जैसे ग़ल्ला भर दिया जाता है। तो हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ रज़ि० करोड़पती सहाबा में से थे मगर दिल की क्या कैफ़ियत थी? दिल की कैफ़ियत यह थी कि मेहमानदारी कस्रत से थी, तीन-तीन चार-चार सौ मेहमान दस्तरख़्वान पर बैठते थे, और कई कई क़िस्म के खाने दस्तरख़्वान पर चुने जाते। ख़ातिर

होती थी, जब दस्तरख़्वान पर खाने चुन दिए गये और अब क़रीब है कि खाना शुरू हो तो अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का दिल एक दम रोता आँखों से आँसू जारी...और फ़रमाते ऐ अल्लाह! तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्तरख़्वान पर कभी एक से दूसरा खाना न हुआ और अब्दुर्रहमान के दस्तरख़्वान पर इतने खाने? कहीं मेरी जन्नत की नेमतें दुनिया ही में तो नहीं ख़त्म की जा रही हैं? कहीं मुझे आख़िरत से महरूम तो नहीं किया जा रहा? यह कहकर रोते, सारे हाज़िरीन और महमान रोते इसलिए कि सहाबी हैं, साहिबे दिल हैं। उनके दिल का असर दूसरों पर पड़ता। अब चार सौ आदमी की सारी महफ़िल बैठी रो रही है, गिड़गिड़ा रहे हैं और अपनी आख़िरत को याद कर रहे हैं, रोते-रोते बेहाल हो जाते और सारा दस्तरख़्वान बेखाते पीते उठ जाता। मेहमान और मेज़बान भी फ़ाक़े से उठ जाते, रात को फिर दस्तरख़्वान चुना जाता, फिर खाने का वक़्त आता तो बे-इख़्तियार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० का दिल धड़कना शुरू होता और रोना शुरू करते और कहते :

ऐ अल्लाह! मुहाजिरीने अव्वलीन उस दुनिया में इस ग़ुरबत से गये कि खाने को उनको पानी हासिल नहीं था, हज़रत हमज़ा रज़ि० नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा, इस ग़ुरबत में उन्होंने वफ़ात पाई कि कफ़न पूरा हासिल नहीं आया। सर ढांपते थे तो पैर खुल जाते थे, पैर ढांपते तो सर खुल जाता था। आख़िर सर को ढांपा गया और पैरों पर घास डाल दी गई इस तरह दफ़्न किया, जिनका लक़ब सैयदुश्-शोहदा हमज़ा रज़ि० है। तो रोते कि रसूलुल्लाह सल्ल० के चचा की ग़ुरबत का यह आलम और अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ रज़ि० का यह आलम कि दस-दस

क़िस्म के खाने चुने होते थे। कहीं मेरी आख़िरत तो नहीं ख़त्म की जा रही है। हाज़िरीन भी रोते और फिर दस्तरख़्वान बेखाए-पिए उठ जाता। तीन-तीन दिन का फ़ाक़ा इस तरह से होता था।

अंदाज़ा किया आपने कि दौलत तो इतनी बे-शुमार कि घर में ग़ल्ले की तरह से भरी होती है। और क़ल्ब इतना मुतवज्जेह इलल्लाह कि खाने का होश न पीने का होश, मुस्लिम को ऐसा बनाया गया है। मुसलमान को न तो यह कहा गया कि तू शहरों को छोड़कर जंगलों में जाकर बैठ, पहाड़ों के दामन में बैठ, फ़रमायाः यह रहबानियत है, इस्लाम ने रहबानियत ख़त्म कर दी, कमाना फ़र्ज़ बताया है लेकिन कमाने के बाद लखपती बन जाये तो कैफ़ियत यह पैदा कर दी जाये कि हाथ पैर में तो सोना-चांदी रखा हुआ हो दिल अल्लाह में अटका हुआ हो। मुसलमान की यह शान होनी चाहिए।

और मज़ाहिब में तर्के दुनिया इस तरह सिखलाई गई कि दौलत को ख़त्म कर दो। इस्लाम में इस तरह से सिखलाई गई कि कमाओ मगर दिल से तर्क कर दो। मुहब्बत का ताल्लुक़ न रहे यह ज़्यादा हौसले का काम है। दुनिया को बिल्कुल छोड़कर पहाड़ में जा बैठे यह आसान है, लेकिन सामने मौजूद हो फिर दिल में गुंजाइश न हो, यह हर एक का हौसला नहीं, यह मुश्किल काम है। यह मुजाहिदा मुसलमानों को बतलाया गया है कि सबकुछ लेकर फिर दिल से बेताल्लुक़ रहे और हाथ-पैर से इस तरह लगा रहे जैसे चौबीस घंटे इसी काम के हो।

हासिल यह निकला कि दौलत कितनी बढ़ जाये उसको वफ़ादार नहीं बतलाया गया, वह दुनयवी ज़िन्दगी में भी साथ छोड़ दीती है और मरने के वक़्त तो छोड़ती ही है। जो ऐसी बेवफ़ा

चीज़ हो, उससे मुहब्बत करके आदमी क्या करे? उसे ग़ुलाम और ख़ादिम बनाए रखे यही उसका हक़ है...फिर भी उसको क़िब्ला बना ले तो हश्र यह होगा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मिसाल में फ़रमाया कि ऐन मरते वक़्त माल से मदद मांगी कि मैंने हमेशा बड़े भाई की तरह तेरी इज़्ज़त की तू मेरे काम आएगी? उसने कहाः मैं तेरे काम आने वाला नहीं। उस वक़्त आदमी पछताएगा कि मैंने सारा दिल व दिमाग़ का सरमाया उसके ऊपर लगा दिया और उसने वफ़ा न की, अफ़्सोस रहा, तो फ़रमाया कि यह तो बड़ा भाई है।

और फ़रमाया, समझे! दर्मियानी भाई कौन है? फ़रमायाः वह इंसान के बीवी- बच्चे हैं कि यह इंसान मरते वक़्त उम्मीद की निगाहें डालता है कि शायद मेरी बीवी या औलाद काम आ जाये। मेरा आख़िरी वक़्त है मगर वह कहते हैं हम नहीं काम आ सकते। तू जाने, तेरी क़ब्र जाने, ज़्यादा से ज़्यादा यह करेंगे कि तू मर जायेगा तो तुझे ज़मीन के नीचे दफ़्न कर देंगे लेकिन आगे तू जान, तेरा काम जाने। हम तेरे मददगार नहीं, हालांकि बीवी-बच्चे आदमी के हैं कि आदमी कुछ वक़्त उनकी मुहब्बत में भी खो देता है। कई बार ईमान भी खो देता है, औलाद की सेहत और बीमारी से बचाने के लिए कई बार माँ-बाप शिर्किया चीज़ें भी कर गुज़रते हैं, टोने और टोटके और सहर और जादू भी करा लेते हैं, सहर हराम से भी बाज़ नहीं रहते कि किसी तरह से औलाद बच जाये। किसी तरह से जान बच जाये। औलाद के लिए यह सबकुछ किया मगर मरने के वक़्त वह भी टका सा जवाब दे देगी, कि मैं तुम्हारे काम की नहीं। तुम जानो तुम्हारा काम जाने, यह कहेगाः मैंने उम्र भर तेरे साथ सुलूक किया, वह कहेगी, तूने झक

मारा, किसने कहा था तुझे सुलूक करने को। अब भुगत अकेले ही। हम तेरे काम आने वाले नहीं हैं... तो फ़रमायाः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि यह भाई कैसा है। अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! यह भाई शरीफ़ नहीं है, यह भी कमीना ख़सलत निकला।

इस वास्ते बीवी बच्चों से मुहब्बत हो तो उनकी इस्लाह के लिए हो, उनकी तालीम व तर्बीयत के लिए ताल्लुक़ हो, बीवी की मुहब्बत इसलिए हो कि उसको भी ख़ुदापरस्ती में लगाया जाये, सिर्फ़ नफ़्सपरस्ती की मुहब्बत होगी तो सबसे पहले वह अलग होकर यह कहेगीः मेरा तुझसे कोई वास्ता नहीं, वह कहेगाः मैं तेरा शौहर हूँ, वह कहेगी, मैं नही जानती। अब तो मैं दूसरे के घर जाने वाली हूँ या बैठने वाला हूँ, मेरा तेरा वास्ता किया? लेकिन अगर तर्बियत की और सीधे सच्चे रास्ते पर लगा, वह कहेगी मैं ईसाले सवाब भी करूंगी, मैं क़ब्र में भी तुझे नहीं भुलाऊंगी, आख़िरत में भी नहीं भुलाऊंगी। तू मुत्मइन रह मैं बराबर सवाब पहुँचाऊंगी, औलाद कहेगी, मैं तेरे लिए सद्क़-ए-जारिया हूँ। तूने मेरी तर्बियत की, मुझे इल्म पढ़ाया, अमल के रास्ते पर लगाया, आज तू जा रहा है तो मेरा अमल तेरे साथ जा रहा है। मेरा सद्क़ा जारिया होना तेरे साथ है। तू फ़िक्र मत करना, लेकिन अगर सिर्फ़ औलाद ही औलाद है या बीवी ही बीवी है, कोई तर्बियत नहीं सिर्फ़ नफ़्स-परस्ती और ऐश ही है और कुछ नहीं, तो इसका जवाब यह है कि मेरा तेरा क्या वास्ता? तू जाने तेरा काम जाने।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह दर्मियाना भाई कैसा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया बिल्कुल बेकार और कमीना ख़स्लत साबित हुआ।

फ़रमाया और समझे वह तीसरा भाई कौन है? जिसके साथ हमेशा बदसलूकी की, और उसने कहा मैं ही आज काम आऊंगा। फ़रमाया वह इंसान का नेक अमल है, जिससे इंसान उम्र भर बदसलूकी करता है, नमाज़ का गला घोंटता है, यह रोज़ का मामूल है, न वक़्त की पाबन्दी, न मस्जिद की हाज़िरी, कितने इंसान हैं कि रमज़ान आ रहा है लेकिन उन्हें ज़रा एहतिराम नहीं, खुलेआम वह सिग्रेट पीते और खाते फिर रहे हैं, बहुत-से अल्लाह के बन्दे हैं कि उन्हें बेशुमार दौलत दी गई, उन्हें ज़कात व सद्क़ात की तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं वह ऐश और सिनेमा, थियेटर पर ख़र्च कर रहे हैं, या शराब व कबाब पर ख़र्च करेंगे तो उसमें ख़र्च करते हैं और नेकी का गला घोंटते हैं, न नमाज़ की फ़िक्र, न रोज़े की फ़िक्र, न हज की फ़िक्र...और अगर यह चीज़ें सर-अंजाम दे, तो दिल में ग़ुरूर कि मैं बड़ा आदमी हूँ इसलिए कि बावजूद दौलत के मैंने नमाज़ पढ़ ली, मआज़-अल्लाह। अल्लाह पर एहसान किया, नमाज़ पढ़ना चाहिए तो नहीं था। इसलिए कि दौलत मुझे फ़ुर्सत कब देती है। यह मेरा एहसान है कि मैंने नमाज़ पढ़ ली और हज कर लिया। हज करने के बाद तो जैसे सातों जन्नतें मेरे क़ब्ज़े में हो गईं। अब मेरे नीचे से निकल ही नहीं सकतीं तो या तो अमल ग़ाइब, अगर करे तो ग़ुरूर मौजूद है उससे तो न करना ही बेहतर है।

बहरहाल नेकी के साथ इन्सान बदसलूकी करता है सिवाय उसके कुछ के बन्दे ऐसे भी है जो नेकी, तक़्वा और तहारत को असल समझते हैं। वह अपनी नेकी को क़ाइम रखने के लिए जान व माल की परवा नहीं करते मगर वह सौ में दो-चार होते हैं। ज़्यादा वही होते हैं जिन्हें नेकी वग़ैरह की कोई परवाह नहीं,

इसलिए कि आख़िरत पेशे-नज़र है ही नहीं, बस यहीं का सारा झगड़ा सामने है तो मरते वक़्त आदमी नेक अमल की तरफ़ रूजूअ करेगा, तो यह नेक अमल कहेगा मैं ही हूँ तेरे काम आने वाला। अगरचे मेरे साथ तूने बद्-सुलूकी की। मैं क़ब्र में, हश्र में, पुल-सिरात पर तेरे साथ हूँ और जन्नत में भी तुझे मुनाफ़ा मिलेगें, वह मेरी वजह से मिलेंगे इसलिए वहाँ भी तेरे साथ हूँ। तो हमेशा आख़िर तक जो चीज़ इंसान का साथ देने वाली है वह इंसान की नेकी और अमले सालेह है।

हदीस में है जब आदमी क़ब्र में लिटा दिया जाता है और सवाल व जवाब में पूरा उतरता है उसकी क़ब्र जहां तक निगाह जाती है बड़ी कर दी जाती है, उसे एक अज़ीम आलम नज़र आता है जिसमें रौशनी भी है, चाँदनी भी है तो दूर से एक शख़्स उसे आता हुआ दिखाई देता है। उसके चेहरे से ख़ैर व बरकत टपकती हुई दिखाई देती है। उसका चेहरा देखकर दिल में फ़रहत और ख़ुशी भर जाती है। अब वह आहिस्ता-आहिस्ता क़रीब आ रहा है जब क़रीब आता है तो यह मय्यत पूछती हैः ऐ शख़्स तू कौन है? इस तन्हाई के घर में तू मेरे पास आया, तेरे चेहरे को देखकर मुझे यूँ मालूम होता है कि मेरा दिल ख़ुशियों से भरा हुआ है। तू कौन है जो इस बेकसी के आलम में मेरे पास आ रहा है? वह कहेगा तू मुझे भूल गया, इतनी जल्दी भुला दिया। اَنَـا عَـمَـلُكَ الصَّالِحُ। मैं तेरा नेक अमल हूँ, मैं तुझे तसल्ली देने के लिए आया हूँ कि इस तन्हाई में बिल्कुल मत घबराना, मैं तेरे साथ हूँ, कोई आँच तुझ पर नहीं आ सकती आएगी तो मैं उसे झेलूंगा।

तो नेक अमल वह है जो नज़अ् में भी साथ, क़ब्र में भी साथ।

हदीस में है कि नज़अ् के वक़्त ख़ुद मल्कुल मौत अलैहिस्सलाम

तल्क़ीन करते हैं कि देख जानकनी का वक़्त क़रीब है, अब अल्लाह अल्लाह कर ले, अब भी कलिमा पढ़ तो नेकी की तर्ग़ीब देते हैं उस वक़्त आदमी अमल तो नहीं कर सकता, बेबस है। ज़बान भी बेबस होती है। आदमी वह भी नहीं कर सकता, मगर दिल में तसव्वुर कर सकता है। उस वक़्त का वह अमल कार-आमद हो जाता है कि वह दिल के अन्दर तौहीद व रिसालत और **ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मर्दुरसूलुल्लाह** का विर्द कर रहा है तो मल्कुल मौत भी कहते हैं कि जल्दी कर, इसको तल्क़ीन करते हैं। इसलिए कि यही नेकी कारआमद होगी, उस वक़्त की यह नेकी भी कार-आमद होगी...तो उस वक़्त दौलत, बीवी-बच्चों का काम नहीं कर सकता। कर सकता है तो सिर्फ़ नेकी का काम कर सकता है तो नज़अ् में भी नेकी कारआमद होती।

क़ब्र में भी नेकी कारआमद है, हदीस में है जब मय्यत को क़ब्र में लिटा दिया जाता है तो चारों तरफ़ से अज़ाब उसकी तरफ़ दौड़ता और बढ़ता है लेकिन अगर किसी के दिमाग़ में क़ुरआन की आयतें महफ़ूज़ हैं वह खड़ी हो जाती है, ख़बरदार! इधर से मत आना अज़ाब का रास्ता रोक देती हैं। दाएं तरफ़ से अज़ाब बढ़ता है तो हदीस में है कि नमाज़ें खड़ी हो जाती हैं कि ख़बरदार इधर से मत आना, बाएं तरफ़ से अज़ाब बढ़ता है तो रोज़े खड़े हो जाते हैं। पैरों की तरफ़ से अज़ाब बढ़ता है तो ज़कात व सद्क़ात खड़े हो जाते हैं। चारों तरफ़ से नाकाबन्दी कर देते हैं। अज़ाब रुक जाता है। इस तरह अज़ाब से हिफ़ाज़त करने वाले वहाँ आमाले सालिहा बनते हैं, वहाँ बीवी बच्चे और रिश्तेदार मदद को नहीं पहुंचते अलबत्ता नेकी वहाँ संतरी बन के हिफ़ाज़त करती है।

उलमा ने लिखा है कि जब आदमी पर फाँसी का मुक़द्दमा चलाया जाये और तमाम सुबूत बेकार हो जायें और यक़ीन हो कि अब फाँसी चढ़ेगा उस वक़्त दुनिया का दस्तूर है कि मुज्रिम सीधे बादशाह के सामने मराहम खुसरुवाना की दर्ख़ास्त करता है कि क़ानून में तो गुंजाइश नहीं है बादशाह अगर खुसूसी रहम व करम से मुझे छोड़ दे, मेरी रिहाई हो सकती है तो ऐसे मौक़े पर आदमी बादशाह और हुकूमत के साथ अपनी वफ़ादारी को पेश करता है।

क़दीम ज़माने में दस्तूर था कि अगर किसी के घर में कोई शाही फ़रमान होता था तो लोग मराहम खुसरुआना की दरख़्वास्त पेश करते वक़्त वह ले जाकर पेश करते थे कि हम तो पुश्तैनी हुकूमत के वफ़ादार हैं। हमारे घर में तो बादशाह का फ़रमान मौजूद है। हमें बादशाह और हुकूमत ने अपना समझा था हम इस फ़रमान को पेश करके निजात चाहते हैं। हम वफ़ादार, खुद्दाम, फ़िदवी और ग़ुलाम हैं... तो दस्तूर यह था कि शाही फ़रमान अदब के साथ सर पर रखकर पेश किया करते थे कि यह फ़रमान है हम हुकूमत के वफ़ादार हैं। इसलिए हमको छोड़ दिया जाये। तो अदब की वजह से सर पर रखकर पेश करते, हाथ से पेश नहीं करते थे। तो उलमा लिखते हैं कि जब अज़ाबे खुदावन्दी सर की तरफ़ से आयेगा तो यह शख़्स जिसके दिमाग़ में क़ुरआन-ए-करीम महफ़ूज़ है, यह क़ुरआन-ए-करीम को पेश करेगा कि मैं तो अल्लाह की हुकूमत का फ़रमांबरदार हूँ, मैं ग़ुलाम रह चुका हूँ, मेरे घर में तो यह शाही फ़रमान क़ुरआन-ए-करीम आया हुआ है। मैं सर पर रखकर पेश करता हूँ कि इसकी बदौलत मुझे निजात दी जाये। और हमेशा-हमेश की फाँसी से मुझे बचाया जाये। तो सर की तरफ़ से अज़ाब बढ़ता है तो क़ुरआन रोकता है।

इसी हदीस में اَلصَّلٰوۃُ بُرْھَانٌ. नमाज़ इंसान की दस्तावेज़ और अदालत में जब अपनी रिहाई के सबूत के लिए दस्तावेज़ पेश करते हैं तो यह नमाज़ दाएं तरफ़ से अज़ाब को रोकेगी जैसे यह इंसान की दस्तावेज़ है। हदीस में फ़रमाया गया اَلصَّوْمُ جُنَّۃٌ और रोज़ा इंसान के लिए ढ़ाल है, तो जब वार रोका करते हैं तो ढ़ाल बाएं हाथ में होती थी बाईं तरफ़ से अज़ाब बढ़ता है तो रोज़ा मिस्ल ढ़ाल के आगे आ जाता है तो इधर से भी अज़ाब नहीं आ सकता है... और ज़कात व सद्क़ात यह इंसान के पामज़द हैं, हाथ पैर की कमाई है। तो पैरों की तरफ़ से अज़ाब बढ़ता है तो यह सद्क़ात खड़े हो जाते हैं। यानी क़ब्र में चारों तरफ़ से नाका बन्दी नेक अमल ही करता है।

एक बाप ने दर्द भरे अश्आर पढ़े

क़र्तबी ने अपनी अस्नाद मुफ़स्सल के साथ हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत किया है कि एक शख़्स रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और शिकायत की कि मेरे बाप ने मेरा माल ले लिया है, आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अपने वालिद को बुलाकर लाओ। उसी वक़्त जिब्रील अमीन अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और रसूलुल्लाह से कहा कि जब इसका बाप आ जाये तो आप उससे पूछिए कि वह कलिमात क्या हैं जो उसने दिल में कहे हैं, खुद उसके कानों ने भी उनको नहीं सुना। जब यह शख़्स अपने वालिद को लेकर पहुंचा तो आप सल्ल० ने उसके वालिद से कहा कि क्या बात है, आपका बेटा आपकी शिकायत करता है, क्या आप चाहते हैं कि उसका माल छीन लें। वालिद ने कहाः आप उसी से यह सवाल फ़रमाएं कि मैं

उसकी फूफी, ख़ाला या अपने नफ़्स के सिवा कहाँ ख़र्च करता हूँ। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया "ايه" (जिसका मतलब यह था कि बस हक़ीक़त मालूम हो गई अब कुछ कहने-सुनने की ज़रूरत नही।) इसके बाद उसके वालिद से पूछा कि वह कलिमात क्या हैं जिनको अभी तक खुद तुम्हारे कानों ने भी नहीं सुना। उस शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०! हर मामले में अल्लाह तआला आप पर हमारा ईमान और यक़ीन बढ़ा देते हैं (जो बात किसी ने नहीं सुनी उसकी आपको इत्तिला हो गई यह एक मोजज़ा है)।

फिर उसने अर्ज़ किया: यह एक हक़ीक़त है कि मैंने कुछ अश्आर दिल में कहे थे जिनको मेरे कानों ने भी नहीं सुना। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि वह हमें सुनाओ, उस वक़्त उसने यह अश्आर सुनाए:

غَذَوْتُكَ مَوْلُوْدًا وَّ مُنْتُكَ يَافِعًا
تُعَلُّ بِمَا اَجْنِيْ عَلَيْكَ وَتُنْهَلُ

मैंने तुझे बचपन में ग़िज़ा दी और जवान होने के बाद भी तुम्हारी ज़िम्मेदारी उठाई, तुम्हारा सब खाना-पीना मेरी ही कमाई है।

اِذَا لَيْلَةٌ ضَافَتْكَ بِالسُّقْمِ لَمْ اَبِتْ
لِسُقْمِكَ اِلَّا سَاهِرًا اَتَمَلْمَلُ

जब किसी रात में तुम्हें कोई बीमारी पेश आ गई तो मैंने तमाम रात तुम्हारी बीमारी के सबब और बेक़रारी में गुज़ारी।

كَأَنِّي أَنَا الْمَطْرُوقُ دُوْنَكَ بِالَّذِي

طُرِقْتَ بِهٖ دُوْنِي فَعَيْنِي تَهْمِلُ

गोया कि तुम्हारी बीमारी मुझे ही लगी है तुम्हें नहीं, जिसकी वजह से मैं तमाम शब रोता रहा।

تَخَافُ الرَّدٰى نَفْسِيْ عَلَيْكَ وَاِنَّهَا

لَتَعْلَمُ اَنَّ الْمَوْتَ وَقْتٌ مُؤَجَّلُ

मेरा दिल तुम्हारी हलाकत से डरता रहा हालांकि मैं जानता था कि मौत का एक दिन मुक़र्रर है, पहले-पीछे नहीं हो सकती।

فَلَمَّا بَلَغْتَ السِّنَّ وَالْغَايَةَ الَّتِيْ

اِلَيْهَا مَدٰى مَا كُنْتُ فِيْكَ اُؤَمِّلُ

फिर जब तुम इस उम्र और इस हद तक पहुँच गये जिसकी तमन्ना किया करते थे।

جَعَلْتَ جَزَائِيْ غِلْظَةً وَّ فِظَاظَةً

كَاَنَّكَ اَنْتَ الْمُنْعِمُ الْمُتَفَضِّلُ

तो तुमने मेरा बदला सख़्ती और बद्-कलामी बना दिया जैसे कि तुम ही मुझ पर एहसान व इकराम कर रहे हो।

فَلَيْتَكَ اِذْ لَمْ تَدَعْ حَقَّ اُبُوَّتِيْ

فَعَلْتَ كَمَا الْجَادُ الْمُصَاقِبُ يَفْعَلُ

काश अगर तुमसे मेरे बाप होने का हक़ अदा नहीं हो सकता तो कम से कम ऐसा ही कर लेते जैसा एक शरीफ़ पड़ोसी किया करता है।

فَاَوْلَيْتَنِىْ حَقَّ الْجِوَارِ وَلَمْ تَكُنْ
عَلَىَّ بِمَالٍ دُوْنَ مَالِكَ تَبْخَلُ

तो कम से कम मुझे पड़ोसी का हक़ तो दिया होता और ख़ुद मेरे ही माल में मेरे हक़ में बुख़्ल से काम न लिया होता।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह अश्आर सुनने के बाद बेटे का गिरेबान पकड़ लिया और फ़रमाया اَنْتَ وَمَالُكَ لِاَبِيْكَ यानी जा तू भी और तेरा माल भी सब तेरे बाप का है।

—तफ़्सीर क़ुर्तबी हिस्सा 10, पेज 246, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 5, पेज 468

मियाँ बीवी में मुहब्बत पैदा करने का आसान नुस्ख़ा

मियाँ बीवी में मुहब्बत पैदा करने का आसान नुस्ख़ा यह है कि दोनों एक दूसरे के लिए दुआएं करते रहें, इन्शा-अल्लाह कुछ दिनों में ऐसी अजीब मुहब्बत पैदा हो जायेगी कि जिसका दोनों को वह्मो गुमान भी न होगा।

याद रखिए! ईंट को ईंट से मिलाने के लिए सीमेंट की ज़रूरत है।

लकड़ी को लकड़ी से मिलाने के लिए कील की ज़रूरत है।

कागज़ को कागज़ से मिलाने के लिए गोंद की ज़रूरत है।

लेकिन दो दिलों को मिलाने के लिए अल्लाह तआला के ख़ास फ़ज़्ल की ज़रूरत है। इसके लिए ज़ाहिरी तद्बीर बीवी की तरफ़ से "इताअत" शौहर की हर बात पर यह है कि नीचे दिए अल्फ़ाज़ कहे :

1. जी हाँ, जी हाँ।
   जी हाँ।
2. अच्छा।
   अच्छा।
3. आइंदा नहीं होगा।
   आइंदा नहीं होगा।
4. जैसे आप कहेंगे वैसे ही करूंगी।
   जैसे आप कहेंगे वैसे ही करूंगी।
5. मुआफ़ फ़रमा दीजिए।
   मुआफ़ फ़रमा दीजिए।
6. आप सहीह कह रहे हैं।
   आप सहीह कह रहे हैं।

"और बातिनी तदबीर मियाँ-बीवी एक-दूसरे के लिए दिल से दुआएं करें। एक-दूसरे को ख़ूब माफ़ करके एक-दूसरे को अपने हालात से मजबूर समझकर बेक़ुसूर समझें। उसकी ग़लतियों पर दिल में उसके ख़िलाफ़ उठने वाले ग़म व गुस्से के जज़्बात को प्यार व मुहब्बत, शफ़क़त और रहमत की थपकी देकर सुला दें।"

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० की नींद उचाट हो जाया करती थी

तबरानी में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० से मरवी है कि रातों की मेरी नींद उचाट हो जाया करती थी तो मैंने आं हज़रत सल्ल० से इस बात की शिकायत की। आप सल्ल० ने फ़रमायाः यह दुआ पढ़ा करो—

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَأَتِ الْعُيُوْنُ وَاَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ اَنِمْ
عَيْنِيْ وَاهْدِئْ لَيْلِيْ

मैंने जब इस दुआ को पढ़ा तो नींद न आने की बीमारी अल्लाह के फ़ज़्ल से दूर हो गई। —तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 4, पेज 168

चार सिफ़तें पैदा कीजिए

मुस्नद अहमद में फ़रमाने रसूल सल्ल० है कि चार बातें जब तुझमें हों, फिर अगर सारी दुनिया भी ख़त्म हो जाये तो तुझे नुक़सान नहीं—

1. अमानत की हिफ़ाज़त।
2. बातचीत की सदाक़त।
3. हुस्ने अख़्लाक़।
4. वजूह हलाल की रोज़ी। —तफ़सीर इब्ने कसीर, हिस्सा 3, पेज 284

दो सौकनों का तक़्वा

बग़दाद में एक बड़ा सौदागर रहता था। यह बड़ा ही दियानतदार और होशियार था। ख़ुदा ने उसका कारोबार ख़ूब ही चमकाया था। दूर-दराज़ से ख़रीदार उसके यहाँ पहुँचते और अपनी ज़रूरत का सामान ख़रीदते। इसी के साथ-साथ ख़ुदा ने उसको घरेलू सुख भी दे रखा था। उसकी बीवी निहायत ख़ूबसूरत, नेक, होशियार और सलीक़ामन्द थी। सौदागर भी दिल व जान से उसको चाहता था और बीवी भी सौदागर पर जान झिड़कती थी और निहायत ऐश व सुकून और मेल-मुहब्बत के साथ उनकी ज़िन्दगी बसर हो रही थी।

सौदागर कारोबारी ज़रूरत से कभी-कभी बाहर भी जाता और

कई-कई दिन घर से बाहर सफ़र में गुज़ारता। बीवी यह समझकर कि यह घर से ग़ाइब रहना कारोबारी ज़रूरत से होता है, मुत्मइन रहती। लेकिन जब सौदागर जल्दी-जल्दी सफ़र पर जाने लगा और ज़्यादा-ज़्यादा दिना तक घर से ग़ाइब रहने लगा तो बीवी ज़रा खटकी। और उसने सोचा ज़रूर कोई राज़ है।

घर में एक बूढ़ी मुलाज़िमा थी। सौदागर की बीवी को उस पर बड़ा भरोसा था और अक्सर बातों में वह उस मुलाज़िमा को अपना राज़दार बना लेती। एक दिन उसने बुढ़िया पर अपना शुब्ह ज़ाहिर किया और बताया कि मुझे बहुत बैचेनी है। बुढ़िया बोली : ऐ बीबी! आप क्यों परेशान होती हैं? परेशान हों आपके दुश्मन, आपने अब कहा है देखिए, मैं चुटकी बजाने में सब राज़ मालूम किए लेती हूँ। और बुढ़िया टोह में लग गई। अब जब सौदागर घर से चले तो यह भी पीछे लग गई और आख़िरकार उसने पता पा लिया कि सौदागर साहब ने दूसरी शादी कर ली है और यह घर से ग़ाइब होकर उस नई बीवी के पास ऐश करते हैं।

बुढ़िया यह राज़ मालूम करके आई और बीबी को सारा क़िस्सा सुनाया। सुनते ही बीबी की हालत ग़ैर हो गई। सौकन की जलन मश्हूर ही है लेकिन जल्द ही उस बीबी ने अपने आप को संभाल लिया और सोचा कि जो कुछ होना था हो ही चुका है अब मैं परेशान होकर अपनी ज़िन्दगी क्यों अजीरन बनाऊं। और उसने मियाँ पर बिल्कुल ज़ाहिर न होने दिया कि वह उस राज़ को जानती है। वह हमेशा की तरह सौदागर की ख़िदमत करती रही और अपने बर्ताव और ख़ुलूस व मुहब्बत में ज़रा फ़र्क़ न आने दिया। दूसरी तरफ़ शरीफ़ सौदागर ने भी अपनी बीवी के हक़ूक़ में कोई कमी न की। अपने रवैये में कोई तब्दीली न आने दी और

हमेशा की तरह इसी ख़ुलूस से बीवी से मुहब्बत के साथ सुलूक करता रहा। शौहर के इस नेक बर्ताव ने बीवी को सोचने पर मजबूर कर दिया और उसने यह तै कर लिया कि वह शौहर के इस जाइज़ हक़ में हरगिज़ रोड़ा न बनेगी। उसने सोचा कि आख़िर मियाँ मुझसे ज़ाहिर करके भी तो दूसरा निकाह कर सकता था। मियाँ ने इस तरह छुपाकर यह निकाह क्यों किया। इसलिए कि मेरे दिल को तकलीफ़ होगी। मैं सौकन के जलापे को बर्दाश्त न कर सकूंगी।

कितना प्यारा है मेरा शौहर। उसने मेरे नाज़ुक जज़्बात का कैसा ख़्याल रखा। फिर उसने उस नई दुल्हन की मुहब्बत में मस्त होकर मेरा कोई हक़ भी तो नहीं मारा। उसके सुलूक और मुहब्बत में भी तो कोई फ़र्क नहीं आया। आख़िर मुझे क्या हक़ है कि मैं उसको उस हक़ से रोकूं जो ख़ुदा ने उसको दे रखा है, मुझसे ज़्यादा नाशुक्र और नालाइक़ कौन होगा जो ऐसे मेहरबान शौहर के जज़्बात का लिहाज़ न करे...और उसके दिल को तकलीफ़ पहुंचाये...बीवी यह सोचकर बिल्कुल ही मुत्मइन हो गई। सौदागर बीवी का ख़ुशगवार सुलूक और मुहब्बत का बर्ताव देखकर यह समझता रहा कि शायद ख़ुदा की बन्दी को यह राज़ मालूम नहीं है और पूरी एहतियात करते रहे कि किसी तरह मालूम न होने पाये। और दोनों हंसी-ख़ुशी प्यार व मुहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। आख़िर कुछ सालों के बाद सौदागर की ज़िन्दगी के दिन पूरे हो गये और उसका इन्तिक़ाल हो गया। सौदागर ने चूंकि दूसरी शादी दूसरे शहर से दूर बहुत ख़ामोशी से की थी इसलिए उसके रिश्तेदारों में भी किसी को भी यह राज़ मालूम न था। सब यही समझते रहे कि सौदागर की बस यही एक बीवी थी। चुनांचे जब तर्के की

तक़्सीम का वक़्त आया तो लोगों ने यही समझकर तर्का तक़्सीम किया और उस नेक बीवी को उसका हिस्सा दे दिया। सौदागर की बीवी ने भी अपना हिस्सा ले लिया और यह पसन्द न किया कि अपने मरे हुए शौहर के इस राज़ को बताये जो ज़िन्दगी भर सौदागर ने लोगों से छिपाया। लेकिन उस नेक बीवी ने यह भी गवारा न किया कि वह सौदागर की दूसरी बीवी का हक़ मार बैठे। बेशक किसी को यह ख़बर न थी और न उसकी तरफ़ से कोई दावा करने वाला था,. लेकिन उस ख़ुदा को तो सबकुछ मालूम था जिसके हुज़ूर हर इंसान को खड़े होकर अपने अच्छे-बुरे आमाल का जवाब देना है। सौदागर की बेवा यह सोचकर काँप गई और उसने यह तै कर लिया कि जिस तरह भी होगा वह अपने हिस्से में से आधी रक़म ज़रूर अपनी सौकन बहन को भिजावाएगी। और उसने एक निहायत मोअ्तबर आदमी को यह सारी बात बताकर अपने हिस्से में की आधी रक़म उसके हवाले की और अपनी सौकन के पास रवाना किया। और उसके यहाँ कहलवाया कि अफ़्सोस! आपके शौहर इस दुनिया से रुख़्सत हो गये, अल्लाह तआला उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाये, मुझे उनकी जायदाद और तर्के में से जो कुछ मिला है इस्लामी क़ानून की रू से आप उसमें बराबर की शरीक हैं। मैं अपने हिस्से की आधी रक़म आपको भेज रही हूँ, उम्मीद है कि आप क़ुबूल फ़रमाएंगी। यह पैग़ाम और रक़म भेजकर नेक बीबी बहुत मुत्मइन थीं, उनको एक रूहानी सुकून था। कुछ ही दिनों में वह शख़्स वापस आ गया और उसने वह सारी रक़म वापस लाकर सौदागर की बेवा को दी सौदागर की बेवा फ़िक्रमन्द हुई और वजह पूछी। क़ासिद ने जेब से एक ख़त निकाला और कहा इसको पढ़ लीजिए इसमें सबकुछ लिखा है

आप फ़िक्रमन्द न हों।

सौकन का सबक़ आमूज़ ख़त

प्यारी बहन!

आपके ख़त से यह मालूम करके बड़ा रंज हुआ कि आपके अच्छे शौहर का इन्तिक़ाल हो गया और आप उनकी सरपरस्ती से महरूम हो गईं। खुदा उनकी मग़्फ़िरत फ़रमाये और उन पर अपनी रहमतों और इनायतों की बारिश फ़रमाये। मैं किस दिल से आपके खुलूस व ईसार का शुक्र अदा करूं कि आपने उनके तर्के में से अपने हिस्से की आधी रक़म मुझको भेजी। मैं आपकी इस नेक रविश से बहुत ही मुतास्सिर हुई। हक़ीक़त यह है कि सौदागर के इस राज़ से कोई वाक़िफ़ न था। मेरा निकाह बहुत ही पोशीदा तरीक़े पर हुआ था। मुझे तो यह यक़ीन था कि आपको भी इसकी ख़बर नहीं है। और मैं क्या, खुद सौदागर मरहूम भी यही समझते रहे कि आपको इस दूसरी शादी की इत्तिला नहीं है। अब आप के इस ख़त से यह राज़ खुला कि आप हमारे राज़ से वाक़िफ़ थीं। सौकन की जलन फ़ितरी बात है, आपको ज़रूर इस वाक़िए से तकलीफ़ पहुंची होगी। लेकिन अल्लाहु अकबर आपका सब्र व ज़ब्त। हक़ीक़त यह है कि आपने जिस सब्र व ज़ब्त से काम लिया उसकी नज़ीर नहीं मिल सकती। कभी इशारे, किनाए से भी तो आपने यह ज़ाहिर नहीं होने दिया कि आप हमारी इस खुफ़िया शादी से वाक़िफ़ हैं। आपका यह ईसार और सब्र व तहम्मुल वाक़इ हैरतअंगेज़ है, मैं तो आपके इस कमाल से इन्तिहाई मुतास्सिर हूँ। दौलत किसको काटती है, दौलत के लिए लोग क्या कुछ नहीं करते, लेकिन आफ़रीन आपकी ईमानदारी को, यह

जानते हुए कि मेरा निकाह राज़ में है और वहाँ कोई एक भी ऐसा नहीं जिसको इसकी ख़बर हो और जो मेरी तरफ़ से वकालत करे, मगर आपने सिर्फ़ खुदा के ख़ौफ़ से मेरे हक़ का ख़याल रखा और अपने हिस्से में से आधी रकम मुझे भेज दी। खुदा के हाज़िर व नाज़िर होने का यक़ीन हो तो ऐसा हो, और खुदा के बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने का जज़्बा हो तो ऐसा हो।

अच्छी बहन! मैं आपकी इस दियानतदारी, ख़ुलूस और हक़-शनासी से बहुत मुतास्सिर हूँ, खुदा आपको खुश रखे और दुनिया व आख़िरत में सुर्ख़-रू फ़रमाए। लेकिन बहन! मैं अब इस हिस्से की मुस्तहिक़ नहीं रही हूँ, ख़ूदा आपका यह हिस्सा आप ही को मुबारक करे। यह सही है कि सौदागर मरहूम ने मुझसे निकाह किया था और यह भी सही है कि वह मेरे पास आकर कई-कई दिन रहते थे। बेशक हमने बहुत दिन ऐश व मुसर्रत में ज़िन्दगी बसर की। लेकिन इधर कुछ दिनों से यह सिलसिला ख़त्म हो गया था। सौदागर मरहूम ने मुझे तलाक़ दे दी थी। इस राज़ की आपको भी ख़बर नहीं है। मैं इस ख़त के साथ आपकी इत्तिला और यक़ीन के लिए तलाक़ नामे की नक़्ल भी भेज रही हूँ, आख़िर में आपकी बे-मिसाल मुहब्बत, इनायत, ईसार, खुलूस और हमदर्दी का फिर शुक्रिया अदा करती हूँ।

वस्सलाम। आपकी बहन........................

सौदागर की बेवा ने उस ख़ातून का यह ख़त पढ़ा तो बहुत मुतास्सिर हुई और उसकी सच्चाई, दियानत और नेकी ने उसके दिल में घर कर लिया और फिर दोनों में हमेशा के लिए खुलूस व मुहब्बत और रिफ़ाक़त का रिश्ता क़ाइम हो गया।

—तुहफ़तुल सफ़्वात, इस्लामी मुआशिरा, पेज 152

हज़रत उ़मर रज़ि० के अजीब तीन सवाल हज़रत अली रज़ि० के तीन अजीब जवाब

हज़रत इब्ने उ़मर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि० ने हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि० से फ़रमाया : ऐ अबु हसन! कई मर्तबा आप हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मज्लिस में मौजूद होते थे और हम ग़ाइब होते थे और कभी हम मौजूद होते थे और आप ग़ैर हाज़िर। तीन बातें मैं आपसे पूछना चाहता हूँ क्या आपको वह मालूम हैं? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : वह तीन बातें क्या हैं?

1. हज़रत उ़मर रज़ि० ने फ़रमाया : एक आदमी को एक आदमी से मुहब्बत होती है हालांकि उसने उसमें कोई ख़ैर की बात नहीं देखी होती और एक आदमी से दूरी होती है हालांकि उसने उसमें कोई बुरी बात नहीं देखी होती, इसकी वजह क्या है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : हाँ! इसका जवाब मुझे मालूम है। हुज़र सल्ल० ने फ़रमाया है कि इंसानों की रूहें अज़ल में एक जगह इकट्ठी रखी हुई थीं। वहाँ वह एक-दूसरे के क़रीब आकर आपस में मिलती थीं जिनमें वहाँ आपस में तआरूफ़ हो गया उनमें यहाँ दुनिया में उल्फ़त हो जाती है और जिनमें वहाँ अजनबियत रही वह यहाँ दुनिया में एक-दूसरे से अलग रहते हैं। हज़रत उ़मर रज़ि० ने फ़रमाया : यह एक बात का जवाब मिल गया।

2. दूसरी बात यह है कि आदमी हदीस बयान करता है कभी उसे भूल जाता है कभी याद आ जाती है, इसकी वजह क्या है?

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह

इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जैसे चाँद का बादल होता है ऐसे दिल के लिए भी बादल है। चाँद ख़ूब चमक रहा होता है बादल उसके सामने आ जाता है तो अंधेरा हो जाता है और जब बादल छट जाता है चाँद फिर चमकने लगता है, ऐसे ही आदमी एक हदीस बयान करता है जब वह बादल उस पर छा जाता है तो वह हदीस भूल जाता है और जब उससे वह बादल हट जाता है तो उसे वह हदीस याद आ जाती है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया : दो बातों का जवाब मिल गया।

3. तीसरी बात यह है कि आदमी ख़्वाब देखता है तो कोई ख़्वाब सच्चा होता है, कोई झूठा, इसकी क्या वजह है? हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया : जी हाँ। इसका जवाब भी मुझे मालूम है। मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जो बन्दा या बन्दी गहरी नींद सो जाता है तो उसकी रूह को अर्श तक चढ़ाया जाता है। जो रूह अर्श पर पहुंचकर जागती है उसका ख़्वाब तो सच्चा होता है और जो इससे पहले जाग जाती है उसका ख़्वाब झूठा होता है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया : मैं इन तीन बातों की तलाश में एक अर्सा से लगा हुआ था, अल्लाह का शुक्र है कि मैंने मरने से पहले इनको पा लिया।

—हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 249

उम्मे सलीम का आप सल्ल० से अजीब व ग़रीब सवाल

हज़रत उम्मे सुलीम रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा की पड़ोसन थी, मैंने (उनके घर में जाकर) अर्ज़

किया : या रसूलुल्लाह सल्ल०! ज़रा यह बताएं कि जब औरत यह देखे कि उसके ख़ाविन्द ने सोहबत की है तो क्या उसे गुस्ल करना पड़ेगा? यह सुनकर हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० नें कहा : ऐ उम्मे सलीम! तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों, तुमने तो अल्लाह के रसूल के सामने औरतों को रुस्वा कर दिया। मैंने कहा, अल्लाह तआला हक़ बात बयान करने से हया नहीं करते, हमें जब किसी मसले में मुश्किल पेश आये तो उसे नबी करीम सल्ल० से पूछ लेना इससे बेहतर है कि हम ऐसे ही अंधेरे में रहें। फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ उम्मे सुलैम रज़ि०! तुम्हारे हाथ ख़ाक आलूद हों अगर इसे (कपड़ों पर या जिस्म पर) पानी नज़र आये तो उसे गुस्ल करना पड़ेगा। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने कहा क्या औरत के भी पानी होता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : तो फिर बच्चा माँ के कैसे मुशाबेह हो जाता है? यह औरत मिज़ाज और तबीयत में मर्दों जैसी है। —हयातुस्सहाबा, हिस्सा 3, पेज 254

❑ ❑ ❑